RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 15 अंक : 6

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
दिसंबर - 2025
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

सूर्य सिद्धांत (भाग - 8)

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

मौसम
तेज
जीवन
जीवन का आधार
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्त्रोत
परिवर्तन
जल
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

CEMENT
CASTLE CEMENT
कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः15, अंक : 6 | दिसंबर - 2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी, अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 32 प्रकृति विज्ञान

सूर्य सिद्धांत भाग - 8

सूर्य कण पहले अपनी अवस्था सिद्धांत कर एक गुणीय प्रकाश में सिद्ध होकर फिर जिस मृदा बीजत्व को सिद्धांत करने के लिए उसमें जाता है उसकी अवस्था में परिवर्तन होकर उसके गुण को सिद्धांत कर देता है।

P 8 प्राकृतिक शान्ति

P 11 समय सिद्धांत (मूल भूमि अध्याय)

P 15 ध्वनि प्रकाश : अशोक युग

P 22 वक्त सबसे बड़ा गुरू

P 28 बाग़वानी द्वारा भी संभव है विभिन्न व्याधियों का उपचार

P 35 राष्ट्र गीत के 150 वर्ष पूर्ति पर स्मरणोत्सव

P 45 तिरंगे की बेटियाँ

P 52 अवस्थाओं का रहस्यमयी विज्ञान

P 54 दर्द की एक रात

P 61 कुटकी अद्भुत जड़ी-बूटी

अशोक मानव

जन द्वारा बनाये और अपनायें गये सामाजिक सम्बन्धों के मानसिक मार्ग की जीवन शैली को 'समाज' कहते हैं।

समाज

स - समय, मा- मानसिक, ज - जनक

जन द्वारा बनाये और अपनाये गये सामाजिक सम्बन्धों के मानसिक मार्ग की जीवन शैली को 'समाज' कहते हैं।

अर्थात् समय का मानसिक जनक (जन्मदाता)। समाज की सामान्य परिभाषा समूह में रहकर एक दूसरे की सुरक्षा और व्यवस्था के आपसी वितरण की विधा का एक नाम है। प्राकृतिक अर्थ में एक स्तूपीय स्वरूप जो एक निश्चित जलवायु में बनता है, उसके रख-रखाव की व्यवस्था समूह में बनाने की व्यवस्था को समाज कहते हैं। समाज की वैज्ञानिक परिभाषा एक भाषा धर्म संस्कृति का पालन करने वाले समूह को कहते हैं। भौगोलिक अर्थ में समाज एक गुण संस्कृति के समूह का नाम है। वास्तविक अर्थ में समाज का मानव या मानसिक जन्मदाता है जिसकी मानसिकता से पैदा होने वाली वैचारिक भावना वैज्ञानिक गंध बनकर समय को अपने समयानुसार बना लेता है। पर समय तो प्रकाश की वह धारा है जो दिन रात की परिभाषा से जैविक संरचना कर जीवन का विकास करती है। इसी जीवन से गंधीय रश्मी का विकास होता है जो प्रकाश की मन्थनीय विधा से गंधानुसार अनेकों प्रजातियों का विकास करता है जिससे मृदा का विस्तार होता है। इसी मृदा विस्तार से मानव प्रजाति का जन्म होता है। ऐसे तो समाज में समाजशास्त्र एक विषय है जिसकी परिभाषा अनेक समाजशास्त्री अपने-अपने अनुसार करते हैं। सच तो यह है कि समय का मानसिक जनक (जन्मदाता) मानव है जिसकी रचना भय से शुरू करता है, भय अपनी आवश्यकता पूर्ति और सुरक्षा को पैदा करता है जिसके लिये समूह में रहकर सभ्यता संस्कृति, धर्म, विज्ञान, ज्ञान की खोज में शिक्षा का विकास करता है। इसी व्यवस्था की स्थापना हेतु समाज का निर्माण करता है। इसी का विस्तारीकरण राज्य का रूप ले लिया।

मानव समाज का निर्माण कर अपनी आवश्यकता की पूर्ति सुरक्षा समाज में देखने लगा। समाज में इसकी नई-नई विधायें जन्म लेने लगी जिसमें संस्कृति, सभ्यता अपने अनुसार बनाना शुरू कर दिया, इसकी पूर्ति हेतु धर्म और विज्ञान को बढ़ाया इसे और अच्छा बनाने के लिये ज्ञान की खोज शुरू कर दी जिसके कारण इसकी विकलांगता बढ़ती गयी और यह इसे अपनी क्षमता का विकास समझने लगा। आज इसका विस्तार इतना बढ़ा लिया कि अपना जीवन दूसरों पर निर्भर कर दिया, अपनी आवश्यकता की पूर्ति और सुरक्षा के जाल को इतना कठिन कर दिया कि इसे प्राप्त करना ही जीवन का उद्देश्य बन गया जबकि इसकी पूर्ति मानव के अतिरिक्त अन्य जीव बिना किसी प्रयास के प्राप्त कर रहे हैं। जिसे मानव संस्कृति, सभ्यता, धर्म, विज्ञान और ज्ञान को अपनी पूर्ति के लिये बनाया वह तो व्यापारी बन कर इसी मानव से व्यापार कर रहा है। मानव को थोड़ा राहत देकर उसे उसका शुभ चिन्तक बताकर सिर्फ उसके साथ व्यापार कर रहा है। इस नकली धनराशि को इकट्ठा

करने में मानव प्रकृति और अपने आप से दूर होता जा रहा है जबकि उसकी अपनी वास्तविक धनराशि उसके अपने अन्दर निहित है जिसका वास्तविक विकास प्रकृति के अनुसार चलने पर अपनी अन्तःकरण में होता है। सभ्यता मानव की अन्तःकरण की गुणात्मक अवस्था जो बाह्यरूप में प्रदर्शित होती है जो अन्तःकरण में नहीं रह गयी है सिर्फ दिखावे के लिये प्रयोग हेती है। संस्कृति जो हर अवस्था में मानव को अपने वजूद के अनुसार संयमित बनाने की एक कला है। वह अपने अन्दर नहीं सिर्फ नाट्य प्रदर्शन में देखने को मिलता है। धर्म जो हर अवस्था में अपने आप को तर्क और किताबी जानकारी से दूर रखकर शान्त (विचारशून्य) करने पर जो भी धारण होता है वह धर्म की भूमि बन जाता है जिससे निकलने वाला प्रकाश आनन्द को जन्म देता है और उसका शरीर ही धर्म बन जाता है जिसे वह खोज रहा है वह उसी में निवास करने लगता है। विज्ञान जो मानव के भाव बनने से गंध रूप में बनता है यही शरीर में पदार्थ रूप में बढ़ाता है इसी विज्ञान को मानव बना सकता है जो अनन्तीय होकर अपने गुणों का सदैव विस्तार करता है। इस विज्ञान को मानव बाह्य जगत में बनाने का प्रयास कर रहा है जो कभी सम्भव नहीं है। ज्ञान जिसकी परिभाषा में ही छिपा हुआ है, (जो ज्ञात न हो वही ज्ञान है) जब एक या अनेक गुण आपस में मिलते हैं उनसे रासायनिक क्रिया होती है जिससे एक नई विधा का निर्माण होता है इसे अपने अन्दर एहसास किया जा सकता है परिभाषित नहीं। जिसे बाह्य पुस्तिका में खोज रहे है वह अपने अन्दर की पुस्तिका में है। वर्तमान समय में मानव को समाज की परिभाषा अपने अन्दर परिभाषित करने की जरूरत है, उसे स्वयं परिभाषित करें।

●●●

पाठकनामा

आदरणीय,

प्रकृति मेल एक सुंदर और संतुलित पत्रिका है, जिसमें समाज, व्यवहार, स्वास्थ्य, तकनीक, समसामयिक मुद्दों और आध्यात्मिकता जैसे विविध विषयों को सरल और प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया जाता है। पत्रिका पाठकों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती है और उनका दृष्टिकोण व्यापक बनाती है। इसमें प्रकाशित आध्यात्मिक विचार गहरे, सार्थक और मार्गदर्शक होते हैं, जबकि प्रश्नोत्तर अनुभाग हमेशा स्पष्ट, सटीक और ज्ञानवर्धक होता है। पत्रिका की संपूर्ण टीम और संपादक महोदय को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ और शुभेच्छाएँ।

शिवम्

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग,
रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -

email-editor.prakritimail@gmail.com

Contact: **9807636072, 7376495194**

“ लोग ए आई टूल्स का इस्तेमाल कर सकते है, लेकिन उसकी हर बात पर आंख मूंदकर भरोसा नहीं करना चाहिए। ”

सुंदर पिचाई

“ सिनेमा मुझे विविधताओं की सराहना और सम्मान करने में मदद करता है। यह बताता है कि हम सभी एक जैसे है।”

टॉम क्रूज

“ इस समय निवेशकों की जो संख्या है, उसमें अगर 10 करोड़ और जुड़ जायें तो यह कई देशों की जनसंख्या से ज्यादा हो जाएगी। ”

तुहिन कांत पांडे

“ हमने भारत में लम्बे समय से सीरीज नहीं जीती है और हमारी यहां जीतने की इच्छा है। ”

तंबा बावुमा

“ आतंक हमारे राष्ट्रो का प्रकाश खत्म नहीं कर सकेगा।”

बेंजामिन नेतन्याहू

“आस्ट्रेलिया भारत का विश्वसनीय साक्षेदार बना रहेगा। ”

पेनी वोंग

गुजरता साल
2025
2026
पिछली बार कहाँ तक पहुँचे थे SIR

प्राकृतिक शान्ति

कामेश

प्राकृतिक शान्ती हर चेतना के मूल मे ही समाविष्ट होती है। बस जरूरत है अपने भ्रम को मिटाने की सदियो से जो मनोमष्तिस्क पर पर्त दर पर्त हमने लालच जरूरत अहंकार आदि के वश मे होकर इकट्ठा कर रखा है उन कामनाओं की पर्त को मिटाने की। जरूरत है बाह्य दौड़ से खुद के अन्तरमन मे उतरने की और अन्तरमन मे उतरने के लिए "ध्यान" का आश्रय लेना अत्यंत जरूरी होता है। जिस दिन इन्सान खुद की गहराई में उतर जाए तो उसे उस शान्ती की अनुभूति होगी।

मनुष्य का हृदय सागर सदृश होता है, सागर किस रूप में हृदय के रूप में उपमा प्राप्त करता है आखिर क्या कारण है कि सागर को हृदय की उपमा दी जाती है। कारण वस्तुतः मानवीय बौद्धिक क्षमतानुसार मात्र इतनी होती है कि हृदय की गहराई सागर की गहराई से मापी जाती है जबकि यदि दोनों की वास्तविक स्थिति का अनुमान लगाया जाय या सूक्ष्म दृष्टिपात किया जाय तो दोनों की स्थितियाँ किन्ही रूपों में भिन्न है। लेकिन आज तक हृदय की सागर से तुलना की गई तो निश्चित ही हृदय में और सागर में कोई न कोई समानमता तो होगी ही और जो समानता है ये है कि हृदय की गहराई और सागर की गहराई वस्तुतः मापी नही जा सकती। आज वैज्ञानिकता की इतनी खोज आगे जा चुकी है कि विभिन्न यन्त्रों के माध्यम से व्यक्ति सागर की गहराई में घुस जाता है परन्तु वास्तव में उसकी गहराई वह माप नहीं पाता। क्योकि स्थान विशेष पर पहुंच जाना ही गहराई का माप करना निश्चित नही होता है। और वही स्थिति ह्रदय की भी होती है। किसी के हृदय की गहराई और वास्तविकता को जान पाना असम्भव होता है। कारण ये नही कि जान नही सकता बल्की जो जिसके हृदय के करीब होता है वह दूसरे के हृदय के बारे मे उतना ही जान सकता है जितना उसके प्रति अपने हृदय में जो भाव होंगे। उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है कि एक व्यक्ति को कुछ लोग अच्छा इन्सान मानते है तो कुछ के लिए वह बुरा होता है। जैसे जरूरी नहीं कि जो व्यक्ति अपने किसी के लिए अच्छा भाई हो तो वह दूसरे के लिए अच्छा दोस्त या अच्छा पड़ोसी भी हो। कोई अच्छा राष्ट्रवादी हो तो जरूरी नही कि वह अच्छा समाजवादी हो। स्थान विशेष पर ही भाव विशेष की भी महत्ता होती है। कुछ लोग ऐसे होते है जो समाज में अच्छी छवि रखते हुए भी अपने परिवार के प्रति उदासीन होते है कहने का तात्पर्य की एक व्यक्ति के हृदय भाव परिस्थिति और स्थान विशेष पर बदलते रहते है।

हम बात करना चाहते है "प्राकृतिक शान्ती" की। प्राकृतिक शान्ती कहीं और नहीं या किसी और के माधयम से नही बल्कि खुद में गहरे उतरने से प्राप्त होती है। जब तक हम खुद में पूर्णतः उतर नही जाते तब तक हमे वास्तविक शान्ती की अनुभूति नही हो पाती। परन्तु एक बात गौर करने की है कि शान्ती की व्याख्या भी नही की जा सकती क्योंकि जिन्हें शान्ती की अनुभूति हो जाती है वे बता नही सकते क्योंकि उन्हें यह भी अनुभूति हो जाती है कि शान्ती तो सिर्फ जिया जा सकता है कहा नही जा सकता है। और नही किसी के कहने के अनुसार सीखा ही जा सकता है। यह सीखने और सिखाने की चीज नही मात्र अनुभूति है, और अपना अनुभव शब्द रूप मे यदि व्यक्त भी किया जाय तो वह मात्र शब्द रूप में अगले के कान तक ही जा सकता है कभी हृदय की गहराई में उतर नही सकता। जिस तरह से मीठा खाने वाला

यदि बताए कि बहुत अच्छा मीठा था तो सुनने वाला जान तो जाएगा कि मीठा है।परन्तु मीठे का स्वाद और मिठास की अनुभूति कराया भी नही सकता है।

कहा जाता है- एक बार एक नमक का पुतला सागर की थाह लगाने के लिये गया था वापस नहीं आया, आता भी कैसे, सागर में ज्यों-ज्यों गहरे उतरता गया, मिटता जा रहा था और एक समय वह आया जब वह सागर मे पूर्णतः विलीन हो गया। यही स्थिति अपने अन्दर हृदय रूपी सागर मे उतरने पर मनुष्य की भी होती है ज्यों-ज्यों वह शान्त होता जाता है वह गहरे उतरता जाता है, विलीन होता जाता है और एक समय वह इतना शान्त हो जाता है कि शान्ती मे ही विलीन हो जाता है। अब वह ऐसी स्थिति को वाणी के माध्यम से बतला नही सकता, क्योंकि जो अनुभूति वह प्राप्त कर चुका उसे कह नही सकता और ऐसा भी नही कि वह कहना नही चाहता वह हर वक्त कहने को राजी है बताना चाहता है परन्तु उसकी सुनेगा कौन क्योंकि वह जो कहने जा रहा है उसे सुनने के लिए भी उस स्तर तक पहुंचना पड़ेगा और जो उस स्तर तक पहुंच जाएगा वह भी फिर सुनने को राजी नही होगा-

बुन्द भी सिन्धु समान, को अचरज कासो कहौ।
हेरनहार हैरान, रहिमन अपने आप मे।।

खोजने वाला ही खुद भी हैरान होता है कि आखिर क्या ऐसी घटना घटी ऐसा क्या अमूल चूल परिर्वतन हुआ जो कि अब तक जहाँ तर्क थे बहस भी आज अचानक सब कुछ कहां गायब हो गया वह खुद मे हैरान हो जाता है। और यही बाते उसे अन्य लोगों से भिन्न कर देती है।

शान्ती के भी दो स्वरूप होते है एक वो जो जन सामान्य बाह्य संसारिकता मे प्राप्त करता है और एक वो जो कभी युगों में किसी से प्राप्त होता है। और यह भी समझ लेना जरूरी है कि बाह्य शान्ती मे वास्तविक शान्ती नही होती है बल्कि शान्ती की खोज में दौड़ लगाते-लगाते शारीरिक थकान के कारण मार्ग मे रूक

जाना होता है। क्योंकि चेतना को बाह्य शान्ती मे संतुष्टि नहीं होती,उसे तो परमशान्ती की आवश्यकता होती है और चेतना हमेशा उसी शान्ती के लिए दौड़ लगाती है। परन्तु मानव भ्रम और अपनी दैनिक जरूरतों में अपने आप को इतना लीन कर लिया है, इतना जकड़ लिया है कि वह चेतना की वास्तविक चाहत को समझ नहीं पाता और भैतिक संसाधनों को एकत्र करने मे हाथ पैर मारने लगता है। एक संसाधन के पाने के बाद जो उसे थोड़ी मानसिक आराम मिलता है उसे वह शान्ती मान लेता है परन्तु अगले पल उसे अन्य जरूरते पूरी कर लेने से मनस्चेतना को शान्ती मिल जायेगी। परन्तु यही सोचते हुए भौतिक संसाधनों को एकत्र करते-करते एक दिन वह इस संसार से विदा हो जाता है परन्तु वास्तविक शान्ती को प्राप्त नही कर पाता। और यहीं उसकी दौड़ समाप्त नहीं होती, वह उस वास्तविक शान्ती को जब तक प्राप्त नही कर लेता उसे बार-बार इस नश्वर जगत मे आना पड़ता है और इसकी दौड़ जारी रहती है। इसका कारण है कि मनस्चेतना को भैतिकता मे रस नहीं मिलता ना ही ये उसकी जरूरत है भौतिकता तो शरीर की जरूरत है। और इसकी प्राप्ती पर शरीर को जो आराम मिलता है उसे ही हम शान्ती मान बैठते है और यही हमारा सबसे बड़ा भ्रम होता है। हम सोचते है इस संसाधन के बाद मेरी दौड़ समाप्त हो जाएगी यह पद प्रतिष्ठा या धन राज्य मिल जाय तो दौड़ खत्म हो जाएगी परन्तु जब हम वहां तक पहुचते है तो पाते है कि नही मेरी दौड़ तो व्यर्थ रही कुछ और चाहिए कुछ और इसी प्रकार हमारी दौड़ निरन्तर बनी रहती है। ठहराव कभी नही हो पाता।

"प्राकृतिक शान्ती" हर चेतना के मूल मे ही समाविष्ट होती है। बस जरूरत है अपने भ्रम को मिटाने की सदियो से जो मनोमष्तिस्क पर पर्त दर पर्त हमने लालच जरूरत अहंकार आदि के वश मे होकर इकट्ठा कर रखा है उन कामनाओं की पर्त को मिटाने की। जरूरत है बाह्य दौड़ से खुद के अन्तरमन मे उतरने की और अन्तरमन मे उतरने के लिए "ध्यान" का आश्रय लेना अत्यंत जरूरी होता है। जिस दिन इन्सान खुद की गहराई में उतर जाए तो उसे उस शान्ती की अनुभूति होगी जहां उसे महसूस होगा कि अब सारी दौड़ सारी जरूरतें सारी इच्छाएं यही ठहर सी गई अब और कही जाने की कोई जरूरत नही है,अब खतम सारी चाहत। अन्तरमन में बचती है सिर्फ शान्ती.....शान्ती।

प्रकृति में हर किसी का पथ उसका रथ

गौरव पंत

प्रकृति में हर किसी का पथ ही उसका रथ है। जो सूक्ष्म अवस्था में हर किसी के भीतर विद्यमान है और उसकी यात्रा को पूर्ण करता आ रहा है। मानव को छोड़कर प्रकृति के अन्य जीव पदार्थ उसका एहसास करते हैं और आनंद लेते हुए अपनी यात्रा को पूर्ण कर रहे हैं। मानव प्रकृति में बने पथ में सिर्फ बदलाव की सोच रखकर हमेशा तर्कपूर्ण परिभाषा बनाते आया कभी मानव ने ठहर कर यह नहीं सोचा कि हर जीव पदार्थ इसी प्रकृति में कितनी सरलता से अपनी स्वयात्रा को पूरी कर रहे हैं। मानव ही ऐसा जीव है जो सिर्फ विकलांगता को बनाकर हमेशा कठिनाइयों से भरा जीवन जी रहा है और अपनी स्व यात्रा को कठिनाइयों से पूरी कर रहा है। प्रकृति में मानव रूपी शोषणवादी जीव ने हमेशा शोषणता को बनाया। चाहे किसी भी धर्म कर्म या अन्य कोई परिभाषा हो। प्रकृति तो उस अवस्था का नाम है जो सिर्फ उत्पन्न अवस्था को तृप्त कर उसे अन्नतीयअंत कर देती है उसमें ना कुछ सही,ना कुछ गलत होता वह तो एक सूक्ष्म विज्ञान है जो वैज्ञानिकता से गतिमान है। हमारे द्वारा बनायी गयी कोई भी अवस्था हमारी स्व रासायनिकता है इसमें किसी बाह्यता का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। जिस गुण की जिसे जरूरत होती है उसका स्व रसायन है उसे परिपक्व करने के लिए स्वपथ पर स्वरथ से गतिमान रहता है। हर किसी का अपना पथ यानि की उसका अपना स्व गुण है जो प्रकृति में सिर्फ वही बनाता है। इसी प्रकार हर किसी का अपना स्वरथ है जिससे हर किसी का रसायन उसे गतिमान किए हुए और उसकी यात्रा को स्व ईधन प्रदान करता है।

प्रकृति में हर किसी का पथ ही उसका रथ।
ना कोई किसी का पथ बदल पाया।
हर कोई अपना पथ अपने रथ पर ही पूरा करता आया।
हर कोई स्व पथ का धनी।
फिर भी मानव ही हर किसी को राह दिखाने की चेष्टा करता आया।
बनाया ऐसा भंवर मानव ने की उसमें उलझता आया।
सफर तो पूरा किया सबने लेकिन कोई अपने पथ का आनंद ना ले पाया।
अशोक ही पथ अशोक ही रथ।
इसी विज्ञान से हर कण परिपक्व होता आया।
ना कोई जाना, ना कोई जान पाया।
उदाहरण पर उदाहरण सिर्फ मानव ने बनाया।
हर कोई दूसरे के लिए पथ बनाने की कोशिश करता आया।
स्व पथ ही स्व रथ
उसी से हर अवस्था का अनंतीय अंत होता आया।
ब्रह्मांड ठोस होता आया।

समय सिद्धांत (मूल भूमि अध्याय)

अभिषेक पंत

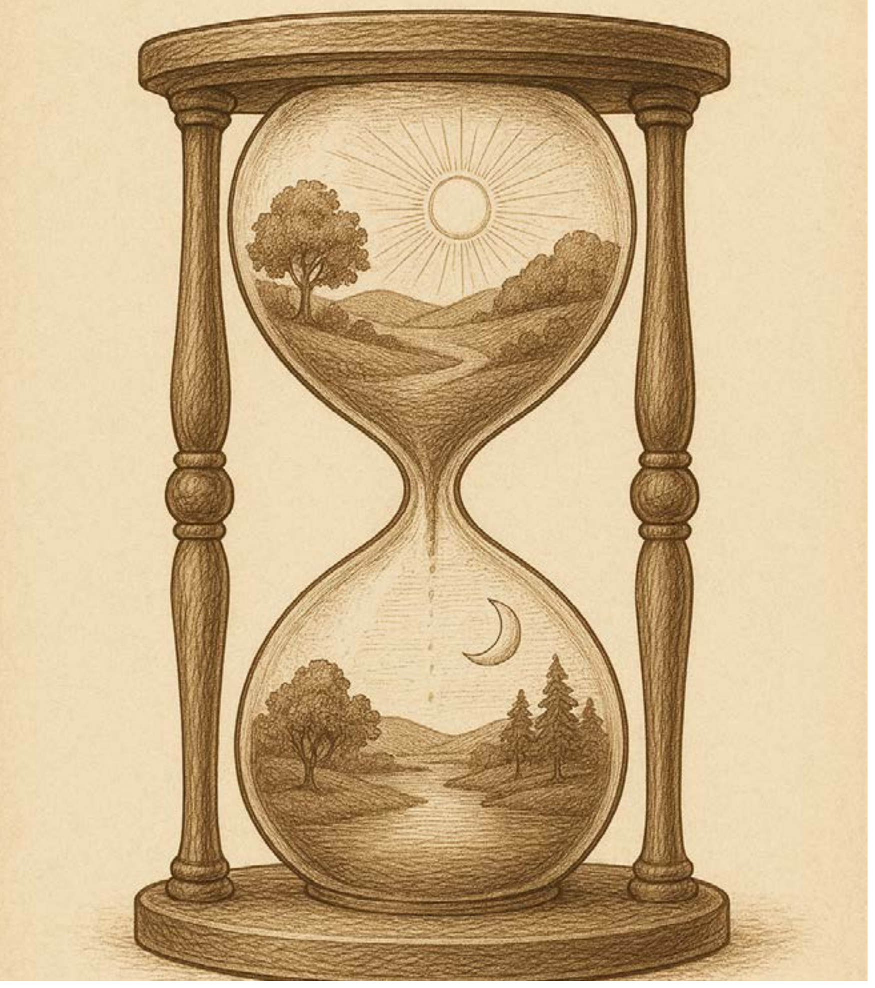

गति पूर्णांक से परे मध्यम माध्यम जिजीविषा के अंतर्गत मूल कार्य सूची बनाकर, जीवन यापन पूर्ण कृति में लौकिक वंदन श्रेय विलीन करने वाला मानव प्राणी माध्यम को साधना एवं मध्यम को साधन कहता रहा एवं सारथी को समय भार, वाहन को समय पतवार, मार्ग को समय आधार कहता रहा। अपितु समय सीमा निर्धारण की गति नहीं है ना ही वंदन वेदना पर्यावरण की नाड़ी है। समय तो इच्छुक बंधन गति राग को मिटाने वाला क्षेत्रीय विस्तार का संकुचित बल है, जो मौलिक ज्ञापन स्थिति से परे, मात्र तापमान प्रतिकृति के व्योम अनुकूलन में संदर्भित विषयों को ध्यायित करता है अर्थात स्वअंश पूर्णिमा की चालक गति का जन्म मृत्यु वंशानुक्रम भी समय है एवं प्रतिकृति प्रकृति की न्यायिक शिरोधारिता का जीवाश्म जीवाणु अंग अंकन भी समय है। प्रकृति ने मध्यस्थता की अनुध्यायी वेदना नहीं बनाई, प्रकृति ने पदार्थ को ही काल घड़ी बना दिया। अर्थात जब तत्व ने तत्व के अनुरूप तत्व में तत्व का रासायनिक प्राण बनाया, स्वयं पदार्थ ने गंधीय गुणों का धड़कन यंत्र बनकर मूल तापमान परिचय से गति स्थानीय व्योमानुकूलन को पात्र विषय बनाया। अर्थात जब ब्रह्मांडीय विस्तार ने गति ली, तब जिस बिंदु पर संकुचन आरंभ हुआ बल व्यूह निर्माण हेतु, उस बिंदु की पहली गति में विस्फोटित तापमान तरलता से मूलभूमि अध्याय निहित समय सिद्धांत की उत्पत्ति हुई। समय सिद्धांत वेग ताप दाब गति का नियंत्रक प्राणवायु ध्यायी संलग्नक है, जिसमें सक्षमता महत्ता एवं यशश्वियता से मूल भूमि अध्याय को दर्पण युक्त किया जाता है। जहां से विस्तार का वात निर्वात गर्भ चक्र ही मन्थनी व्यूह ध्वनि अंकिता में गंधीय जलवायु का परस्पर योग बनाता है। अर्थात सक्षम मन युक्ति ही समय सिद्धांत है। अर्थात सरलतम मन्थनी यात्रा ही समय सिद्धांत है अर्थात मूल वात निर्वात मिलान की तय दूरी के आयाम परिचय में घटित स्वयान्तर धुरी गति उच्चारण को ज्ञात दर्शन अवस्था पूर्णांक बना देने वाले निर्वात धारा खगोल बिंदु के तत्व साधन अनिवार्य पूर्ति क्रम की पदार्थ रिक्तता के रासायनिक व्यवहार को समय सिद्धांत कहते हैं। समय सिद्धांत की कार्यकारिणी सूची नहीं होती, समय सिद्धांत की वेतन आयु नहीं होती, समय सिद्धांत तो बल प्रान्ती मनोरथ का प्राणवायु विस्तारक होता है, जो मूल भूमि अध्याय हेतु मनोदशा तृप्ति को व्यक्त पूर्ण करता है।

अब जिस संलग्नक की पूर्ति में प्रकृति का स्थानीय मंथन हो रहा है, प्रकृति द्वारा समय सिद्धांत के प्राणवायु शोधन में मन यश एवं तन यथार्थ मिलान से दर्पण भक्षण हो रहा। अर्थात समय सिद्धांत ही मूलभूमि अध्याय

है, जिसमें ज्ञापित वंदन लोचनी खिंचाव ही वेदना पूर्णांक को मिटाकर ध्वनित ऊष्मा चक्र से अंग प्राण यशस्वीयता को भी मिटाते जा रहा है। मानव मूल जलवायु कृति में धर्म स्पंदनीय वशीकरण को समय कारक मानता रहा। मानव ने धमनी उपरांत शीर्षता को भी खनन खगोलीय जिजीविषा कहा। अपितु समय सिद्धांत एवं समय निर्माण में अंतर होता है, जैसे समय सांख्यिकी एवं समय सिद्धांत में अंतर होता है। अब गर्भऋणी अवस्थाओं का मनोक्रम मिटाया जा रहा है। प्रकृति द्वारा विमोचनी शीर्षता को पकाया जा रहा है। इसी क्रम में समय सिद्धांत एवं समय सांख्यिकी से समय निर्माण को भी मिटाया जा रहा है।

समय सांख्यिकी

- सूत्र विचार गठित समय प्रेरणा की नियति को उभारने वाला कर्म चक्र
- गति व्यूह में ध्वनित दर्पण को तत्व संकुचन बल देने वाला खगोलीय वर्ण
- प्रकृति सीमा में न्यायी स्वशन ध्वनि को वृत्ति पूर्ण परमार्थ बनाने वाला रसायन व्यूह
- मति कौशल को चयन दीर्घा का पदार्थ रस रूप देने वाला गंधीय भाव
- मंथनी ऊर्जा को नभ खगोल मिलान का शीर्ष अभियंता बनाने वाला खनिज पदार्थ
- पात्रशयन शून्यता में शीर्षता का मन यात्री काल प्रेषित करने वाला आंतरिक बल मिलान का बाहय एहसास

समय सिद्धांत

- सतह प्राण वायु प्रेरणा में चेतन अवचेतन पदार्थ विस्तार का मूल सूत्र
- सूर्य चंद्रमा ग्रह अंतर सांख्यिकी को खींचकर सजीव निर्जीव जलवायु ध्वनि गुंजन निर्माण करने वाला कोशिका ग्रह
- लौकिक अलौकिक पारा क्रम में गंधीय बुद्धि को जड़ चेतन अवस्था का सजीव प्राणवायु एहसास दिलाने वाला रासायनिक यंत्र
- प्रथम विस्तार में अनंतीय प्रहार का बल सूचकांक
- आनंद प्राण गति स्थिरता का शून्यान्वन वाहन क्षेत्र
- मूलध्वनित अवस्था में तत्व पदार्थ मिलान को गंधीय सतर्कता से सक्रीय करने वाला ब्रह्माण्डीय वेग

तय दूरी –

समय समापन की घोषणा यदि पूर्वांकन में ही कर दी जाएगी, तो, गतिशीर्षता की मति चयन निधि ही ध्वस्त हो जाएगी, फिर भी मानव आयाम पट्टिका में तय दूरी का जीवन सारथी खोजना चाहता है, जबकि समय सिद्धांत में तय दूरी ही मूल व्यापक सूक्ष्मता की तरलतम यथार्थ दर्पण ऊर्जा रासायनिक ईंधन गति बनाती है। अर्थात अवस्थाओं की व्यापक सूची में निर्माण के संचार की मूल पूर्ण प्रकृति ही तय दूरी है।

आयाम परिचय–

आकृति यात्रा मंथन के परिसर विलीनतम रिक्तता चयन मात्रा अध्याय के यथार्थ यात्री पूर्णांक को आयाम परिचय कहते हैं। अर्थात बल बुद्धि से परे पदार्थ की कम्पन्नता में विकसित गाढ़ेपन की प्रथम दिशा को आयाम परिचय कहते हैं।

स्वयांतर धुरी –

परमार्थ रचना की मूल ध्यायी जड़ता को चयन निधि स्वीकृति का परातत्विक श्वसन मूल बनाकर, यात्रा न्यायी तरलता में रासायनिक धुरी को ही रश्मि ईंधन प्रकृति विलीन कर देने वाले स्वतंत्र वास्तु वस्तु पराक्रम को स्वयांतर धुरी कहते हैं। जहां से उत्पन्न मात्रावेगीय सूचना ही यात्रा गति तापमान को दबाव बनाकर समय पूर्णिमा का वात केंद्र बनाती है।

गति उच्चारण –

प्रलोभनी मनुष्यता से परे ध्वनित उपसर्ग की व्यूह मात्रा के तत्व आधुनिक रस को प्रथम प्रकृति बल का जीव निर्जीव ऊष्मा कृषि सूचकांक बनाने वाले पदार्थ रस मूल के खगोलीय भाव भार को गति उच्चारण कहते हैं। जहां से नीति नियति वृत्ति का प्रथम मूल ही ध्वनित पारा गति में लीन हो जाता है।

ज्ञात दर्शन –

प्रथम प्रकृति उपासना से परे अंतिम प्रकृति स्व अर्थ में लीन संपन्न पदार्थ चेतना की रासायनिक घड़ी को ज्ञात दर्शन कहते हैं। जहां से ऊष्मा संचालन की नाड़ी समय को विस्तार एवं संकुचन का प्राकृतिक मात्रा भार बना देती है।

अवस्था पूर्णांक –

रासायनिक नाड़ी की कृति लोचनी अवस्थाओं के माध्यम श्रुति प्रतिकक्षता को अवस्था पूर्णांक कहते हैं। जिसमें गति धारणा का चयन निष्कर्ष ही जीवनी व्यूह ध्यायिता को मूल बुद्धि परिचय में बल नितांत वृत्तिकर बनाता है। जिसमें समय सिद्धांत का मूल धातु

गुण ही व्यवस्था अवस्था पदार्थ रस को ही नियति ध्वनि अंकिता का प्रकृति प्रकाश बनाता है।

निर्वात धारा –

अवहेलना में तथाकथित त्रिलोचनीय सत्ता चलाने वाला प्रदूषक कण यह ज्ञात नहीं कर पाया की विश्वसनीय आयाम से विश्व अंकित आयाम में अंतर होता है। जो ज्ञात है वही अज्ञात था, इन दोनों अवस्थाओं में निर्वात धारा का अंतर होता है। अर्थात नियति वाष्पांकित रश्मि तत्व सरलता की पदार्थ निधि कम्पननता से निर्मित मूल शून्यता अध्यायी ध्वनि अंश को निर्वात धारा कहते हैं। जहां से उत्पन्न रागिनी मात्रा ही राधिका यात्रा को जीव निर्जीव सरलता का परिचय केंद्र बनाती है।

खगोल बिंदु –

पारा सार्थी विवेक के नाड़ी अंग अंकन लीन प्रथम बुद्धि शयन शून्यता की आधुनिक आंतरिक गंधात्मक रचना के ब्रह्माण्डीय एहसास केंद्र को खगोल बिंदु कहते हैं। जिसमें व्यावहारिक रासायनिक महा प्रलयी सूचना का दर्पण भी खनिज अंतर प्राण वायु से जलवायु रस को ही ठोस परिणामों का प्रकृति मत बना देता है।

तत्व साधन –

अर्चना निर्माण स्तुति से परे आधुनिक व्यूह के अयस्क प्राण वायु निर्धारण को जन्म मृत्यु संकेत का सूचना वन बना देने वाले रसायनिक बल को तत्व साधन कहते हैं,जिसमें उदय अस्त की वात क्रम निधि ही पदार्थ संगम को तत्व विलयी बनाती है।

अनिवार्य पूर्ति –

पदार्थ रस नीति का चयन यौगिक बल जब जीवन धारण करता है, तब जिस निर्जीविता का वातकालीन निर्धारण निर्वात एहसास की माध्यम गति बनाता है, उस गति के आंतरिक संसाधन की अंग नियति को अनिवार्य पूर्ति कहते हैं। जहां से उत्पन्न सागर वाणी भी एहसास संकेत के तत्व योग बनाती है।

पदार्थ रिक्ता –

घड़ी नाड़ी अंतर स्पंदनीय रासायनिक विस्फोटन की गंधीय माध्यम विषय अंकन रश्मि तरलता को पदार्थ रिक्ता कहते हैं। जिसमें उत्पन्न प्रथम व्यूह व्यवहार ही रस रचना तत्व सांख्यिकी को यात्रा योग बनाता है।

रासायनिक व्यवहार–

रचना संदर्भ की पूर्ति ही जीवन संगीत की सूची होती है जिसमें प्रथम शयन नाड़ी ही सूचना व्यय पूर्ति की तरंगीय घड़ी होती है। अर्थात तरंगों की गंध रचना के अनिवार्य संरचना योग में उत्पन्न आवृत्ति बल को रासायनिक व्यवहार कहते हैं। जहां से मूल धारणा का खगोलीय गुण ही मूल भूमि अध्याय का समय सिद्धांत बन जाता है।

अर्थात तत्व बल वेग है एवं तत्व धारा गति है।

तत्व विषय दबाव है एवं तत्व सूचना तापमान है।

अर्थात विषय बल में सूचना धारा को प्रकृति बना देने वाली प्रवृति मूलता को सक्षमता कहते हैं एवं साधन की कृति से परे स्वयं भूमि निश्चिंतता के नियति योग की स्वाभाविक उष्मा को महत्ता कहते हैं एवं निश्चित भूमि योग की प्रकृति मूलता के सूचना विषय अंकन को धारा बल बना देने वाले आंतरिक जलवायु प्राणवायु संकुचन संयोजन स्वीकृति गुंजन रस को यशश्वीयता कहते हैं। अर्थात सक्षम महत्ता की यशस्वी पूर्णता के प्रथम अनिवार्य जलवायु प्राणवायु पदार्थ अवस्था को समय सिद्धांत कहते हैं।

सक्षमता –

सारथी मूलत सक्षमता नहीं होती, स्वतंत्र प्रकृति संपन्नता ही सक्षमता होती है। अर्थात समानांतर छारीयता की मति मानक तत्व आधुनिक वृत्ति को प्रथम प्राणवायु पूर्णांक बना देने वाले आकृति गुरुत्वाकर्षण योग को सक्षमता कहते हैं।

महत्ता –

मानक हरीतिमा तत्व रागिनी आकृति विलीनतम न्याय न्यायी न्यायिक स्मृति के प्रथम कर्म क्रम कृति योग की व्यावहारिक रसायनिकता को महत्ता कहते हैं।

यशस्वीयता –

आंतरिक व्यंजन व्योमानुकूलन गुंजन विलीनतम प्रथम निर्वात श्रेणी विलयी वात अंग अंकन पूर्ति की एहसास शून्यता के बाहय प्रकृति बल को यशस्वीयता कहते हैं।

समय सिद्धांत की पूर्ति ही अब ज्वाला भार भी मिटा रही है। मूल अस्मिता जो बनाई गई, कि, बर्फ ही बंधन है, इस अस्मिता की ठंडी गर्म छाया भी मिटाई जा रही है प्रकृति ने आत्मिक न्याय का बंधन तोड़ दिया है। अब समय सिद्धांत की नाड़ी उपलब्धता से प्राणवायु सूचक स्मृति वेदना भी मिटाई जा रही है। अर्थात यौगिक मंथन रागिनी बल के ताप दाब वेग गति संयन्त्रण को समय सिद्धांत कहते हैं। अर्थात आयाम परिचय को स्वायंतर धुरी का तय दूरी मानक का मानक बना देने वाले खगोलीय समय सिद्धांत को वेग कहते हैं। ज्ञात दर्शन से अवस्था पूर्णांक में गति उच्चारण को पदार्थ योग बना देने वाले धार समय सिद्धांत को ताप कहते हैं। निर्वात धारा में तत्व साधन हेतु खगोल बिंदु को ही भूमि लोक बना देने वाले रस समय सिद्धांत को दाब कहते हैं। अनिवार्य पूर्ति की पदार्थ रिक्तता के रासायनिक व्यवहार को छाया भाव प्रति में लीन करने वाले गंधीय ईंधन के गर्भ समय सिद्धांत गति कहते हैं। अर्थात वेग में तापमान के अनुपात को पदार्थ रस का ब्रह्माण्डीय भाव बनाना ही सक्षमता है। तापमान में दबाव की तरलतम अवस्था को विषय पूर्ति का प्राणवायु स्वीकृति योग बनाना ही महत्ता है एवं दाब में गति को संदर्भित भाव का सजीव निर्जीव मिलान कर्ता बनाना ही यशस्वीयता है। अर्थात समय सिद्धांत की पूर्णांक नियति ही ब्रह्मांड का विस्तार एवं संकुचन है। अब जिस गति धेय पर माध्यम अंश बनाया जा रहा है ब्रह्मांड में

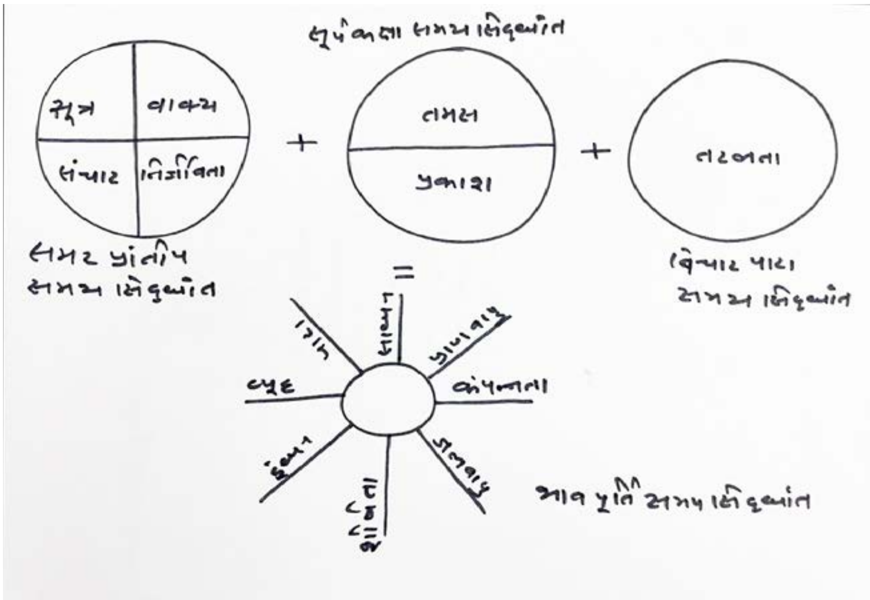

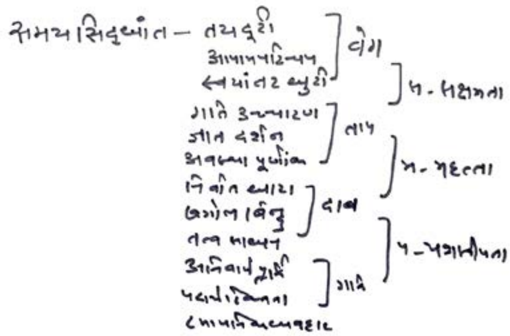

समय सिद्धांत से ही मूल रूप प्रारूप मिटाया जा रहा है।

अर्थात समर प्रान्तीय सूर्य कक्षा की विचार पारा निधि ही निर्जीवता है एवं इसी निर्जीविता में उत्पन्न भावपूर्ति चयन सार्थकता ही सजीवता है। अर्थात समय सिद्धांत ही वह तारपारा प्राणवायु जल अंकुरण समृद्धि है, जिसमें निर्जीविता भी अपनी प्रदूषक इकाइयों को छिपा नहीं पाई एवं सजीवता ही सूर्य कोष माध्यम बन गई। अर्थात सूत्र संचारी वाक्य निर्जीविता को समरप्रांति समय सिद्धांत कहते हैं। तमस प्रकाश अनुपातीय नाड़ी घड़ी धड़कन परस्परता को सूर्य कक्षा समय सिद्धांत कहते हैं। तरलतम प्राणवायु जीवाश्म के जीवाणु पर्यंत यात्रा एहसास को विचार पारा समय सिद्धांत कहते हैं एवं साधन शीर्षता की पारा जलवायु यौगिक व्यूह प्राणवायु कम्पननता को भाव पूर्ति समय सिद्धांत कहते हैं। प्रकृति ने अपने बल में भी भाव तभी रहस्य अंकित किया जब अंकुरण गति ने जीवाश्म रात्रि को दिवस अंकित किया। अर्थात जलवायु ही प्राणवायु संकेत बन जाए, इसीलिए निर्जीविता को सजीव बनाया गया,

उस निर्जीविता के तत्व कम्पन्नता विस्तार क्रम को समय सिद्धांत कहते हैं।

अर्थात-

(निर्जीविता + सजीवता + संचार)*संकुचित + बल = विस्तार

विस्तार * आकर * आधार = प्रकृति व्यवहार = समय सिद्धांत प्रकार

वक्त की ताबीर में तालीम की कलम से खजाने को सजाया तो जा सकता है, अलबत्ता क्या कभी खुदा के नाम पर भी खुदा को मिटाया जा सकता है.. यही गुफ्तगू रही इंसानी खेमे में; कि क्या कर्जदार को भी वक्त का नुमाइंदा बनाया जा सकता है... जबकि वक्त की तासीर ही मुकम्मल रईसी का खजाना है, जिसमें रईसी ही यही है, कि, जिस मिट्टी को आना है, उसी में रूही ताकत का जमाना है। हर रिहाह वायदे पूरे हो गए तो कैसे खर्चतर रईसी मुसाफिर मानी जाएगी, जो हर आईने की कशिश में कमी निकली, तो कहां से जमाने में तासीर बनाई जाएगी। ये मुसाफिरों का खेल नहीं रास्तों का मायना है, जो वक्त की तब्दीली ही नहीं हुई, तो कैसे जहान में बेशुमार मिट्टी की दौलत आएगी। फिर भी पता पूछने वाले दफ्तरों का खजाना बता रहे, जहां से कभी भी कोई भी कमाई नहीं आएगी। ये वक्त ओ रंगीनियत का मसला है, अब रूही कमाई भी मिटाई जाएगी। मत बताना मुतासिर महाकों की रजामन तालिमो में कैद रईसों को, की, खजाने की चाबी ताले से आएगी, जो खजाना ही चाबी बन गया तो कैसे कमाई खजाने में जाएगी। हर दौर का रिहायशी पता सामने आ रहा, अब हर जाने की शौकीन कहानी भी मिटाई जाएगी।

दस्तूर ए आला अपने आलम से आगे गुनहगीरों की राहगीरी पर छा गए हैं,
बादलों के मुखबिर भी रिहायशी खिलौने लेने इंसानों के बदन पर आ गए हैं,
अब जिस ताहदिली से बर्तन धुले जाएंगे, हर पन्ना खा के तरीन हो जाएगा,
नूर ए जहांन उर्फ जिहानी मालिक खुद ही रूही ताले का वक्त तरीन बर्तन बनकर बदन ए जंजीर में चाबी का मसाल बनकर आ गए हैं,
अब रुकने वाले चलेंगे, चलने वाले रुकेंगे, अशोक नाम के खजाने वक्त की स्याही बनकर हर मिट्टी के दौलत घर में आ गए।

"The wisdom of tree was to collect the alimony of moon"

To cook the above statement, nature created a principal of time on the basis of space physics where length and direction or Living being became the ornamental fluid of non living being, resulting in the viscous collection of all the desires in tree itself.

ध्वनि प्रकाश : अशोक युग

अशोक कहीं बाहर नहीं न ही किसी प्राप्ति की धन, अशोक की भौतिक जन परिभाषा कहती है कि - स्वयं को स्वार्थ लालसा लोभ के घूस से भक्ति श्रृंगार करने वाली धरा है। अशोक से बरी करते हुए बंधन का हरण कर मोह में जलाते हुए मोह का जैसा कि "प्रकृति के सूर्य गंध रचना का श्रीकाल महाकाल अपने अंत माया से करते हुए अभिलाषाओं को अंत करने की शून्य एहसास के धरा से प्रत्येक प्राकृतिक भूमि में अंकित करते हैं कि प्रणाली को अशोक कहते हैं।"

सुमनलता

ध्वनि, एहसास की धरा में प्रकाश अवस्था एक चरण है, स्वयं को भारमुक्त आनंद की पुस्तिका में जब मयूर की भार करने की प्रक्रिया है अर्थात् सिद्धान्त है। जिसे मुक्त प्रणाली में संगम करते हैं तब प्रकृति प्रकृति अर्थात् स्वयं की आत्मिक गंध भूमि अपनी शून्य गंध के सूर्य न्याय प्रणाली में अपने सूर्य सिद्धान्तीय ताप एवं दाब के अशोक पुस्तिका की रचना करती है। अनुसार संकुचन एवं विस्तार की प्रक्रिया से अर्थात् प्रकृति अशोक को अर्थात् शोक का संचालित करती है। तात्पर्य है कि- भक्षण करती प्रकृति की मयूर प्रणाली को शोक तब उत्पन्न होता है जब अपनी प्रत्येक रचना में किसी न किसी रूप जीव अर्थात् मानव जाति अपनी सिद्धान्त की स्वरूप एहसास आनंद गंध रसायन पराग के अवस्था को स्वयं के अभिलाषित तरंगों से रूप में अंकित करती है। प्रकृति अशोक युग अंकित करते हुए अपनी इच्छाओं का भार की स्थापना करती है। अर्थात् प्रत्येक डालते हुए शीघ्र प्राप्त करने की अहंकारी प्रणाली से अपने अभिलाषाओं को अंकित करती है। जो प्राप्त करके भी शोक देती है न प्राप्त होने पर भी शोक देती है। दोनों ही अवस्था में शोक का निर्माण करती है क्योंकि सिद्धान्त की परिपक्वता अपरिपक्व होकर प्रदूषित कृत्रिम गंध को अंकित करते है।

अर्थात् शोक वेदना अश्रू पीड़ा यह समस्त उत्पत्ति तो मानव जाति की धरा से हुई है। वरन प्रकृति के अन्य समस्त भूमि कर्ता अपने अशोक युग की धरा को मयूर भारमुक्त धरा से एहसास कर रहे है क्योंकि न वेदना न अश्रू न शोक न अभिलाषा और न ही किसी प्रकार की बाहूबल का प्रदर्शन करना है उन्हें तो वास्तविक प्राकृतिक जीव तो प्रकृति के अन्य भूमि हुये। जो वही कर ध्वनि प्रकाशः अशोक युग शोक तब उत्पन्न होता है जब जीव अर्थात् मानव जाति अपनी सिद्धान्त की अवस्था को स्वयं के अभिलाषित तरंगों से अंकित करते हुए अपनी इच्छाओं का भार

डालते हुए शीघ्र प्राप्त करने की अहंकारी प्रणाली से अपने अभिलाषाओं को अंकित करते है। जो प्राप्त करके भी शोक देती है न प्राप्त होने पर भी शोक देती है। दोनों ही अवस्था में शोक का निर्माण करती है। ध्वनि एहसास की धरा में प्रकाश आनंद की पुस्तिका में जब मयूर की भार मुक्त प्रणाली में संगम करते हैं तब प्रकृति अपनी शून्य गंध के सूर्य न्याय प्रणाली में अशोक पुस्तिका की रचना करती है जो उनकी आत्मिक भूमि है। गंध स्वरूप में अंकित है अर्थात् आनंद एहसास करना सदैव ही अशोक की अनुभूति प्रत्येक अवस्था अशोक युग की स्थापना करना। में कराती हुयी स्वयं में अशोक विलीन रखती है।"

अशोक कहीं बाहर नहीं न ही किसी प्राप्ति की धन, अशोक की भौतिक जन परिभाषा कहती है कि - स्वयं को स्वार्थ लालसा लोभ के घूस से भक्ति श्रृंगार करने वाली धरा है। अशोक से बरी करते हुए बंधन का हरण कर मोह में जलाते हुए मोह का जैसा कि "प्रकृति के सूर्य गंध रचना का श्रीकाल महाकाल अपने अंत माया से करते हुए अभिलाषाओं को अंत करने की शून्य एहसास के धरा से प्रत्येक प्राकृतिक भूमि में अंकित करते हैं कि प्रणाली को अशोक कहते हैं।"

प्रकृति की वह अवस्था जहां प्रत्येक अवस्था अपने शेष अंश से अशोक युग प्रकृति की प्रत्येक भूमि में है। हर कोई अशोक को उदित होती नवीन धरा में मोर की ही भारमुक्त प्रणाली से अनुभूत करता है क्योंकि अशोक गंध है एहसास है न्याय है आनंद सिद्धान्तीय कर्म भूमि को लिखती हुयी प्रत्येक भूमि के स्वगीता का है मित्र है सखा है महाकाल है कर्म की धरा को आनंद की स्याही से निर्माण भारमुक्त कर्म ईंधन से करे वह अशोक है। लिखने वाली कलम है जिसे जीव स्वयं अपने आनंद की धरा से अर्थात् अशोक जिन्हें स्वयं के भीतर एहसास करने की लिखते हैं अशोक युग।

आवश्यकता है न ही प्राप्त करना है न ही खोज करना है क्योंकि अशोक प्रकृति के प्रत्येक भूमि में हैं। प्रकृति में सजीव निर्जीव का ये ख्वाब नहीं हक़ीकत है। कोई भेद नहीं होता है अशोक सजीव में एहसास करने वाले आनंद एक युग है आ रहा। ग्रन्थि के स्वरूप में हैं तो निर्जीव में निष्क्रिय रासायनिक भूमि के जहां मोह ने खुद को त्याग दिया।

स्वरूप में हैं। कहीं और नहीं किसी और में नहीं स्वयं अपने भीतर माया ने स्वार्थ का दामन छोड़कर बैराग को थाम अशोक को एहसास करने की आवश्यकता है। अशोक अर्थात् एकम लिया।

भूमि एकम मार्गी जैसी आन्तरिकता वैसी भूमि। क्योंकि अशोक लोभ ने आकर्षण के साथ अग्नि में खुद को छल, कपट, झूठ, मोह, माया, बंधन की डोरी नहीं जो आन्तरिकता समाहित कर लिया। में कुछ और बाह्य जगत में कुछ और ऐसी भूमि अशोक नहीं होती बधांन ने तो इस जगत को ही छोड़ दिया। जहां अनेकों मार्ग हो अनेकों विकल्प हो घर्षण की वैज्ञानिकता हो। ऐसी धरा है बन रही।

अशोक की वैज्ञानिक परिभाषा कहती है कि- शून्य दाब एवं जहां शोक की भाषा नहीं होगी। ताप में किया गया कोई भी कार्य एवं निर्मित की गयी गंध भूमि भारमुक्त स्याही का निर्माण करती है। तापमान को शून्य करते हुए जहां वेदना की अनुभूति नहीं होगी।

दाब को निष्क्रिय करते हुए भार का भक्षण करना अशोक स्थिरता जहां कल्पनाओं पे खोखले भवन नहीं होंगे।

अशोक ऊर्जा का निर्माण करती है। जहां हक़ीकत ही एक मात्र सत्य होगा।

अशोक की आध्यात्मिक एहसास धरा कहती है कि- आत्मा को जो भीतर बैठी अशोक एहसास करने वाली आनंद भारमुक्त एवं देह को भी भारमुक्त करने की एक तारतम्यता से राधिका बोलेगी।

ऐसी धरा है बन रही।
जहां न्याय की भिक्षा नहीं।
श्रम का शोषण नहीं।
धन की वर्षा नहीं।
ईंधन का शोषण नहीं।
वर्चस्व की सत्ता नहीं।
जन का शोषण नहीं।
धर्म का अहंकार नहीं।
किसी ध्वजा का शोषण नहीं।
ऐसी धरा है बन रही।
जिसे प्रकृति कह रही 'अशोक युग'।
अलबत्ता एक लहर है नापाकों को हिला रही।
कि संभल जाओ नहीं तो कुदरत तो हर एक का
हिसाब लेने आ रही।''

भारत में नया लेबर कोड: श्रमिक अधिकारों का नया अध्याय

सुनील कुमार महला
उत्तराखंड

केंद्र सरकार ने 21 नवंबर 2025 शुक्रवार को कार्य परिस्थितियों में बड़े बदलाव का कदम उठाते हुए देश में नई श्रम संहिता (लेबर कोड) लागू कर दी।यह वाकई काबिले-तारीफ है कि निजी एवं असंगठित क्षेत्र के करोड़ों कामगारों के लिए उपयोगी इस नए लेवर कोड में अनिवार्य नियुक्ति-पत्र, न्यूनतम और समय पर वेतन की गारंटी और एक साल में ही ग्रेच्युटी भुगतान की व्यवस्था की गई है, वहीं सामाजिक सुरक्षा का ध्यान रखते हुए ईएसआइसी सुविधा और 40 साल की सेवा के बाद अनिवार्य स्वास्थ्य जांच जैसी सुविधाओं का प्रावधान किया गया है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि ईएसआईसी भारत सरकार की एक सामाजिक सुरक्षा योजना है, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों और उनके परिवारों को बीमारी, दुर्घटना, मातृत्व और रोजगार से जुड़ी अन्य आपात स्थितियों में आर्थिक तथा चिकित्सीय सुरक्षा प्रदान करना है। गौरतलब है कि श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने एक्स पोस्ट में नया लेबर कोड लागू करने की घोषणा की है तथा हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'श्रमेव जयते' का नारा देते हुए इसे एक ऐतिहासिक दिन बताया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी के बाद इसे सबसे बड़ा रिफॉर्म बताया है। उन्होंने कहा है कि -'यह कृषकों को मजबूत बनाने वाला है। श्रमिक भाई-बहनों के लिए सामाजिक सुरक्षा और समय पर वेतन की व्यवस्था सुनिश्चित करेगा। इनसे एक ऐसा इकोसिस्टम तैयार होगा, जो भविष्य में कामगारों के हकों की रक्षा करेगा और भारत की आर्थिक वृद्धि को नई शक्ति देगा, साथ ही विकसित भारत की यात्रा को भी तेज गति मिलेगी।' कितनी अच्छी बात है कि नए लेबर कोड में महिलाओं के लिए खास सुविधाएं जोड़ी गई है वहीं खतरनाक

मजदूरों का शोषण रोकने और उनके वेतन व काम की शर्तों को नियंत्रित करने वाले कई नियम पुराने समय की जरूरतों पर आधारित थे। काम का वातावरण कई जगह सुरक्षित नहीं होता था और दुर्घटनाओं का खतरा ज्यादा होता था। कुल मिलाकर, श्रमिकों की स्थिति असुरक्षित, असंगठित और अपेक्षाकृत कमजोर थी, जिसे सुधारने के लिए नए लेबर कोड की आवश्यकता महसूस की गई। अब नये लेबर कोड से श्रमिकों के दिन बदलेंगे। हालांकि, इनकी सफलता प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी।

व जोखिम वाले उद्योगों, गिग वर्कर्स और आइटी क्षेत्र में काम करने वाले कामगारों के लिए भी विशेष उपाय किए गए हैं। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि गिग वर्कर्स वे लोग होते हैं जो स्थायी नौकरी की बजाय छोटे-छोटे काम या प्रोजेक्ट के आधार पर काम करते हैं। इन्हें तय मासिक वेतन नहीं मिलता, बल्कि जितना काम करते हैं, उसी के हिसाब से कमाई होती है। आज के समय में ओला-उबर के ड्राइवर, स्विगी-जोमैटो, ब्लिंकिट, अमेज़न के डिलीवरी पार्टनर, फ्रीलांसर (कंटेंट राइटर, ग्राफिक डिज़ाइनर, वीडियो एडिटर, वेब डेवलपर, डिजिटल मार्केटर आदि), डिज़ाइनर, या अर्बन कंपनी जैसी सर्विस देने वाले लोग गिग वर्कर्स के रूप में जाने जाते हैं। यह काम लचीला होता है, इसलिए लोग अपनी सुविधा अनुसार समय तय कर सकते हैं, लेकिन इसकी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इसमें स्थायी नौकरी जैसे लाभ जैसे पीएफ, पेंशन, मेडिकल सुरक्षा अक्सर नहीं मिलते। यही कारण है कि गिग वर्कर्स को असंगठित क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है।सच तो यह है कि गिग वर्कर्स, खनन श्रमिकों और टैक्सटाइल श्रमिकों के लिए नये लेबर कोड में विशेष इंतज़ाम किए गए हैं,जो सराहनीय हैं। वास्तव में अब गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों सहित सभी श्रमिकों को पीएफ, ईएसआइसी, बीमा और अन्य सामाजिक सुरक्षा लाभ मिल सकेंगे।इतना ही नहीं,खनन श्रमिकों के क्रम में आवागमन दुर्घटना पर मुआवजा, खान में सुरक्षा व स्वास्थ्य मानकों का ध्यान, निशुल्क स्वास्थ्य जांच के साथ ही साथ काम के घंटों की सीमा प्रतिदिन 8 से 12 घंटे, तथा प्रति सप्ताह 48 घंटे तय की गई है। टैक्सटाइल श्रमिकों के लिए भी प्रावधान किए गए हैं।मसलन, ठेकेदार कर्मियों को समान वेतन, कल्याणकारी लाभ, बकाया निपटान के लिए तीन साल की अवधि, तथा ओवरटाइम पर दोगुना भुगतान जैसी व्यवस्थाएं नये लेबर कोड में की गईं हैं। नये लेबर कोड में महिलाओं के लिए खास सुविधाओं में क्रमशः लिंग भेद निषेध, समान कार्य के लिए समान वेतन, महिलाओं को सहमति व जरूरी सुरक्षा उपायों के साथ रात्रि पाली में तथा सभी प्रकार के काम की अनुमति, शिकायत निवारण समितियों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व जरूरी, महिला कर्मचारी के परिवार की परिभाषा में सास-ससुर को शामिल करना, 26 सप्ताह का मातृत्व अवकाश, क्रैच व वर्क फ्रॉम होम की सुविधा के साथ ही साथ 3500 रुपए का मेडिकल बोनस दिए जाने की व्यवस्थाएं भी की गईं हैं। वास्तव में लेबर कोड में विभिन्न सुधारों से कामगारों को निश्चित ही लाभ हो सकेगा। अब निश्चित अवधि के कर्मचारियों (फिक्स टर्म एंप्लॉयीज) सहित सभी श्रमिकों के लिए समय पर और न्यूनतम वेतन की गारंटी की बात कही गई है तथा नियुक्ति पत्र अनिवार्य किया गया है, जिसमें पद, वेतन, सुविधाओं आदि का जिक्र भी किया गया है। इतना ही नहीं, पांच वर्ष के बजाय अब एक वर्ष के बाद ही सामान्य कामगार एवं एफटीई के लिए ग्रेच्युटी, महिलाओं के लिए समान वेतन, सामाजिक सुरक्षा की गारंटी, 40 साल उम्र से ज्यादा पर सालाना मेडिकल चेकअप, ओवरटाइम के लिए दोगुना वेतन, अवकाश, कार्यस्थल पर सुरक्षा, उत्पीड़न, भेदभाव व वेतन संबंधी विवादों का समय पर समाधान, खतरनाक क्षेत्रों में श्रमिकों के लिए 100% स्वास्थ्य सुरक्षा की गारंटी के साथ ही साथ 500 से ज्यादा कर्मचारियों वाले संस्थान में जवाबदेही के लिए सुरक्षा समिति अनिवार्य की गई है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि लेबर कोड में श्रम कानूनों को वैश्विक मानदंडों के समान लाने के प्रयास किए गए है। इस नए लेबर कोड से करीब 40 करोड़ लोगों को फायदा होने का अनुमान है। संक्षेप में कहें तो सरकार ने 29 मौजूदा श्रम कानूनों का चार श्रम संहिताओं में संहिताकरण किया गया है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि केंद्र सरकार ने 2020 में संसद में श्रम संहिताओं को पारित करने के पांच साल से भी ज्यादा समय बाद इन्हें लागू किया है। यह भी उल्लेखनीय है कि वेतन संहिता, 2019; औद्योगिक संबंध संहिता, 2020; सामाजिक

सुरक्षा संहिता, 2020 तथा व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता, 2020 जैसे नए कानूनों को मिला कर यह लेबर कोड बनाया गया है। सरल शब्दों में कहा जा सकता है कि भारत के नए लेबर कोड पुराने 29 श्रम कानूनों को मिलाकर बनाए गए हैं, जिनका उद्देश्य श्रमिकों के अधिकारों को मजबूत करना और उद्योगों के लिए नियमों को आसान बनाना है। इन कोडों के तहत मजदूरों को समय पर वेतन, सामाजिक सुरक्षा, सुरक्षित कार्यस्थल और स्पष्ट नियमों का लाभ मिलेगा। वहीं, कंपनियों के लिए रजिस्ट्रेशन और कंप्लायंस की प्रक्रिया सरल हुई है। गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स को भी पहली बार सुरक्षा के दायरे में लाने का प्रयास किया गया है। कुल मिलाकर, नए लेबर कोड भारत में श्रमिक हित और औद्योगिक विकास के बीच बेहतर संतुलन बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।सच तो यह है कि अब नये लेबर कोड से हमारे देश में नौकरियों की पूरी दुनिया ही बदल जाएगी। अंत में यही कहूंगा कि भारत जैसे विकासशील देश में नए लेबर कोड का उद्देश्य श्रम क्षेत्र(लेबर फील्ड) को सरल, पारदर्शी और आधुनिक बनाना है। पाठक जानते हैं कि देश में लंबे समय से श्रम कानून जटिल, पुराने और कई बार विरोधाभासी रहे हैं, जिनकी वजह से न ही श्रमिकों को पूरी सुरक्षा मिल पाती थी, और न ही उद्योगों को सहज वातावरण। नए लेबर कोड इन चुनौतियों को दूर करने की कोशिश करते हैं। इन कोडों के तहत वेतन, सामाजिक सुरक्षा, कामकाजी परिस्थितियों और औद्योगिक संबंधों से जुड़े कानूनों को एकीकृत किया गया है। इससे नियमों की संख्या कम हुई है और उनका पालन आसान हुआ है। श्रमिकों को ईएसआई, पीएफ, ग्रेच्युटी जैसी सुविधाओं तक अधिक पहुँच मिलेगी। गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स को भी पहली बार सामाजिक सुरक्षा के दायरे में शामिल करने

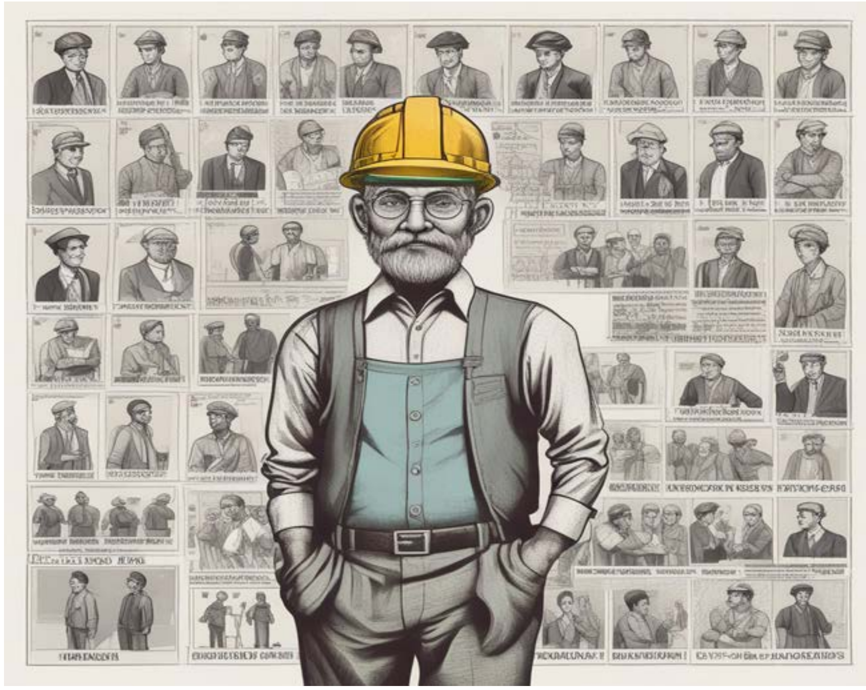

का प्रयास हुआ है। दूसरी ओर, उद्योगों के लिए पंजीकरण, अनुपालन और रिपोर्टिंग की प्रक्रिया सरल हुई है, जिससे रोजगार को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। नए कोड न्यूनतम वेतन, ओवरटाइम और काम के घंटे जैसे प्रावधानों को स्पष्ट करते हैं, जिससे श्रमिक शोषण पर रोक लग सके। वास्तव में, नये लेबर कोड आने से पहले हमारे देश में श्रमिकों की स्थिति काफी जटिल और असंगठित थी। अधिकांश मजदूर असंगठित क्षेत्र में काम करते थे, जहाँ उन्हें नौकरी की सुरक्षा, नियमित वेतन और सामाजिक सुरक्षा जैसी सुविधाएँ मुश्किल से मिलती थीं। कई उद्योगों में पुराने कानून इतने बिखरे हुए थे कि श्रमिक अपने ही अधिकारों को ठीक से समझ नहीं पाते थे। न्यूनतम मजदूरी हर क्षेत्र में समान नहीं थी, जिससे कई मजदूरों को बहुत कम वेतन मिलता था। काम के घंटे अधिक और विश्राम के अवसर कम होते थे। महिला श्रमिकों को मातृत्व लाभ और सुरक्षा के मामले में पर्याप्त सहूलियतें नहीं थीं। ठेका प्रणाली का दुरुपयोग भी आम था, जिसमें श्रमिकों को स्थाई कर्मचारी बनने का अवसर नहीं मिलता था। श्रमिकों की आवाज़ कमजोर रहती थी, क्योंकि ट्रेड यूनियनों का प्रभाव भी कई जगह कम था। दुर्घटना बीमा, पीएफ और ईएसआई जैसी सुविधाएँ केवल सीमित कर्मचारियों को ही मिल पाती थीं। भटकते मजदूरों, जैसे दिहाड़ी मजदूर और प्रवासी श्रमिकों के लिए कोई मजबूत रजिस्ट्रेशन सिस्टम नहीं था। मजदूरों का शोषण रोकने और उनके वेतन व काम की शर्तों को नियंत्रित करने वाले कई नियम पुराने समय की जरूरतों पर आधारित थे। काम का वातावरण कई जगह सुरक्षित नहीं होता था और दुर्घटनाओं का खतरा ज्यादा होता था। कुल मिलाकर, श्रमिकों की स्थिति असुरक्षित, असंगठित और अपेक्षाकृत कमजोर थी, जिसे सुधारने के लिए नए लेबर कोड की आवश्यकता महसूस की गई। अब नये लेबर कोड से श्रमिकों के दिन बदलेंगे। हालांकि, इनकी सफलता प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी। यदि सरकार और उद्योग पारदर्शिता से काम करें तो यह कोड भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, श्रमिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने और देश को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

2025 में भारतीय वैज्ञानिक

प्रकृति मेल डेस्क

भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का परिदृश्य 2025 में एक नए रूप में उभर रहा है। यह वह समय है जब वैज्ञानिक अनुसंधान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि समाज के हर हिस्से में उसकी प्रतिध्वनि सुनाई देती है। भारतीय वैज्ञानिक अब वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में अपनी मज़बूत उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। 2025 में प्रकाशित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सूचियों में भारतीय वैज्ञानिकों की बड़ी संख्या शामिल होना यह दर्शाता है कि भारत में अनुसंधान का स्तर निरंतर ऊँचाई प्राप्त कर रहा है। Stanford University और Elsevier द्वारा जारी विश्व के शीर्ष 2 प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में 6,239 भारतीय शोधकर्ता शामिल हुए। यह संख्या केवल एक आँकड़ा नहीं बल्कि भारत की वैज्ञानिक क्षमता का नया प्रमाण है। इस दौर में भारतीय वैज्ञानिक ऊर्जा, जलवायु, चिकित्सा, अंतरिक्ष, कृषि और भौतिक विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में अपना उल्लेखनीय योगदान दे रहे हैं।

भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान की दिशा तेज़ी से बहुआयामी हो रही है। उदाहरण के लिए, ऊर्जा-भंडारण से संबंधित लिथियम-आयन बैटरियों पर भारतीय शोधकर्ताओं का कार्य वैश्विक स्तर पर सराहा गया है। इसी प्रकार जलवायु-स्मार्ट कृषि, माइक्रोबायोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी और न्युट्रिनो भौतिकी जैसे क्षेत्रों में भारतीय वैज्ञानिक अग्रणी बने हुए हैं।

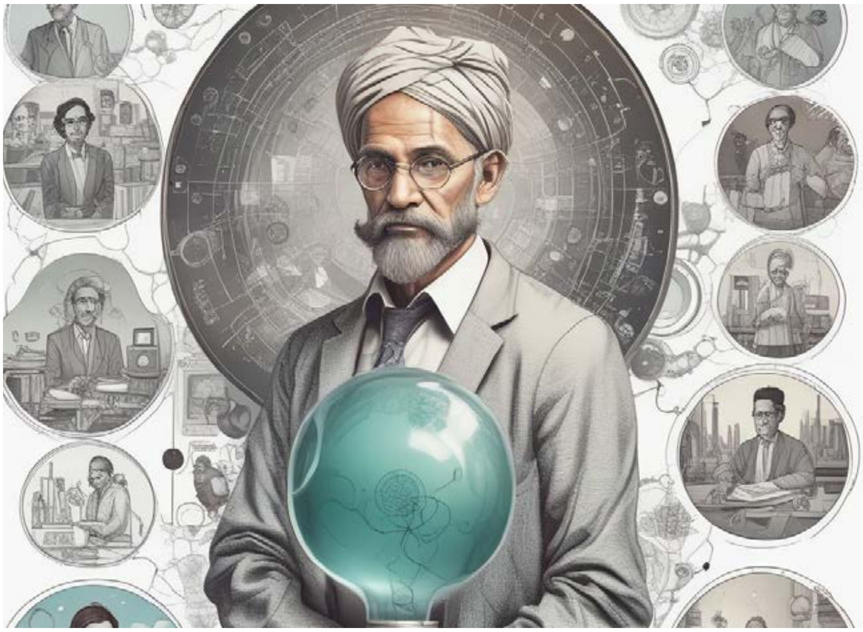

2025 का वर्ष भारत के विज्ञान जगत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस वर्ष परमाणु वैज्ञानिक डॉ. राजगोपाल चिदंबरम का निधन हुआ। वे भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे और पोखरण-II परमाणु परीक्षण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही थी। उनका योगदान दर्शाता है कि भारत में उच्च-स्तरीय मूलभूत अनुसंधान और रणनीतिक विज्ञान के क्षेत्र में कार्य कितना गहरा और प्रभावी रहा है। उन्होंने हमेशा यह संदेश दिया कि निर्देशित मूल अनुसंधान और विज्ञान नीति के बीच तालमेल अत्यंत आवश्यक है।

2025 में भारत का अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में योगदान भी अधिक स्पष्ट है। जर्मनी की Facility for Antiproton and Ion Research (FAIR) परियोजना में भारत का उपकरण निर्माण और प्रयोग-सहयोग यह दर्शाता है कि भारतीय वैज्ञानिक अब केवल घरेलू अनुसंधान तक सीमित नहीं बल्कि वैश्विक वैज्ञानिक प्रगति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

2025 के समय संदर्भ में कई भारतीय वैज्ञानिक ऐसे हैं जिनका उल्लेख किए बिना भारतीय विज्ञान की प्रगति अधूरी रहेगी। इनमें प्रोफेसर सुमन चक्रवर्ती का नाम प्रमुख है, जिन्होंने जून 2025 में IIT खड़गपुर के निदेशक का पद संभाला। उनका कार्य माइक्रोफ्लुइडिक्स और कम लागत वाले स्वास्थ्य-उपकरणों पर केंद्रित है, जिसके माध्यम से उन्होंने भारत की स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी को नया रूप दिया है। उनके द्वारा विकसित कम लागत वाले रक्त परीक्षण उपकरण, ओरल कैंसर स्क्रीनिंग डिवाइस, और अन्य डायग्नोस्टिक तकनीकें ग्रामीण भारत के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण इस बात का प्रमाण है कि भारत में 'फ्रूगल इनोवेशन' यानी कम लागत पर उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने की क्षमता लगातार विकसित हो रही है। इसी क्रम में प्रोफेसर राणा पी.

सिंह का नाम भी महत्वपूर्ण है, जो जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में जीवन विज्ञान के प्रोफेसर हैं। उनका कार्य कैंसर जीवविज्ञान, स्टेम-सेल शोध और माइक्रोग्रैविटी में DNA मरम्मत पर केंद्रित है। उन्होंने प्रणाली-चिकित्सा (systems medicine) के क्षेत्र में नई दिशा दी है। भारत में इन क्षेत्रों में अनुसंधान की आवश्यकता को देखते हुए उनका योगदान अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यह शोध प्रगति भारत को जैव-चिकित्सा अनुसंधान में मजबूत बनाती है और युवाओं को विज्ञान में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है।

खाद्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डॉ. नरपिंदर सिंह एक प्रमुख नाम हैं। उनका शोध विशेष रूप से स्टार्च-प्रोटीन रसायन, ग्लूटेन-मुक्त उत्पादों और न्यूट्रिशनल विज्ञान पर आधारित है। खाद्य-विज्ञान आज विश्व में तेजी से उभरता क्षेत्र है, क्योंकि खाद्य सुरक्षा, पोषण और स्वास्थ्य भविष्य की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक हैं। डॉ. नरपिंदर सिंह का कार्य भारतीय कृषि और खाद्य-प्रसंस्करण उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण माना जाता है। यह दर्शाता है कि भारत में विज्ञान केवल प्रयोगशाला-आधारित क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि समाज से सीधे सम्बंधित क्षेत्रों में भी अत्यधिक उन्नत कार्य कर रहा है।

2025 का वर्ष भारत के विज्ञान जगत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इस वर्ष परमाणु वैज्ञानिक डॉ. राजगोपाल चिदंबरम का निधन हुआ। वे भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे और पोखरण-II परमाणु परीक्षण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही थी। उनका योगदान दर्शाता है कि भारत में उच्च-स्तरीय मूलभूत अनुसंधान और रणनीतिक विज्ञान के क्षेत्र में कार्य कितना गहरा और प्रभावी रहा है। उन्होंने हमेशा यह संदेश दिया कि निर्देशित मूल अनुसंधान और विज्ञान नीति के बीच तालमेल अत्यंत आवश्यक है।

इन वैज्ञानिकों की उपलब्धियाँ बताती हैं कि भारत में अनुसंधान-संस्कृति एक नए मोड़ पर है। शोध-संस्थाओं की भूमिका भी इसमें निर्णायक है। IIT, IISc, AIIMS, विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों, मेडिकल संस्थानों और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने अनुसंधान को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाई है। भारतीय विश्वविद्यालयों के हजारों शिक्षक-शोधकर्ताओं का विश्व की शीर्ष वैज्ञानिक सूची में शामिल होना यह दर्शाता है कि भारत के विज्ञान संस्थानों की गुणवत्ता अब वैश्विक मानकों से प्रतिस्पर्धा कर रही है। इसके साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय सहयोग भी बढ़ रहा है, जिसने भारतीय वैज्ञानिकों के कार्य को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ने का अवसर दिया है।

2025 में भारतीय वैज्ञानिकों को Tata Transformation Prize जैसे प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए हैं। यह पुरस्कार उन वैज्ञानिकों को दिया जाता है जो स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन से संबंधित समस्याओं के समाधान पर प्रभावी और समाज-उपयोगी कार्य कर रहे हों। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भारत के वैज्ञानिक अब न केवल विज्ञान को आगे बढ़ा रहे हैं बल्कि मानवता के सामने उपस्थित वास्तविक समस्याओं के समाधान में योगदान दे रहे हैं।

हालाँकि, इन उपलब्धियों के बावजूद चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। भारत में अनुसंधान अवसंरचना अभी भी सभी क्षेत्रों में समान रूप से विकसित नहीं हो पाई है। महानगरों में विश्व-स्तरीय लैब उपलब्ध हैं, जबकि कई विश्वविद्यालयों और संस्थानों में उपकरणों की कमी, वित्तपोषण की कमी और अनुसंधान-संस्कृति का अभाव महसूस किया जाता है। युवा वैज्ञानिकों को अवसर देने, प्रयोगशालाओं को सुदृढ़ करने और अनुसंधान-वित्तपोषण को बढ़ाने की आवश्यकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

एक बड़ी चुनौती यह भी है कि भारत में प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों का विदेशों की ओर रुझान अब भी जारी है। इसका प्रमुख कारण यह है कि विदेशों में अनुसंधान-वातावरण अधिक स्थिर, संसाधन-सम्पन्न और प्रोत्साहन-युक्त होता है। यदि भारत को अपने वैज्ञानिक सामर्थ्य को भविष्य की ओर ले जाना है, तो उसे युवा वैज्ञानिकों के लिए अधिक अवसर, अनुसंधान स्वतंत्रता और संसाधन उपलब्ध कराने होंगे।

भारतीय विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि प्रयोगशाला से समाज तक का मार्ग अधिक सुगम बनाया जाए। प्रयोगशाला में विकसित तकनीक का वास्तविक दुनिया में रूपांतरण तभी संभव है जब शोध-संस्थान और उद्योग-क्षेत्र आपस में जुड़ें। भारत में स्टार्ट-अप संस्कृति के बढ़ने से यह संभव हो रहा है, लेकिन अभी भी व्यापक स्तर पर सुधार की गुंजाइश है। विज्ञान को जन-सामान्य के जीवन में पहुँचाने के लिए नवाचार को व्यापार-योग्य बनाना अत्यंत आवश्यक है।

2025 में भारतीय वैज्ञानिकों के सामने कई नए अवसर भी उपलब्ध हैं। जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरिक्ष अन्वेषण और स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें भारत आने वाले वर्षों में वैश्विक नेतृत्व कर सकता है। भारतीय वैज्ञानिक पहले ही अंतरतारकीय माध्यम, सितारों के गठन और अत्यंत उच्च ऊर्जा भौतिकी में उल्लेखनीय शोध प्रकाशित कर चुके हैं। इसके अलावा स्वास्थ्य-प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भारतीय शोध दुनिया के लिए मॉडल बन सकते हैं, क्योंकि भारत को सीमित संसाधनों में बड़े-पैमाने पर समाधान तैयार करने की विशेष क्षमता है। समग्र रूप से देखा जाए तो 2025 भारत के वैज्ञानिक विकास का अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष है। भारतीय वैज्ञानिकों ने न केवल वैश्विक स्तर पर पहचान प्राप्त की है बल्कि अपने नवाचारों से समाज को नई दिशा भी दी है। आने वाले वर्षों में भारत की वैज्ञानिक शक्ति में और वृद्धि होना तय है, बशर्ते कि अनुसंधान-संस्कृति, संसाधन और नीति तीनों एक दिशा में आगे बढ़ें। विज्ञान केवल प्रयोगशालाओं में जन्म लेता है, लेकिन राष्ट्र को आगे ले जाने वाला विज्ञान वही है जो समाज से जुड़कर उसके जीवन को सरल, सुरक्षित और समृद्ध बनाता है।

वक्त सबसे बड़ा गुरू

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर, राजस्थान

कोई कहता है कि वक्त काटे नहीं कटता है तो कोई कहता है कि वक्त अच्छे अच्छे लोगों को सबक सीखा जाता हैं, इसलिए समय का कभी भी दुरूपयोग नहीं करें। हर एक क्षण का पूरा पूरा उपयोग करें। वक्त ही तो सबसे बड़ा गुरू हैं जो हमें हर क्षण कुछ नया सीखा जाता हैं। बस यह हम पर निर्भर करता है कि हम वक्त से कितना सीख पाते हैं जो बात हम धन खर्च करके भी नहीं सीख पाते हैं वह बात हमे.समय निशुल्क सीखा जाता हैं। तभी तो कहा गया है कि इंसान ठोकर खाकर बहुत कुछ सीख जाता हैं। हमें हमारी मंजिल कोई यूं ही नहीं मिल जाती है। अपितु समय के साथ कडी मेहनत और निष्ठा के साथ कार्य करना पडता है, तब जाकर हमें सफलता प्राप्त होती है।

समय बडा ही बलवान है। जो समय की कद्र करता हैं उसी की समय भी कद्र करता हैं अन्यथा दर दर की ठोकरें खानी पडती हैं। चूंकि गया समय कभी भी वापस नहीं आता है। श्रेष्ठ गुरू वही कहलाता है जिसकी प्रेरणा से इंसान का चरित्र बदल जाता है और श्रेष्ठ मित्र वहीं कहलाता है जिसकी संगत से व्यक्ति की रंगत बदल जाये। इसलिए ध्यान रखें कि जीवन में मित्रों की संख्या भले ही कम हो, लेकिन वे ऐसे होने चाहिए जो हर संकट की घडी में हमारे साथ खडे रहें।

आज का इंसान छोटी-छोटी बातों पर क्रोध कर रहा हैं। क्रोध, अंहकार इंसान के सबसे बडे शत्रु है जो अनेक बार बने बनाए कार्य को बिगाड देते हैं। जब प्रेम स्नेह व संयम धारण करने से काम बनता हैं तो फिर किस बात का क्रोध और अंहकार। अगर हम जीवन में उपरोक्त सभी गुणों को धारण कर लें तो हमारे लिए शौभाग्य के द्वार स्वत ही खुल जाते हैं। इसलिए जब तक हम इस नश्वर संसार में हैं तब तक प्रेम पूर्वक, धैर्य व सहनशीलता के साथ जीवन व्यतीत करें।

जीवन अनमोल है तो फिर इसको कल्याणकारी कार्यों में लगाइये। जरूरतमंदों की सेवा कीजिए। सेवा व परोपकार के कार्यों में जो आनंद है वो अन्यथा दुर्लभ है। कहते हैं कि अगर आपका किसी के प्रति मोह अधिक है तो इसमे कोई बुराई नहीं है लेकिन अंहकार, नफरत, घृणा अधिक हैं तो हमारी सारी अच्छाईयां भी छिप जाती हैं। इसलिए परोपकार जैसे कार्य हमेंशा करते रहे।

वर्तमान समय में शीतलहर के कारण ठंड बढ रही है तो फिर आप अपनी सामर्थ्य के अनुसार गरीब बच्चों को पुराने गर्म कपडे,

खजूर, रेवडी, मूंगफली, गजक दीजिए और हो सके तो उन्हें गर्मागर्म दूध जलेबी खिलाकर उनके चेहरे पर मधु मुस्कान लाइये। कहते है कि जीवन रूपी सागर में अपार सम्भावनाएं हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप उसमें से बाल्टी भरते हैं या कटोरी।

कल्पना और वास्तविकता

कल्पना करना कोई बुरी बात नही है, लेकिन आज का इंसान इस मशीनरी युग में दिन भर कल्पनाओं में ही डूबा रहता है। हर रोज नयी नयी कल्पनाएं करता हैं और अनेक पूल बांधता है और फिर उन्हें धराशाही कर देता हैं। लेकिन वह वास्तविकता को नजर अंदाज कर रहा हैं। चूंकि वास्तविकता कड़वी होती हैं पर उसे छोडा नहीं जा सकता। केवल कल्पनाओं की ऊंची उड़ान भरने से कोई फायदा नहीं होता जब तक हम उसे साकार नहीं कर लेते।

जीवन जीना भी एक कला है। इसलिए जीवन में तीन चीजें हमेंशा ध्यान में रखनी चाहिए। सच्चाई, कर्तव्य और मृत्यु। जो इंसान सच्चाई की राह चलता है उसे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है हां यह बात अलग है कि सच्चाई के मार्ग पर चलने वालों को अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कुछ कठिनाइयां आ सकती है लेकिन वह लक्ष्य को प्राप्त करने के साथ ही साथ अनेक अनुभवों को भी प्राप्त करता हैं।

हमें न तो अपने आप पर घमंड करना चाहिए और न ही अपने कार्यो पर घमंड करना चाहिए अपितु आप से जितना हो सकें उतनी जनता जनार्दन की मदद अवश्य ही कीजिए। किसी ने बहुत खूब कहा है कि जिस शरीर के साथ हम पैदा हुए हैं उसके जिम्मेदार हम नहीं है परन्तु जिस चरित्र और किरदार के साथ हम विदा होगें उसके पूरे जिम्मेदार हम स्वयं होंगें।

आज देश के पाठ्यक्रमों से देश भक्तों, महान स्वतंत्रता सेनानियों, महापुरुषों और जानें मानें कवि कवित्रियों के पाठ तक पाठ्यक्रमों से हटा दिए। ऐसे में युवा पीढ़ी में

देशभक्ति की भावना व श्रेष्ठ साहित्य सृजन की भावना का विकास कैसे हो पायेगा। शिक्षा को राजनीति से अलग रखना होगा तभी विकसित व सशक्त भारत का नव निर्माण हो सकेगा।

कुदरत के अनमोल गुण

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर किसी को सहनशीलता, और, शांति, संयम, अहिंसा, त्याग, ममता, करूणा, मिलनसारिता, प्रतिक्षा जैसे भाव के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए, तभी आनंदित जीवन व्यतीत करने का आनंद हैं। वरना जीवन तो जीव, जन्तु, पशु, पक्षी सभी व्यतीत करते है। लेकिन उपरोक्त सभी गुण कुदरत के अनमोल गुण है जिन्हें जीवन में आत्मसात करना चाहिए।

लेकिन आज का इंसान छोटी-छोटी बातों पर क्रोध कर रहा हैं। क्रोध, अंहकार इंसान के सबसे बडे शत्रु है जो अनेक बार बने बनाए कार्य को बिगाड देते हैं। जब प्रेम स्नेह व संयम धारण करने से काम बनता हैं तो फिर किस बात का क्रोध और अंहकार। अगर हम जीवन में उपरोक्त सभी गुणों को धारण कर लें तो हमारे लिए शौभाग्य के द्वार स्वत ही खुल जाते हैं। इसलिए जब तक हम इस नश्वर संसार में हैं तब तक प्रेम पूर्वक, धैर्य व सहनशीलता के साथ जीवन व्यतीत करें।

आज की युवाशक्ति के पास समय नहीं है। हर वक्त यहीं सुनने को मिलता है। आखिर वक्त कहां गया। हमारे बडे बुजुर्गो के समय भी दिन 24 घंटों का होता था और आज भी 24 घंटे का दिन होता हैं। फर्क इस बात का हैं कि पहले लोग न केवल अपने हित की बात सोचते थे, अपितु समाज व राष्ट्र के हित की बात सोचते थे और अपने दैनिक जीवन के तमाम काम बिना बाधा के निर्बाध रूप से करते थे।

मगर आज इंसान टीवी, मोबाइल, क्लबों व फैशन में मरा जा रहा हैं। आधुनिकता के नाम पर भौतिक सुख सुविधाओं के पीछे भाग रहा हैं। उसे अपने सुखों के अलावा किसी के सुखों की नहीं चिंता हैं। भौतिक सुख सुविधाओं को पाने हेतु वह अनैतिक गतिविधियों में लिप्त हो गया है। हर रोज भ्रष्टाचारियों को पकडा जा रहा हैं फिर भी उनकी गतिविधियों में कोई कमी नजर नहीं आ रही हैं। आज जब अपने ही पराये हो गये हैं तो हम रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंधों की क्या बात करें।

किसी महापुरुष ने बहुत ही सुन्दर बात कही है कि रोटी जब दोनों और से सिकी हुई होती हैं तभी वह अच्छी लगती हैं। ठीक उसी प्रकार रिश्ते दोनों और से निभाये जाये तभी वे अच्छे लगते हैं और संबंधों में प्रगाढ़ता आती हैं। तभी तो कहा गया है कि सभी के साथ मधुर संबंध बनाये रखना और उन्हें निभाना भी एक उत्तम कला हैं और जिसने इस कला को सीख लिया उसका जीवन धन्य हो गया।

हमारे बोल, कर्म और भाग्य

हमें यह मानव जीवन मिला हैं जिसे सद् कार्यो में लगाकर खुशहाल जीवन व्यतीत कीजिए। चूंकि यह मानव जीवन बार बार मिलने वाला नहीं हैं। इसे परोपकार के कार्यों में लगाइयें। ऐसे कृत्य कीजिए कि आपके नेक कर्मों से दूसरों के चेहरे पर मुस्कान छा जायें। अतः हमारे बोल, कर्म ऐसे होने चाहिए कि

वो हमारा भाग्य ही बदल दे और जीवन में खुशियां ही खुशियां भर दे।

अतः जीवन को खुशहाल बनाने के लिए सभी के साथ समान व्यवहार करे। किसी के साथ कटुता न रखें और न ही किसी को बुरा बोल बोले। कार्य सदैव ऐसे करे जिसकी सभी लोग सर्वत्र सराहना करे जब आपका व्यवहार मधुर होगा तभी जीवन की बगिया में अपार खूशियां छायेगी। जीवन का कोई भरोसा नहीं कब आंखें मुंद जाये। इसलिए जितने भी दिन जीने के मिले हैं उन्हें प्रेम के साथ बिताये। हम खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ ही जायेगे। बस हमारे कर्म ही हमारे साथ जायेगे। तब फिर बुरे कर्म कर जीवन को नर्कमय बनाये। मानव जीवन मिला है तो शान के साथ जीयें।

बिना अभिरुचि के जीवन बेकार

शिक्षा के साथ ही साथ हमारे जीवन में हॉबी का भी महत्वपूर्ण स्थान हैं। हमें शिक्षा के साथ ही साथ अपनी रूचि को भी निखारने का पूरा समय मिलना चाहिए अन्यथा हमारी रूचि समय के अभाव में यूं ही दम तोड देगी। समय मिलता नहीं है। हर कार्य के लिए समय हमें ही निकालना पडता है। बिना अभिरुचि के जीवन बेकार है। पहले ग्रीष्मकालीन अवकाश में अभिरुचि केन्द्र चला करते थे लेकिन आज एसी भी संस्थाएं है जो देश भर में अभिरुचि केन्द्र चलाने के लिए ऑनलाईन प्रशिक्षण दे रही है।

बच्चे व महिलाएं अपनी रूचि एवं अभिरुचि को हॉबी प्रशिक्षण शिविर में सृजनात्मक तरीके से आत्म विश्वास के साथ सीखकर अपनी जिन्दगी बेहतर बना सकती है। महिलाओं का सशक्तिकरण के बिना आर्थिकोपार्जन नहीं आ सकता। हॉबी क्लासेज सृजनात्मकता और आत्मविश्वास की पाठशाला है। ऐसे शिविरों के माध्यम से महिलाएं एवं बच्चे अपनी हॉबी को विकसित करते हुए उसे व्यवसायिक रूप देकर अपने परिवार के सपनों को साकार कर सकते हैं।

शिविर में महिलाएं व बालिकाएं मेहन्दी, कशीदाकारी, साफ्ट टायज, स्केटिंग, आर्यल पोस्टर पेंटिंग, पेचवर्क, डेकोरेटिव आइटम, सेल्फ डिफेन्स, आर्ट एण्ड काफ्ट, फोटोग्राफी, पत्रकारिता, सिलाई-बुनाई, बाईडिंग, मेहन्दी लगाना, कशीदाकारी, साफा बांधना, चित्रकारी, सौन्दर्य सामग्री बनाना, साज-सज्जा, साबुन, वाशिंग पाउडर बनाना, कम्प्यूटर शिक्षा, मांडना, पेकिंग, आचार बनाना, नाना प्रकार के व्यंजन बनाना, लकडी के खिलौने बनाना, बेकार की चीजों का कैसे इस्तेमाल करें, संगीत, नृत्य आदि कार्य सीखकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं।

सहनशीलता का अभाव

आज का इंसान में अनुशासन, सहनशीलता, धैर्य, सामंजस्य की भावना और आदर्श संस्कारों का नितांत अभाव दिखाई दे रहा है और छोटी-छोटी बातों से हताश व निराश होकर आत्महत्या कर रहे है जो समस्या का कोई समाधान नहीं है।

परीक्षा का पेपर बिगड़ जाना, कम अंक आना, घर परिवार के झगड़े, बार-बार नौकरी छूट जाना, बिमारी में पैसा लगना, आर्थिक संकट ये सब बातें जीवन में चलती ही रहती हैं। इन समस्माओं पर मिल बैठकर सलाह मशविरा कर समस्या का हल समय रहते निकाला जा सकता हैं और आत्मविश्वास को बढाना होगा।

आये दिन पत्र पत्रिकाओ व टीवी चैनलों पर यही पढ़ने व सुनने को मिल रहा है कि अमुक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली। आत्महत्या कायरता की निशानी है न कि बुध्दिमता। आत्महत्या करने वाले यह क्यों नहीं सोचते कि उनके इस कृत्य से परिजन पर क्या बितेगी। उन्हें कौन संभालेगा।

आत्महत्या के मामलों में बढोतरी का कोई एक कारण नहीं हैं अपितु इसके अनेक कारण है जिसके मूल में सहनशीलता का अभाव प्रमुख कारण है। संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है और एकांकी परिवार में समय पर सही मार्गदर्शन देने वाला नही है और व्यक्ति में इतनी सहनशीलता नहीं है कि वह संकट कि घडी में जरा धैर्य से काम ले। सोच विचार करे। दूसरों से मदद ले। लेकिन अंहकार में आकर या झूठी शान शौकत में पहले तो बिना सोचे समझे निर्णय ले लेते है और फिर विपदा आने पर उन्हें केवल आत्महत्या करना ही दिखता है जो कोई समस्या का समाधान नहीं हैं अपितु ऐसा करना कायरता ही कहा जा सकता हैं।

अतः जब तक यह जीवन हैं तब तक हंसते मुस्कुराते रहिए। घर परिवार में ठहाके गूंजते रहने चाहिए न कि हंगामा। जब भी कोई समस्या हो तो बातचीत के माध्यम से उसका हल निकाले। कोई भी समस्या ऐसी नहीं है कि जिसका कोई समाधान न हो। जहां समस्या होगी वहां समाधान अवश्य ही होगा। अतः धैर्य से काम लें व जल्दबाजी न करे।

हरित क्रांति से ड्रोन क्रांति तक भारतीय कृषि की बदलती तस्वीर

विभा कनन
कोयंबटूर तमिलनाडु

जहाँ एक ओर वे धरती को माता मानकर खेती करते हैं, वहीं दूसरी ओर ड्रोन, ऐप, AI और डेटा के सहारे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। इस पूरी यात्रा का सार यही है कि कृषि सिर्फ उत्पादन नहीं, बल्कि तकनीक, विज्ञान, नवाचार और सतत भविष्य का संगम है। हरित क्रांति ने हमें पेट भरना सिखाया, और ड्रोन क्रांति हमें फसल की सुरक्षा, गुणवत्ता और स्मार्ट कृषि का मार्ग दिखा रही है। भारतीय कृषि की यह बदलती तस्वीर आने वाले समय में न केवल किसान को समृद्ध बनाएगी, बल्कि देश को वैश्विक कृषि नेतृत्व की दिशा में भी ले जाएगी।

भारत की सभ्यता, संस्कृति और अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है। सदियों से भारतीय किसान धरती को माता और खेती को धर्म मानकर जीवन का संचालन करते आए हैं। तकनीक, विज्ञान और सामाजिक संरचना की बदलती परिस्थितियों के बावजूद कृषि का महत्व कभी कम नहीं हुआ। बल्कि समय के साथ इसमें व्यापक परिवर्तन हुए हैं- कभी आवश्यकताओं ने, कभी संकटों ने, तो कभी विज्ञान की नई उपलब्धियों ने खेती को एक नए आयाम तक पहुँचाया है।

भारत की कृषि यात्रा को यदि किसी दो बड़े चरणों में विभाजित किया जाए तो पहला चरण हरित क्रांति का है और दूसरा वर्तमान समय की ड्रोन क्रांति का। इन दोनों ने न केवल खेती की तकनीक बदली, बल्कि किसान की सोच, क्षमता, उत्पादकता और बाजार तक पहुँच को भी गहराई से प्रभावित किया। यह आलेख इसी परिवर्तनशील यात्रा का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

भारतीय कृषि : परंपरा और विज्ञान का संगम

स्वतंत्रता के शुरुआती वर्षों में भारत

खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भर था। जनसंख्या तेजी से बढ़ रही थी लेकिन उत्पादन सीमित था। पारंपरिक बैल-आधारित कृषि, वर्षा पर निर्भरता और कम गुणवत्ता वाले बीज किसानों को आगे बढ़ने नहीं दे रहे थे। यही वह दौर था जब देश को कृषि में बड़े परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हुई।

परंपरागत तरीकों में मेहनत तो अधिक थी लेकिन उत्पादकता आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं थी। खेती अधिकतर स्वावलंबन के लिए ही होती थी, बाजार उन्मुख नहीं। इन चुनौतियों ने आने वाले समय में एक बड़े मोड़ की नींव रखी- हरित क्रांति की।

हरित क्रांति : भारतीय कृषि की पहली तकनीकी क्रांति

हरित क्रांति का उद्भव

1960 के दशक में खाद्यान्न-संकट ने देश को हिला दिया था। इस समय कृषि वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन, नॉर्मन बोरलॉग और कई संस्थाओं के प्रयासों से हाई यील्डिंग वैरायटी (HYV) बीज, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, सिंचाई परियोजनाओं और वैज्ञानिक कृषि तकनीकों का समावेश हुआ।

हरित क्रांति की उपलब्धियाँ

हरित क्रांति ने देश की खाद्यान्न स्थिति को बदलकर रख दिया गेहूँ और चावल का उत्पादन कई गुना बढ़ा। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश खाद्यान्न भंडार कहलाने लगे। देश खाद्यान्न आयातक से निर्यातक बनने की दिशा में बढ़ा। किसान की आर्थिक स्थिति में सुधार आया। खाद्य सुरक्षा की मजबूत नींव पड़ी। हरित क्रांति ने किसानों को पहली बार यह विश्वास दिया कि विज्ञान का साथ लेकर वे अपनी किस्मत बदल सकते हैं।

हरित क्रांति की चुनौतियाँ

जहाँ एक ओर हरित क्रांति ने बहुत सी उपलब्धियाँ दीं, वहीं दूसरी ओर कुछ गंभीर समस्याएँ भी सामने आईं-

- उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की सेहत खराब होने लगी।
- ट्यूबवेल आधारित अत्यधिक सिंचाई से भू-जल स्तर गिरा।
- फसल-चक्र सीमित होने से जैव विविधता कम हुई।
- लागत बढ़ी और छोटे किसानों पर आर्थिक बोझ बढ़ता गया।

इन चुनौतियों ने संकेत दे दिया कि केवल अधिक उत्पादन ही असली समाधान नहीं- सतत, सुरक्षित और तकनीक-सक्षम कृषि समय की आवश्यकता है।

तकनीकी युग की शुरुआतः डिजिटल और मैकेनाइजेशन क्रांति

1990 के दशक के बाद स्थिति बदलने लगी। बाजार खुला, मशीनें सस्ती हुईं और विज्ञान तेजी से खेती में प्रवेश करने लगा। ट्रैक्टर, हैरो, रीपर, थ्रेशर, कंबाइन हार्वेस्टर जैसी मशीनों ने कृषि को तेज और श्रम-कम बनाया।

इसी समय इंटरनेट और मोबाइल फोन ने किसानों को जानकारी का नया संसार दिया-

मौसम पूर्वानुमान

मूल्य जानकारी

फसल सलाह

सरकारी योजनाएँ

ऑनलाइन प्रशिक्षण

यह डिजिटल संपर्क आगे चलकर कृषि में एक बड़ी क्रांति का आधार बना।

स्मार्ट कृषि की ओर कदम : प्रिसिशन फार्मिंग

जब कृषि मशीनरी और डिजिटल साधन मिलकर काम करने लगे, तब जन्म हुआ प्रिसिशन फार्मिंग यानी सटीक खेती का। इसमें- सेंसर, GPS आधारित उपकरण, मिट्टी परीक्षण,स्वचालित सिंचाई मोबाइल एप्स के माध्यम से किसान फसल की ज़रूरत के अनुसार सही मात्रा में पानी, उर्वरक और दवाइयों का उपयोग करने लगा। इससे उत्पादन बढ़ा और लागत घटी। अब खेती अनुभव आधारित नहीं, बल्कि डेटा आधारित होने लगी। यही परिवर्तन आगे जाकर ड्रोन क्रांति का आधार बना।

ड्रोन क्रांति : भारतीय कृषि का उज्जवल भविष्य

आज भारतीय कृषि जिस बड़े परिवर्तन से गुजर रही है, वह है ड्रोन तकनीक का आगमन। इसे ही सही अर्थों में 'ड्रोन क्रांति' कहा जा सकता है। ड्रोन खेती को वैज्ञानिक, सुरक्षित, तेज़ और अधिक उत्पादक बनाने की क्षमता रखते हैं।

कृषि के क्षेत्र में ड्रोन की आवश्यकता क्यों?

खेतों का आकार छोटा लेकिन संख्या अधिक मजदूरों की कमी, लागत में भारी वृद्धि

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियाँ

कीटनाशक छिड़काव के दौरान स्वास्थ्य जोखिम सटीक, समान और तेज़ कार्य निष्पादन की ज़रूरत ड्रोन इन सभी समस्याओं को हल करने के सक्षम हैं।

ड्रोन क्या-क्या कर सकते हैं?

स्प्रेइंग (कीटनाशक और उर्वरक छिड़काव)

ड्रोन 10–20 लीटर टैंक के साथ 10 मिनट में 4–6 एकड़ तक का छिड़काव कर देते हैं।

दवाइयों की बचत

समान छिड़काव

किसान को रसायनों से सुरक्षा

फसल स्वास्थ्य की मैपिंग

ड्रोन NDVI और मल्टीस्पेक्ट्रल कैमरों की सहायता से- फसल की बीमारी,जल की कमी,पोषण की स्थिति का सटीक मूल्यांकन करते हैं, जिससे सही समय पर सही उपचार हो सके।

भूमि सर्वेक्षण

खेत की सीमा, जलभराव, मिट्टी की विविधता आदि को ड्रोन कुछ मिनटों में माप लेते हैं।

बीज या ग्रेन्युलर उर्वरक का छिड़काव

घास वाले खेत या दुर्गम क्षेत्रों में ड्रोन बीज बिखराव में अत्यंत उपयोगी हैं।

ड्रोन से होने वाले लाभ

समय की बचत

जहाँ एक किसान को पूरा दिन लगता है, ड्रोन कुछ मिनटों में काम कर देता है।

लागत में कटौती

दवा, पानी और श्रम की खपत कम होकर 20–40% तक की बचत हो सकती है।

स्वास्थ्य की सुरक्षा

किसान सीधे दवाइयों के संपर्क में नहीं आता।

उत्पादकता में वृद्धि

सटीक और समय पर स्प्रे से फसल की गुणवत्ता बढ़ती है।

किसानों के लिए एफपीओ आधारित सेवाएँ कई राज्यों में ड्रोन कस्टम हायरिंग सेंटर बनाए जा रहे हैं ताकि किसान किराये पर ड्रोन सेवाएँ ले सकें।

डिजिटल प्लेटफॉर्म, AI और बिग डेटा : खेती का नया चेहरा

ड्रोन क्रांति, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और डिजिटल कृषि एक-दूसरे के पूरक हैं।

AI आधारित सिफारिशें

ड्रोन-चित्रों से प्राप्त डेटा AI को यह बताने में सक्षम बनाते हैं-

कहाँ बीमारी है

कहाँ कितना उर्वरक देना है

कहाँ पानी अधिक है या कम

मौसम आधारित पूर्वानुमान

AI मॉडल भविष्यवाणी करते हैं, जिससे किसान जोखिम घटा सकते हैं।

उपज का अनुमान

डिजिटल विश्लेषण से सरकार और किसानों को बाजार रणनीति बनाने में मदद मिलती है।

पहलें और नीति समर्थन

भारत सरकार ने कृषि ड्रोन को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं—

- ड्रोन खरीद पर अनुदान
- किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को आर्थिक सहायता
- 1000 से अधिक कृषि ड्रोन ट्रेनिंग सेंटर
- 'कृषि ड्रोन उड़ान' अभियान
- PMFBY और डिजिटल कृषि मिशन के तहत डेटा-सक्षम खेती
- नीति-समर्थन के कारण इस उद्योग में तेजी से निवेश बढ़ रहा है।

सामाजिक और आर्थिक बदलाव

ड्रोन क्रांति का प्रभाव केवल तकनीक तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर ग्रामीण समाज और अर्थव्यवस्था पर भी व्यापक रूप से देखा जा रहा है।

युवाओं के लिए नए रोजगार

ड्रोन पायलट

डेटा विश्लेषक

ड्रोन मरम्मत तकनीशियन

डिजिटल कृषि सलाहकार

महिलाओं के लिए अवसर

ड्रोन संचालन में भारी श्रम की आवश्यकता नहीं, इसलिए महिलाएँ भी इसे आसानी से सीख रही हैं।

ग्रामीण स्टार्टअप्स का विकास

कस्टम हायरिंग मॉडल पर कई स्टार्टअप तेजी से उभर रहे हैं।

चुनौतियाँ : अभी भी क्या सुधार आवश्यक है?

ड्रोन तकनीक के बावजूद कुछ चुनौतियाँ बरकरार हैं-

लागत : खरीद मूल्य अभी भी कई किसानों के लिए ऊँचा है।

प्रशिक्षण की आवश्यकता : ड्रोन को सुरक्षित उड़ाने और डेटा समझने के लिए विशेष प्रशिक्षण जरूरी है।

इंटरनेट और बिजली की उपलब्धताः ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल ढाँचा मजबूत होना आवश्यक है।

विनियमनः ड्रोन उड़ान के लिए लाइसेंस और अनुमति की प्रक्रिया सरल और किसान-मित्र होनी चाहिए।

भविष्य की दिशा : स्मार्ट, सतत् और स्वचालित कृषि

आगामी वर्षों में भारत की खेती निम्न क्षेत्रों में और अधिक प्रगति करेगी-

पूर्णतः स्वचालित फार्म :रोबोटिक मशीनें, AI आधारित सिंचाई और ड्रोन का संयुक्त उपयोग।

कार्बन-न्यूट्रल और जैविक खेतीः ड्रोन आधारित सटीक खेती रसायनों के प्रयोग को घटाएगी।

क्लाइमेट-स्मार्ट फार्मिंगः मौसम परिवर्तन से निपटने में डिजिटल उपकरण भूमिका निभाएँगे।

उपज वृद्धि और वैश्विक प्रतिस्पर्धाः भारतीय कृषि अंतरराष्ट्रीय बाजार में और मजबूत होगी।

परंपरा से तकनीक तक अविरल यात्रा

हरित क्रांति ने भारतीय कृषि को खाद्यान्न-संकट से बाहर निकालकर आत्मनिर्भर बनाया। आज ड्रोन क्रांति उसी यात्रा को आगे बढ़ाते हुए कृषि को 21वीं सदी की विज्ञान-संचालित, सटीक और टिकाऊ प्रणाली में बदल रही है।

भारतीय किसान परंपरा और आधुनिकता दोनों के प्रतीक हैं

जहाँ एक ओर वे धरती को माता मानकर खेती करते हैं, वहीं दूसरी ओर ड्रोन, ऐप, AI और डेटा के सहारे भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

इस पूरी यात्रा का सार यही है कि कृषि सिर्फ उत्पादन नहीं, बल्कि तकनीक, विज्ञान, नवाचार और सतत भविष्य का संगम है। हरित क्रांति ने हमें पेट भरना सिखाया, और ड्रोन क्रांति हमें फसल की सुरक्षा, गुणवत्ता और स्मार्ट कृषि का मार्ग दिखा रही है।

भारतीय कृषि की यह बदलती तस्वीर आने वाले समय में न केवल किसान को समृद्ध बनाएगी, बल्कि देश को वैश्विक कृषि नेतृत्व की दिशा में भी ले जाएगी।

बाग़वानी द्वारा भी संभव है विभिन्न व्याधियों का उपचार

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा,दिल्ली

प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत होना स्वाभाविक है अतः हम प्रकृति का सान्निध्य पाने के लिए सदैव तत्पर एवं उद्यत रहते हैं और यदि बाग़बानी के रूप में इस प्राकृतिक सौंदर्य का निर्माण हम स्वयं करते हैं तो हमें अद्वितीय आनंद की प्राप्ति होती है। यदि हम अपने रहने के कमरे में बनावटी पौधों की जगह वास्तविक पौधे रखते हैं हमारे पूरे परिवार के स्वास्थ्य और चिंतन पर इसका अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे हमें न केवल प्राकृतिक परिवेश मिलता है अपितु ऑक्सीजन के रूप में अधिकाधिक मात्रा में जीवनदायिनी ऊर्जा भी प्राप्त होती है।

जिस प्रकार वसंत के आगमन के साथ ही चारों तरफ रंग-बिरंगे फूलों की बहार आ जाती है और नंग-धड़ंग हो गए पेड़ों के कठोर जिस्म भी कोमल-कमनीय पत्तियों का लिबास धारण कर लेते हैं उसी प्रकार वर्षा ऋतु के आगमन के साथ भी चारों ओर हरियाली फैल जाती है। खेत-खलिहान, बाग़-बग़ीचे और वन-उपवन ही नहीं, नगर-महानगर तक सब हरे-भरे और आकर्षक दिखने लग पड़ते हैं। लोग उद्यानों व बाग़-बग़ीचों की सैर को उतावले हो उठते हैं। वर्षा ऋतु का सम्मोहन लोगों के सर पर चढ़कर बोलने लगता है। ऐसे में मनुष्य स्वयं एक नई ऊर्जा से अनुप्राणित होकर कुछ नया, कुछ विचित्र करने की दिशा में अग्रसर हो तो कैसा आश्चर्य?

लेकिन क्या कारण है इस परिवर्तन का? इस परिवर्तन का कारण है पेड़-पौधों के माध्यम से प्रकृति का स्पर्श। विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, वनस्पतियों, साग-सब्ज़ियों तथा फल-फूलों को देखना अथवा स्पर्श करना आनंद प्रदान करता है। इसीलिए बाग़बानी, पुष्पोत्पादन, फलोत्पादन अथवा सब्ज़ियों आदि की खेती करना न केवल एक अच्छी हॉबी या शौक़ है अपितु एक उपचारक पद्धति भी है। प्रकृति अथवा पेड़-पौधों का सामीप्य न केवल पर्यावरण प्रदूषण को सोखकर हमें स्वच्छ परिवेश उपलब्ध कराता है अपितु हमारे तनाव, दुष्चिंता, क्रोध और कुंठा जैसे नकारात्मक मनोभावों को अपने में सोखकर हमें सकारात्मक ऊर्जा तथा मनोभावों से ओतप्रोत कर देता है। और यदि ये कार्य स्वयं अपने हाथों से संपन्न किए जाएँ तो उनका तो स्वास्थ्य पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है।

पौधों को उगाना, उनकी देखभाल करना और उनकी पैदावार से लाभ कमाना एक व्यवसाय हो सकता है लेकिन यह एक रचनात्मक कार्य भी है विशेष रूप से शौक़िया बाग़बानी या गमलों में पौधे उगाना। रचनात्मक कार्य से न केवल हमारे ऊर्जा के स्तर में वृद्धि होती है बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हमारी क्षमता और कार्य कुशलता में वृद्धि होती है। जब हताशा हावी हो जाए, निराशा से नींद न आए और अवसाद का अंत न हो तो ऐसे में शरीर के तने हुए तंतुओं को तनावरहित करने के लिए तथा मन-मस्तिष्क को शांत करने एवं

संयत रखने के लिए मनश्चिकित्सक अब खेती-बाड़ी और बाग़बानी करने का परामर्श देते हैं। बाग़बानी में व्यस्त रहने वाले व्यक्ति प्रायः दुर्व्यसनों से भी बचे रहते हैं जो उनके स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक होता है। इससे उनकी दिनचर्या भी अपेक्षाकृत अधिक व्यवस्थित रहती है।

ऑक्यूपेशनल थैरेपी या व्यायसायिक चिकित्सा में सिलाई-कढ़ाई, टोकरी बुनना, दरी-कालीन बुनना, मिट्टी अथवा धातु से मूर्तियाँ बनाना, लकड़ी, बाँस अथवा बेंत का सामान बनाना या चित्रकला आदि सहायक होते हैं लेकिन बाग़बानी इन सबमें महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें हमारी रचनात्मकता के स्तर में वृद्धि के साथ-साथ प्रकृति से भी हमारा जुड़ाव हो जाता है। बीजों से अंकुर निकलना, कलमों की गाँठों से पत्तियाँ विकसित होना, पौधों का बढ़ना, निरंतर नई-नई पत्तियों का आना और उनके रंगों में परिवर्तन होना, कलियों का दृष्टिगोचर होना तथा फूलों का खिलना ये सब ऐसी क्रियाएँ हैं जिनका अवलोकन हमें प्रकृति से जोड़ कर हममें एक नई स्फूर्ति, एक नई चेतना भर देता है।

सर्दियों में पत्र-पुष्पविहीन कोई ठूँठ-सा लगने वाला पौधा जब वसंत ऋतु का स्पर्श पाकर गाँठ दर गाँठ फूटने लगता है, पल्लवित-पुष्पित होकर अपनी छटा बिखेरने लगता है तो उसे देख कर हमारा मन भी पल्लवित-पुष्पित होने लगता है। हमारी कल्पनाशीलता का विकास होता है तथा रचनात्मकता के स्तर में वृद्धि होती है। मन प्रसन्न होने लगता है। मन प्रसन्न हो तो तन के प्रसन्न अर्थात् स्वस्थ होने में देर नहीं लगती। प्रकृति अपने नए-नए रूपों में प्रकट होने लगती है। प्रकृति की इस अनुपम रचनात्मकता को देखकर हम स्वयं रचनात्मक होने लगते हैं, एक कलाकार बन जाते हैं और पुनः दुगने वेग से पौधों की देखभाल में जुट जाते हैं। मैंने अपने जीवन में जो पहली कविता लिखी थी वह पौधों की देखभाल के दौरान ही निःसृत हुई थी।

पौधों की देखभाल, कटाई-छँटाई उचित मात्रा में खाद-पानी देना, उनको सलीक़े से रखना तथा सजाना-सँवारना हमारे स्वंय के अंदर एक सुव्यवस्था को उत्पन्न कर देता है। हम अपने जीवन में अधिकाधिक व्यवस्थित होने लगते हैं और इस सब का हमारे स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पौधों की कटाई-छँटाई अथवा प्रूनिंग और उसके बाद नई-नई कोंपलों का विकसित होना इस बात का प्रतीक है कि हम अपने मन में समाए नकारात्मक तथा अनुपयोगी विचारों से मुक्त होकर उनके स्थान पर उपयोगी सकारात्मक विचारों को ग्रहण करने के लिए तत्पर हैं। योग में वर्णित यम ओर नियम की तरह जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए यह अनिवार्य है।

प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत होना स्वाभाविक है अतः हम प्रकृति का सान्निध्य पाने के लिए सदैव तत्पर एवं उद्यत रहते हैं और यदि बाग़बानी के रूप में इस प्राकृतिक सौंदर्य का निर्माण हम स्वयं करते हैं तो हमें अद्वितीय आनंद की प्राप्ति होती है। यदि हम अपने रहने के कमरे में बनावटी पौधों की जगह वास्तविक पौधे रखते हैं हमारे पूरे परिवार के स्वास्थ्य और चिंतन पर इसका अत्यंत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे हमें न केवल प्राकृतिक परिवेश मिलता है अपितु ऑक्सीजन के रूप में अधिकाधिक मात्रा में जीवनदायिनी ऊर्जा भी प्राप्त होती है। हमारी प्राणदायिनी शक्ति अथवा ऊर्जा के स्तर में वृद्धि का सीधा सा तात्पर्य है हमारा अधिकाधिक स्वस्थ तथा उत्साहपूर्ण होना। फूलों के रंग और उनकी ख़ुशबू हमें न केवल अच्छे लगते हैं अपितु फूलों की गंध के कारण शरीर में प्रसन्नता बढ़ाने वाले रसायनों का उत्सर्जन भी होता है जिससे हमारी प्रसन्नता के स्तर में वृद्धि होती है और प्रसन्नता स्वास्थ्यवर्धक होती है।

पेड़-पौधों द्वारा मनोरोगों का उपचार करने के लिए अमेरिका में इस क्षेत्र में कई शोध कार्य किए गए हैं। अमरीकन हॉर्टीकल्चर थैरेपी एसोसिएशन नामक समिति ने अपने प्रयोगों और शोधकार्यों के आधार पर दावा किया है कि मिट्टी की मनभावन महक भी मन-मस्तिष्क एवं स्नायुतंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। जंगली खर-पतवार की कटाई-छँटाई से अवसाद कम होता है और गहन हरीतिमा तथा प्रतिदिन बढ़ते पेड़-पौधे निराशा को दूर कर जीवन के प्रति आशा तथा उत्साह का संचार करने में पूरी तरह सक्षम होते हैं। प्रकृति के सान्निध्य से लाभांवित होकर अद्वितीय आनंद की प्राप्ति करने तथा पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं उत्साहित बने रहने के लिए आज ही बाग़बानी को अपनी जीवन शैली का अनिवार्य अंग बना लीजिए।

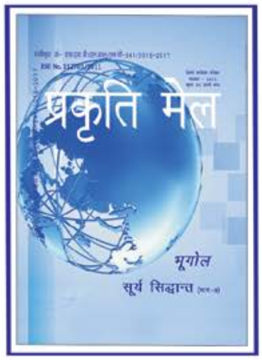

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका

(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- प्रकृति मृदा और बीज दोनों को एक दूसरे के अनुकूल उत्पन्न कर मृदा और बीज दोनों को सिद्धांत करती है।

- जो स्वतः हो रहा है, उससे गुजर जाना ही कर्म है जिसका निर्माण उत्पत्ति से पूर्व आत्मिक बीज के परतीय विज्ञान के गंध रूप में मौजूद होता है जब उसका समय आता है तो सक्रिय होकर अपने गंधीय विज्ञान के चुंबकत्व से तत्व पदार्थ का मिलान कर अपने कर्म को पूर्ण करता है।

- प्रकृति की गतिमान अवस्था विषय को पूर्ण करने की क्रिया है।

- स्वास्थ्य परिवर्तन अपने गतिमान जीवन में प्रतिरोध उत्पन्न करने का प्रतिबल है जिससे गुजर जाने के बाद प्रतिरोध का प्रतिरोध को विफल कर देने का विज्ञान बन जाता है।

- प्रकृति गतिमान अवस्था है जो सबको गतिमान करती है।

- कुछ सीखना नहीं है जो सीखा है उसे भूल जाना है तभी अपना सच हकीकत बनकर एहसास की अभिव्यक्ति में सामने आएगा।

- प्रकृति पद का भार नहीं पदार्थ की भारमुक्त अवस्था है।

- जीवन का हर कदम एक रासायनिक मिलान है जो खुद अगले कदम पर पहुंचा देता है जो हर विषय पर अपनी नजर से एक भाव बनाकर आगे बढ़ा देता है बाकी राही बनकर राह खोजना मानसिक संघर्ष है।

- देखना प्रकृति की नियत है पर वही देखती है जो उसे देखना है।

- जीवन प्रकृति का नियंत्रण नहीं बल्कि स्व को पूर्ण कर देने का स्व रसायन योग है जिसमें एहसास स्व गुणात्मक है पर इसमें बनने वाला पदार्थ प्रकृति है जो एक गुण का इकलौता कण होता है।

- वायुमंडल में समस्त गुण विद्यमान होते हैं यदि प्राणी अपनी इच्छाओं का भोग करना बंद कर दे तो साँस के माध्यम से ही उसके भोजन की पूर्ति होती रहेगी उसे अलग से कुछ खाने की जरूरत नहीं हैं।

- फल तो अटल है विज्ञान है उसे कोई रोक नहीं सकता, हर कर्म का फल मिलता है जो आपके कर्म की आधिकारिक पुष्टि करता है।

- मानव एक पूर्ण जीव है इसे वाहय जगत से कुछ भी लेने की जरूरत नहीं है उसके अंदर ही समस्त जीवन जीने की जरूरी चीजें स्थापित होती है।

सूर्य सिद्धांत भाग - 8

सूर्य + सृजन = सिद्धान्त

सूर्य कण पहले अपनी अवस्था सिद्धांत कर एक गुणीय प्रकाश में सिद्ध होकर फिर जिस मृदा बीजत्व को सिद्धांत करने के लिए उसमें जाता है उसकी अवस्था में परिवर्तन होकर उसके गुण को सिद्धांत कर देता है।

अशोक मानव

सूर्य से सृजन और सृजन से सूर्य सिद्धान्त पूर्ण होता है। सूर्य का सिद्धान्त है सृजन और सृजन हेतु जैविक संरचना जो उद्देश्य पूर्ति हेतु समय विशेष के लिए होती है। उस उद्देश्य को सिद्ध कर उसका अंत करना सूर्य सिद्धान्त है। इसका उद्देश्य स्थायी निर्माण के लिए होता है जो अनन्तीय बन जाता है जिसका अन्त फिर कभी नहीं होता है, जिसमें मृदा रूपी पदार्थ तत्व और ईंधन रूपी सत् गन्ध जो प्रकाश से बनता है और प्रकाश के लिए ईंधन बनाता है यही सिद्धान्त सृजन कर स्थायी निर्माण करता है जिससे सृजन सदैव होता रहता है। इसी सृजन के लिए दिन रात की आवश्यकता होती है, जो जीवन और मृत्यु से परिभाषित होती है। जीवन सृजन है तो मृत्यु उसका स्थायी निर्माण। दिन ब्रह्माण्ड की अवस्था को गतिमान करता है तो रात अपनी अवस्था को गतिमान करती है। दोनों सृजन की आवश्यकता है। दिन बाहय जगत में विचरण के जिए होता है तो रात आन्तरिक जगत में विचरण के लिए होती है। आन्तरिक जगत में विचरण से व्यक्तित्व का विकास होता है और बाहय जगत में विचरण करने से जहाँ हम विचरण करते हैं हमारी ऊर्जा से उसका विकास होता है। विकास प्रणाली स्वइच्छा से बनाये गये गुणों के भाव के अनुसार होती है। इसी प्रकार जीव सृजन का विस्तार कर स्थायी निर्माण की प्रक्रिया को पूरा करता है जो सूर्य सिद्धान्त का परिणाम है।

सिद्धान्त अर्थात सिद्ध कर उसका अन्त करना। अन्त अवस्था का होता है, छूटे हुए पदार्थ का नहीं। पदार्थ का स्वरूप परिवर्तन होता है जो परिपक्व होने के लिए परिवर्तित होता है और परिपक्व होने के बाद स्थायी पदार्थ बन जाता है। यह क्रिया प्रकृति विस्तार में रंग बिरंगे जीव की उत्पत्ति के लिए होती है जो प्रकाश द्वारा बनी गन्ध के गन्धीय मिलान से पूरा होता है, गन्धीय मिलान कच्चे पक्के पदार्थ से पूरा होता है, पदार्थ मिलान में जो पदार्थ कच्चा रह जाता है, वह प्रदूषित होकर

सृजन में व्यवधान न उत्पन्न करे इसलिए गन्धीय मिलान से उसमें नयी जीव की उत्पत्ति हो जाती है। वह जीव उस गन्दगी को खाकर स्थायी पदार्थ बनाने हेतु पदार्थ छोड़ जाता है उसमें भी जो परिपक्व पदार्थ बन जाता है उसमें भी स्थायी पदार्थ निर्माण हेतु जीव की उत्पत्ति हो जाती है। पदार्थ से पदार्थ में परिवर्तन करने हेतु भी सूक्ष्म जीव का विकास हो जाता है जो पदार्थ में परिवर्तन कर स्थायी पदार्थ निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता रहता है। यही प्रक्रिया सूर्य सिद्धान्त है जो अपरिपक्व पदार्थ को परिपक्व बनाकर स्थायी पदार्थ बनाने के लिए एक छोटा सा उद्देश्य लेकर प्रकाश स्वंय

मनुष्य तो आन्तरिक पुस्तिका को जानता ही नहीं बाहय पुस्तिका में अपना मार्ग खोज रहा है जो उसकी आन्तरिक पुस्तिका में निहित है। और समय समय पर परिस्थिति बनकर मार्ग दिखाने का प्रयास करती है ये तो परिस्थिति को बाधा समझ कर उसका भी हल बाहय पुस्तिका में खोज रहा है। यह प्रकृति का कितना विकलांग प्राणि हो गया है जो दैनिक दिनचर्या कैसे करे, जो शुभ हो इसके लिए गुरू और भगवान खोज रहा है।

जीव रूप धारण कर उस गन्दगी को खाकर स्थायी पदार्थ बनाने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता रहता है, जिसमें प्रदुषण न उत्पन्न हो और सृजन गतिमान रहकर स्थायी पदार्थ को आगे बढ़ाता रहे। स्थायी पदार्थ निर्माण हेतु सूर्य प्रकाश उद्देश्य और समय निर्धारित कर जीव रूप धारण कर उद्देश्य पूरा होने के बाद उसका अन्त कर पदार्थ छोड़कर प्रकाश को सूर्य में विलीन कर लेता है। इसी प्रक्रिया में गुण गन्ध का निर्माण हो जाता है जो प्रकाश के लिए ईंधन का भी कार्य करता है जो सत् अंश बन जाता है जिसका परिवर्तन न किया जा सके वह स्थायी ईंधन बन जाता है। इस प्रक्रिया को पूरा करने वाला प्रकाश जो हर जीव में विद्यमान है वही भगवान है जो रसमलाई भी खा रहा है, गन्दगी भी खा रहा है, उसके लिए तो सब रसमलाई है। पर इसी प्रक्रिया में शासन करने और पीड़ा पहुँचाने की प्रवृत्ति जब जीव अहंकार से उत्पन्न हो जाती है वही शैतान है, पर जीव की संरचना सृजन रूपी प्रकाश से ही होती है।

अहंकार से उत्पन्न पीड़ादायक राक्षसी दुर्गन्ध कच्चे पदार्थ के साथ जुड़कर स्थायी पदार्थ न बनकर धुआँ बनाने लगता है। राक्षसी प्रवृत्ति की उत्पत्ति मनुष्य द्वारा अपनी आवश्यकता पूर्ति हेतु आध्यात्मिक, वैज्ञानिक शोध से उत्पन्न हो गयी जो पूर्ण विस्तार के साथ अपना फैलाव कर चुकी है।

जीव की उत्पत्ति सूर्य सिद्धान्त का परिणाम है जो एक उद्देश्य पूर्ति के लिए होता है। जिसे सभी जीव प्रकृति के अनुसार चलते हुए अधिक समय अपने अन्तःकरण में विचरण करके पूरा करते हैं, ये अपने उद्देश्य के प्रति सूर्य सिद्धान्त की तरह अटल होते हैं जिसके कारण जिसे खत्म करने और जिसे बनाने के लिए आते हैं और उसे पूरा कर जाते हैं। ये एसा इसलिए कर पाते हैं क्योंकि ये बाहय पुस्तिका नहीं पढ़ते, आन्तरिक पुस्तिका पढ़ते हैं। यदि बाहय जगत को पढ़ना होता है तो अपनी आन्तरिक पुस्तिका में पढ़ते हैं। जिस कारण से ये मार्ग से विचलित नहीं हो पाते हैं और अपना उद्देश्य पूरा कर स्थायी पदार्थ बनाने हेतु पदार्थ छोड़ जाते हैं। मनुष्य तो आन्तरिक पुस्तिका को जानता ही नहीं बाहय पुस्तिका में अपना मार्ग खोज रहा है जो उसकी आन्तरिक पुस्तिका में निहित है। और समय समय पर परिस्थिति बनकर मार्ग दिखाने का प्रयास करती है ये तो परिस्थिति को बाधा समझ कर उसका भी हल बाहय पुस्तिका में खोज रहा है। यह प्रकृति का कितना विकलांग प्राणि हो गया है जो दैनिक दिनचर्या कैसे करे, जो शुभ हो इसके लिए गुरू और भगवान खोज रहा है। जिसे व्यवसायिक गुरू भगवान भी मिल जा रहे जो रास्ता तो नहीं दिखा रहे है, भटका और दे रहे हैं। रास्ता दिखाने वाला भगवान अपने अन्दर प्रकाश रूप में होता है जिसे मन कहते हैं पर यह तभी सही मार्ग दिखाता है जब हम अपने अन्तःकरण में विचरण करते हुए अपनी आन्तरिक पुस्तिका पढ़ना सीख जाते हैं।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न – आध्यात्मिक विज्ञान क्या है ? इसका सृजन कैसे होता है ?

उत्तर – सूर्य प्रकाश जब जल पर पड़ता है तो उष्मा बनती है जिसकी रासायनिक क्रिया रसायन का निर्माण करती है। इसी रसायन पर जब प्रकाश पड़ता है तो पुनः रासायनिक क्रिया होती है जो एहसास की अवस्था बनाती है जिससे गंध का निर्माण होता है। इसी गंध में गुण का विज्ञान निहित होता है यही विज्ञान की सूक्ष्म अवस्था अध्यात्मिक विज्ञान कहलाती है।

प्रश्न – मानवता क्या है ?

उत्तर – जैसा हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं वैसी सोच और व्यवहार दूसरों के लिए बनाना ही मानवता है।

प्रश्न – भाव क्या है ? यह किस तरह बनता है ?

उत्तर – सारे जीवों की प्रवृत्ति एक जैसी होती है। मनुष्य को छोड़कर सभी जीव अपनी प्रवृत्ति के अनुसार आहार करते हैं उसी से उनके अंदर रंग का निर्माण होता है अऔर रंग से निकलने वाली गुण तरंग ही वायुमंडल में भाव बनकर क्रिया करती है।

प्रश्न – पदार्थ किस प्रकार से सिद्धांत होते हैं ?

उत्तर – सूय प्रकाश की यात्रा पदार्थ के गुण को सक्रिय करती है जो पदार्थ जिस गुण का होता है उस गुण के रसायन में परिवर्तित होकर विज्ञान बनकर जीव के रूप में परिवर्तित होकर अपने रसायन को अनेकों रसायनों से मिलान कर प्रदूषण मुक्त करने के लिए सिद्धांत करता है। यह अवसर अनेकों बार मिलता है। इस सिद्धांत अवस्था में जो रसायन को शोषण की इच्छा खत्म कर लेता है वह अपने गुण का विज्ञान बनकर अनंत यात्री के तत्व में परिवर्तित होकर प्रकृति बन जाता है और जिसमें शोषण करने की इच्छा खत्म नहीं होती वह रसायन भी सिद्धांत होकर अनंत यात्रा से वंचित रह जाता है और स्वतः रसायनिक मिलान करते हुए विस्फोट करते हुए अपना अंत कर जाता है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

राष्ट्र गीत के 150 वर्ष पूर्ति पर स्मरणोत्सव

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

"वंदे मातरम्" – यह केवल दो शब्दों का नारा नहीं, अपितु एक ऐसी दिव्य ध्वनि है, जिसने भारत के स्वाधीनता संग्राम में करोड़ों देशभक्तों के हृदय में देशप्रेम की ज्वाला जलाई। यह गीत उस युग की पहचान बना, जब भारत अंग्रेजी हुकूमत की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम और त्याग की भावना का संचार करने वाला यह गीत भारतीय राष्ट्रवाद का प्रथम घोष बना। आज स्वतंत्रता के दशकों बाद भी "वंदे मातरम्" भारतीय एकता, गौरव और आत्मबल का प्रेरक प्रतीक है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने (7 नवंबर 2025) को एक स्मरणोत्सव के रूप में वर्ष भर मनाने का निर्णय लिया है। यह उनके सरकार की राष्ट्रीयता के प्रति विशेष अनुराग, गहरी दृष्टि एवं दूरगामी सोच को प्रकट करती है। उन्होंने बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित कालजयी गीत 'वंदे मातरम्' से संबंधित उत्सव का उद्घाटन करते हुए स्मारक डाक टिकट और सिक्का जारी किया है, साथ ही एक विशेष वेबसाइट लांच की। अपने भाषण में उन्होंने वंदेमातरम् को एक मंत्र, एक संकल्प, एक साधना, एक आराधना आदि बताते हुए वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता बताते हुए कहा कि यह विकसित भारत के सपने को पूरा करने की प्रेरणा देने वाला है।

स्मरणोत्सव का प्रथम चरण 7 से 14 नवंबर, 2025 तक, द्वितीय चरण अगले वर्ष 19 से 26 जनवरी, तृतीय चरण 7 से 15 अगस्त और चतुर्थ चरण पहली से 7 नवंबर 2026 तक आयोजित किया जाएगा।

वंदे मातरम् की रचना और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

"वंदे मातरम्" की रचना बंगाली उपन्यासकार एवं कवि बंकिम चंद्र चटर्जी (जन्म 26 जून, 1838-निधन 8 अप्रैल, 1894) ने देवी काली के अवतार के रूप में मातृभूमि की स्तुति के रूप में जगद्धात्री पूजा (कार्तिक शुक्ल नवमी या अक्षय नवमी) के दिन 7 नवंबर, 1875 को की थी। उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी से सत्ता अपने हाथ में लेने पर ब्रिटिश सरकार ने 'गॉड सेव द क्वीन' को गाना अनिवार्य कर दिया था। इससे क्षुब्ध होकर बंकिम चंद्र ने यह राष्ट्र गीत भारतमाता की स्तुति और उसकी शक्तियों को प्रतिबिंबित करते हुए लिखा था। पहली बार यह गीत साहित्यिक पत्रिका 'बंग दर्शन' में उनके उपन्यास 'आनंदमठ' के धारावाहिक प्रकाशन के एक भाग के रूप में प्रकाशित किया गया था। उस समय अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियाँ भारतीय जनमानस को निराश कर रही थीं। लोग गुलामी की जंजीरों में बंधे थे, आत्मगौरव और स्वाभिमान लुप्त हो रहे थे। वंदेमातरम् स्त्रोत के रूप में भारत की स्वतंत्रता का शाश्वत गीत बन गया। बंकिम चंद्र इन पवित्र शब्दों को लिखते हुए भारत की गहनतम सभ्यतागत जड़ों से प्रेरणा ले रहे थे। वे अथर्ववेद के उद्घोष 'माता भूमिः पुत्रो अहं पृथ्वियाः' से लेकर देवी माहात्म्य में विश्वमाता के आह्वान को आत्मसात कर रहे थे। वंदे मातरम् की महत्ता इससे भी समझी जा सकती है कि उसे राष्ट्रीय ध्वज के प्रारम्भिक स्वरूप में भी स्थान मिला। सन् 1900 तक वंदेमातरम् (अनुवाद - माँ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ) अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता सेनानियों का नारा बन गया था और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राष्ट्रवादी नेताओं ने इसे लोकप्रिय बनाया।

बंकिम चंद्र चटर्जी सरकारी अधिकारी होते हुए भी अपने भीतर भारतीय अस्मिता के समर्थक थे। उन्होंने एक ऐसा गीत रचा जो मातृभूमि को

देवी के रूप में प्रस्तुत करता है- स्नेहमयी, समृद्ध और शक्तिशाली माता के रूप में।

उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनंदमठ की पृष्ठभूमि 1770 के संन्यासी विद्रोह की थी, जहाँ साधु-संत अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। इन संन्यासियों के मुख से "वंदे मातरम्" के उद्घोष ने विद्रोह को राष्ट्रभक्ति का स्वर प्रदान किया। बंकिम बाबू का यह मंत्र प्रार्थना भी था और राष्ट्र जागरण की भविष्यवाणी भी।

वंदे मातरम् का पाठ और निहितार्थ

मूल वंदेमातरम् गीत में कुल छह छंद हैं, किन्तु वंदे मातरम् को औपचारिक रूप से राष्ट्रीय गीत की मान्यता मिली केवल प्रारम्भिक दो छंदों को। गीत के प्रारम्भिक वे दो छंदों का मूलपाठ निम्नवत है - (वंदेमातरम् के शेष चार छंद अलग से दिए गए हैं)

स्वीकृत मूल पाठ (संक्षेप में)

वन्दे मातरम्।
वंदेमातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्नापुलकितयामिनिम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनिम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम्।
वन्दे मातरम्।

भावार्थः माँ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। हे मातृभूमि! तू सुजल, सुफल, शीतल पवन से युक्त, हरी-भरी और सुख-समृद्धि देने वाली है। मैं तुझे वंदन करता हूँ, तुझे नमन करता हूँ। चंद्रमा की शुभ्र ज्योति से रोमांचित रात्रि, फूलों से लदे पेड़ों की पत्तियों की शोभा, सुंदर मुस्कान वाली, मीठी वाणी वाली, सुख देने वाली, वरदान देने वाली प्रकृति भावुक आनंद में डुबो देने वाली है।

वंदेमातरम् गीत के शेष चार छंदः (जो स्वीकार किये प्रथम दो छंदों के बाद के हैं), निम्नवत प्रस्तुत हैं -

कोटि-कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,
द्विसप्तकोटि भुजैर्धृत खरकरवाले।
के बोले मा तुमी अबले?
बहुबल धारिणीं नमामि तारिणीं,
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
तुमि विद्या, तुमि धर्म,
तुमि हृदि, तुमि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदये तुमि मा भक्ति,
तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे-मन्दिरे॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी,
नमामि त्वां नमामि कमलाम्,
अमलां अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं धरणीं मातरम्।
वंदेमातरम्।

भावार्थ :

(हे माँ! तेरे सात करोड़ पुत्रों के कंठों से उठने वाला कलकल निनाद भयानक है,तेरे चौदह करोड़ भुजाओं में उठे हुए अस्त्र चमक रहे हैं।कौन कहता है कि तू अबला है, हे माँ!तू तो महान शक्ति की अधिष्ठात्री है,विजयिनी है, शत्रुओं का विनाश करने वाली है, हे भारतमाता! तुझे नमस्कार।

तू ही विद्या है, तू ही धर्म है,तू ही हृदय में, तू ही जीवन के मर्म में है।हे माँ! तू ही शरीर में प्राण स्वरूपा है।तेरे बाहुओं में शक्ति है,तेरे हृदय में भक्ति है,तेरी प्रतिमा हर मंदिर में प्रतिष्ठित है, हे भारतमाता! तुझे वंदन।तू ही दुर्गा है, दस भुजाओं में शस्त्र धारण करने वाली,तू ही लक्ष्मी है, कमल पर विराजमान,तू ही सरस्वती है, विद्या प्रदान करने वाली।हे निष्कलंक, अतुलनीय,सुजल, सुफल भारतमाता, तुझे प्रणाम!)

इस राष्ट्रीय गीत में प्राकृतिक सौंदर्य (जल, फल, फसल, शीतल हवा, हरी-भरी भूमि) का वर्णन अभिभूत कर देता है। भारत ही विश्व में ऐसा महान देश है,जहाँ मातृभूमि को दिव्य उपजाऊ देवी के रूप में सर्वप्रथम पूजा जाता है।

वंदे मातरम् का अर्थ केवल मातृभूमि को प्रणाम करना नहीं, अपितु यह वचन देना है कि हम उसकी रक्षा करेंगे, उसे समृद्ध और गौरवान्वित बनाएंगे। जब कोई किसान अपनी भूमि को उपजाऊ बनाता है, सैनिक सीमा पर डटा रहता है, शिक्षक अपने विद्यार्थियों में संस्कार के बीज बोता है और युवा नवाचार से देश का नाम आलोकित करता है, तब वंदे मातरम् अपने सार्थक रूप में जीवित रहता है।

यह गीत भारत भूमि की भौतिक सुंदरता के साथ उसकी आध्यात्मिक महिमा का भी वर्णन करता है। यह केवल भूमि की नहीं, अपितु संस्कृति, शक्ति और मातृत्व की आराधना है।वंदेमातरम् केवल भारत का राष्ट्रीय गीत ही नहीं, बंकिम चंद्र जी द्वारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रथम उद्घोषणा है। राष्ट्र गीत गायन की अवधि लगभग 1 मिनट 9 सेकेण्ड है।

संस्कृत से जन्मा राष्ट्र गीत 'वंदेमातरम्'

बंकिम चंद्र का 'वंदेमातरम् 'गीत उनके प्रसिद्ध बंगाली उपन्यास 'आनंदमठ 'में अन्तर्निहित है। उपन्यास बंगाली भाषा में होते हुए भी 'वंदेमातरम् ' का आत्मा और स्वर संस्कृत भाषा में गूँजते हैं। बंकिम चंद्र ने भलीभांति समझ लिया था कि भारत की सांस्कृतिक चेतना का मूल स्रोत संस्कृत है। अतः उन्होंने जब मातृभूमि के गौरव का गीत रचा,तो उसका आरम्भ और समापन संस्कृत में किया है -

'वंदेमातरम्।
सुजलाम् सुफलाम्...
..वरदाम् मातरम्।

इस गीत का मध्यांश बांग्ला भाषा में है, जिससे यह जनभाषा से जुड़ा रहा। बंकिम चंद्र की यह दूरदृष्टि अद्भुत थी कि उन्होंने संस्कृत को राष्ट्र का आत्मा और बांग्ला को उसकी वाणी बनाया। भाषाशास्त्री बांग्ला को संस्कृत के पूर्णतः सन्निकट बताते हैं, जिसमें सैकड़ों

शब्द संस्कृत से यथावत उतर आए हैं। बंकिम चंद्र ने इस गीत के माध्यम से सिद्ध किया कि संस्कृत कोई प्राचीन या जड़ भाषा नहीं है, अपितु भारत का जीवित आत्मा है।

भारतीय संगीत - संस्कृति से रससिक्त है राष्ट्र गीत

वंदेमातरम् की प्रथम स्वरलिपि रवीन्द्रनाथ टैगोर के संगीत गुरु यदुनाथ भट्टाचार्य ने तैयार की थी, जिसे पहली बार गुरुदेव ने कलकत्ता के बिन स्क्वेयर में कांग्रेस अधिवेशन में 28 दिसंबर, 1896 को गाया। रवीन्द्रनाथ की भान्जी गायिका सरला देवी चौधरानी ने भी इसे 1905 में रवीन्द्र संगीत में गाया। बाद में इसको अनेक प्रसिद्ध गायक - गायिकाओं ने स्वर दिया, किन्तु पं. बीडी पलुस्कर द्वारा गाया 'वंदेमातरम् 'बाद में बहुत लोकप्रिय हुआ। मास्टर कृष्णराव ने सतत संगीत - साधना करके 'वंदेमातरम् ' की तीन अलग-अलग विधाओं में बजाई गई ध्वनि मुद्रिकाएँ-संचलन गीत, आम सलामी और राष्ट्र गीत तैयार कीं। उनके प्रयासों से बाद में 'वंदेमातरम् 'को राष्ट्र गीत की मान्यता मिली।

खण्डित क्यों किया गया वंदेमातरम् गीत को

वर्ष 1896 में कांग्रेस के कोलकाता (तब कलकत्ता) अधिवेशन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसका गायन किया, लेकिन मौलाना मोहम्मद अली जौहर जब कांग्रेस के अध्यक्ष बने, तो काकीनाडा अधिवेशन (1923) में उन्होंने वंदेमातरम् का विरोध कर दिया। इससे पहले के सभी अधिवेशनों में उद्घाटन के समय सम्पूर्ण वंदेमातरम् का गायन होता रहा था। यहाँ भी परम्परागत रूप से वंदेमातरम् के गायन के लिए प्रख्यात शास्त्रीय गायक विष्णु दिगंबर पलुस्कर को बुलाया गया था। गायन आरम्भ होते ही अध्यक्षता कर रहे मोहम्मद अली जौहर ने खड़े होकर इसे बंद करने के लिए कहा। लेकिन पं. पलुस्कर ने इसका गायन जारी रखा। मौलाना जौहर मंच छोड़कर चले गए। संकीर्ण राजनीतिक कारणों से उसका बेतुका विरोध हुआ। चूँकि कांग्रेस मुस्लिम लीग को संतुष्ट करना चाहती थी, इसलिए उसके विरोध के परिणामस्वरूप कांग्रेस ने एक कमेटी बनाकर गीत के कई अंगों को काट दिया। इस कमेटी की रिपोर्ट को 1937 के कलकत्ता अधिवेशन में स्वीकार कर लिया गया। इस रिपोर्ट के आधार पर केवल पहले दो छंद ही स्वीकार किए गए। साथ ही इसके अनिवार्य गायन से कुछ लोगों को मुक्ति दे दी गई।

संविधान सभा ने 24 जनवरी, 1950 को प्रथम दो छंदों को (सम्पूर्ण गीत के शेष चार छंदों को काटकर) राष्ट्र गीत की मान्यता प्रदान की, किन्तु फिर भी एक वर्ग द्वारा इसके विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया गया। इस खण्डित वंदेमातरम् को भी गाने से कुछ संकीर्ण सोच के लोगों द्वारा संसद में अस्वीकार किया गया।

वंदे मातरम् का प्रभाव

बंकिम चंद्र ने केवल काव्य नहीं लिखा, उन्होंने राष्ट्र के सोये हुए आत्मा को जगाने का संकल्प लिया। 'सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्यश्यामलाम् मातरम् ' की पंक्ति ने भारतीय मानस में चेतना का संचार किया। इस एक पंक्ति में भारत की समृद्धि, सौन्दर्य और शक्ति एक साथ मूर्तिमान हो उठे।

सन् 1905 के बंग - भंग आंदोलन के समय वंदे मातरम् एक गीत नहीं रहा, अपितु इसकी गूंज विद्यालयों, सभाओं, जुलूसों और स्वतंत्रता सेनानियों की गतिविधियों में सुनाई देती थी। फांसी के तख्ते पर चढ़ते क्रांतिकारियों के होठों पर अंतिम उच्चारण भी 'वंदे मातरम् 'ही था।

'वंदेमातरम्'से प्रभावित होकर लाला लाजपत राय ने लाहौर में "वंदे मातरम् " नाम से एक पत्रिका निकाली। 1905 में स्वर्गीय हीरालाल ने पहली बार राजनीतिक विषय पर फिल्म बनाई. जिसका अंत 'वंदे मातरम् 'गान से होता था। 1907 में भीकाजी कामा ने जर्मनी में पहला तिरंगा फहराया, जिसके मध्य में 'वंदे मातरम् 'लिखा होता था। 1976 में भारत सरकार ने एक टिकट जारी किया, जिसमें 'वंदेमातरम्'गीत की कुछ पंक्तियाँ लिखी हुई थीं।

सन् 1894 में महर्षि अरबिन्द घोष ने बंकिम चंद्र के राष्ट्र गीत की प्रशंसा करते हुए कहा था कि यह रचना न केवल कालजयी होगी, अपितु भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और नव निर्माण के लिए प्रेरणा पुंज का काम करेगी-

"बंकिम आधुनिक भारत के एक ऋषि थे, जिन्होंने अपने शब्दों के माध्यम से राष्ट्र के आत्मा को जागृत किया। यह गीत भारत के पुनर्जन्म का मंत्र है।"

महात्मा गांधी ने स्वयं स्वीकार किया था -

"वंदे मातरम् में सबसे सुस्त रक्त को भी जगाने की जादुई शक्ति थी।"

अपने एक पत्र में बंकिम बाबू ने लिखा था -

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है, यदि मेरे सभी कार्य गंगा में बहा दिए जाएं। यह श्लोक ही अनंतकाल तक जीवित रहेगा। यह एक महान गान होगा और लोगों के हृदय को जीत लेगा।"

वर्ष 1896 में रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने वंदेमातरम को धुन में पिरोया और कलकत्ता अधिवेशन में इसे गाया, जिससे इसे वाणी और अमरता प्राप्त हुई। तमिलनाडु में सुब्रमण्यम भारती जी ने इसका तमिल में अनुवाद किया और पंजाब में क्रांतिकारियों ने इसे गाते हुए ब्रिटिश शासन को खुली चुनौती दी। इसने उदारवादियों और क्रांतिकारियों तथा विद्वानों और नाविकों तक को एकजुट किया।

स्वतंत्रता संग्राम में 'वंदेमातरम् 'की भूमिका :

(क) स्वदेशी आंदोलन का उद्घोष

1905 में लॉर्ड कर्जन ने बंगाल का विभाजन किया। यह विभाजन अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति का परिणाम था। बंगाल के लोगों में गहरा असंतोष फैल गया। उसी समय "वंदे मातरम्" आंदोलन का उद्घोष बनकर उभरा।

1905 में बंग-भंग आंदोलन के दौरान बंगाल में विद्रोह भड़क उठा। अंग्रेजों ने

'वंदेमातरम् 'के सार्वजनिक पाठ पर प्रतिबंध लगा दिया, फिर भी 14 अप्रैल, 1906 को बारीसाल में हजारों लोगों ने इस आदेश की अवहेलना की।

सड़कों पर प्रदर्शन करते हुए विद्यार्थी और नागरिक "वंदे मातरम्" का नारा लगाते थे। बाजारों में बहिष्कार, स्वदेशी वस्त्रों और वस्तुओं का प्रचार करते समय यही गीत प्रेरणा देता था।इस प्रकार "वंदे मातरम्" स्वदेशी आंदोलन (1905–1908) का आत्मा बन गया।

(ख) स्वतंत्रता सेनानियों का प्रेरक गीत

अरविंद घोष, लाला लाजपत राय, बिपिनचंद्र पाल, बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रवादी नेताओं ने इसे "राष्ट्रीय मंत्र" की संज्ञा दी।

कई स्थानों पर अंग्रेजी पुलिस ने "वंदे मातरम्" के उद्घोष पर प्रतिबंध लगाए। किंतु देशभक्तों ने प्राण देकर भी यह नारा छोड़ा नहीं।

स्वतंत्रता सेनानियों ने जेल में और फाँसी के फंदे पर चढ़ते समय भी "वंदे मातरम्" का उच्चारण किया।

1907 के कांग्रेस अधिवेशन (कलकत्ता) में यह गीत आधिकारिक रूप से गाया गया, और इसे भारत का राष्ट्रीय गीत मान्यता प्राप्त हुई।

(ग) ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जनजागरण

"वंदे मातरम्" ने जनसामान्य में यह चेतना फैलाई कि देश केवल भूमि नहीं, माँ के समान पूज्य है। इस विचार ने राष्ट्रवाद को भावनात्मक आधार दिया। इस गीत ने भारतीय समाज के हर वर्ग — विद्यार्थी, किसान, मजदूर, महिला — में देशभक्ति और आत्मबल का संचार किया।

(घ) क्रांतिकारियों की प्रेरणा

कई क्रांतिकारी संगठन जैसे अनुशीलन समिति, युगांतर दल आदि के सदस्य "वंदे मातरम्" को अपने संगठन का नारा मानते थे।अशफाक उल्ला खां, तिरुपुर कुमारन,

भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु, खुदीराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रांतिकारियों की सभा और प्रदर्शन "वंदे मातरम्" के जयघोष से आरंभ होते थे।'वंदेमातरम् 'का मंत्र गदर पार्टी के क्रांतिकारियों के साथ कैलीफोर्निया पहुँच गया। यह आजाद हिन्द फौज में भी गूँजा, जब नेताजी के सैनिक सिंगापुर से मार्च कर रहे थे। इसी तरह यह 1946 में रायल इंडियन नेवी की क्रांति में भी गूँजा, जब भारतीय नाविकों ने ब्रिटिश युद्धपोतों पर तिरंगा फहराया।

इस प्रकार यह गीत अंग्रेज़ी शासन के लिए भय और भारतीयों के लिए शक्ति का प्रतीक बन गया।

वंदेमातरम् की वैचारिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ

मातृभूमि की आराधनाः भारत को देवी के रूप में प्रस्तुत कर, यह गीत भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर मातृत्व का भाव जगाता है।

एकता का संदेशः विविध भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों से भरे भारत को एक मातृभूमि के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करता है।इस गीत का प्रथमादर्श सौम्य और मृदुभाषी होने का है।

शक्ति और सौंदर्य का संगमः गीत में प्रकृति का सौंदर्य और राष्ट्र की शक्ति, दोनों का अद्भुत समन्वय है।

सांस्कृतिक नवजागरणः इसने भारतीयों में अपने गौरवशाली अतीत और संस्कृति पर गर्व की भावना जगाई।

प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश : हम जब नदियों को प्रदूषित करते हैं, तो हम अपने राष्ट्र गीत की विश्वसनीयता का क्षरण कर रहे हैं। हम जब पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करते हैं, तो हम वंदेमातरम् के आत्मा से द्रोह करते हैं।

वर्तमान में वंदेमातरम् की प्रासंगिकता

(क) राष्ट्रीय एकता का प्रतीक

आज जब भारत में भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता के साथ एकता को बनाए रखना चुनौती है, "वंदे मातरम्" हमें यह याद दिलाता है कि हम सब एक ही मातृभूमि की संतान हैं। यह गीत राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक है।

(ख) पर्यावरणीय चेतना का संदेश

गीत की पंक्तियाँ — "सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्" — हमें प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देती हैं। यह हमें याद दिलाती हैं कि मातृभूमि का सच्चा सम्मान तभी है जब हम उसकी नदियों, वनों और धरती की रक्षा करें।

(ग) राष्ट्रगौरव और आत्मनिर्भरता का भाव

"वंदे मातरम्" आत्मगौरव का संदेश देता है। यह बताता है कि हमारी भूमि समृद्ध, शक्तिशाली और आत्मनिर्भर है।

आज 'आत्मनिर्भर भारत' के युग में यह गीत उसी भावना को पुनः प्रकट करता है — कि भारतीयों को अपनी शक्ति, संस्कृति और श्रम पर विश्वास रखना चाहिए।

(घ) युवाओं के लिए प्रेरणा

आज के युवा जब वैश्वीकरण के प्रभाव में अपनी पहचान खोज रहे हैं, यह गीत उन्हें अपनी जड़ों की ओर लौटने की प्रेरणा देता है। यह कहता है —

"माता की सेवा ही सच्ची देशभक्ति है।"

यह राष्ट्रप्रेम को केवल भावना नहीं, अपितु कर्म का रूप देता है।

वंदेमातरम् गायन पर व्यर्थ का विवाद

आज विश्व भर में बसे भारतीय जब "वंदे मातरम्" सुनते हैं, तो उनके मन में मातृभूमि के प्रति गर्व की अनुभूति होती है।

यह गीत भारतीय प्रवासी समुदाय के लिए भी भारतीयता की पहचान बन चुका है।

संयुक्त राष्ट्र के मंच से लेकर अंतरराष्ट्रीय आयोजनों तक, यह गीत भारत की सांस्कृतिक गरिमा का प्रतीक है।

"वंदे मातरम्" भारतीय स्वतंत्रता संग्राम

का वह प्राण मंत्र था जिसने गुलामी की बेड़ियाँ तोड़ने की प्रेरणा दी। इस गीत ने भारतीय समाज को चेतना, आत्मबल और राष्ट्रप्रेम की भावना से ओत-प्रोत किया।

इस गीत में न तो सत्ता का मोह है, न किसी जाति, सम्प्रदाय या प्रांत का आग्रह। यह गीत सम्पूर्ण भारत की सामूहिक चेतना का प्रतीक है। दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी 'वंदेमातरम्'पर प्रश्नचिह्न लगाने का साहस करते हैं। कभी इसे साम्प्रदायिक कहकर सीमित करने का प्रयास किया जाता है,तो कभी इसे सम्प्रदाय विशेष से जोड़कर उसकी सार्वभौमिकता को संकुचित किया जाता है।

आज जहाँ हम राष्ट्र गीत वंदेमातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर पूरे देश में वर्षभर उत्सव मना रहे हैं,जिससे देश की युवा पीढ़ी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के विचार को आत्मसात कर सके।वहीं एक वर्ग के कुछ लोगों द्वारा इस खण्डित राष्ट् गीत (केवल दो छंद) को भी गाने से इन्कार किया जा रहा है। 'वंदेमातरम्' को लेकर एक बड़ा विवाद सन् 2009 में हुआ था, जब उत्तर प्रदेश के देवबंद में जमीयत उलमा - ए-हिंद ने एक फतवा जारी कर मुसलमानों से राष्ट्र गीत नहीं गाने को कहा था। उनके तर्कानुसार यह गीत मुस्लिम धर्म में उनके एकेश्वरवाद में विश्वास के विरुद्ध है। अभी 29 अक्टूबर, 2025 को जब महाराष्ट्र की देवेंद्र फडणवीस सरकार ने एक नवंबर से सात नवंबर तक सभी स्कूलों में वंदेमातरम् के सामूहिक गायन का आदेश दिया,तो एक पक्ष ने विरोध किया। महाराष्ट्र के अलावा विरोध के ऐसे स्वर जम्मू-कश्मीर में भी सुनाई पड़ रहे हैं। संभल के सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क भी वंदेमातरम् के विरोध में खड़े हैं। देवबंद में जमीयत - ए - हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी ने स्कूलों में वंदेमातरम् गाने संबंधी निर्देशों को भारत के संविधान में प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता का उल्लंघन बताया है।उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बच्चों में राष्ट्र गीत के प्रति सम्मान का भाव जगाने के लिए राज्य के सभी शैक्षणिक संस्थानों में 'वंदेमातरम् 'का गायन अनिवार्य करने का निर्णय लिया है। इस घोषणा पर मुस्लिम सम्प्रदाय ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है और जमीयत उलमा - ए - महाराष्ट्र के अध्यक्ष मौलाना हलीम उल्लाह कासमी ने कहा है कि मुसलमानों को अपने बच्चों को स्कूलों से निकाल लेना चाहिए। दुर्भाग्य से ऐसा विरोध प्रायः होता आ रहा है कि कई बार संसद में कुछ सांसद वंदेमातरम् के गायन में सम्मिलित नहीं होते। ऐसे ही पूर्व में मुस्लिम लीग के विरोध के कारण तत्कालीन कांग्रेस ने राष्ट्रीय गीत के चार छंदो को काट दिया था। कांग्रेस के वंदेमातरम् को खण्डित करने के निर्णय के बाद ही भारत के विभाजन की नींव पड़ गई थी। अब पुनः खण्डित वंदेमातरम् पर व्यर्थ का विवाद देशहित में नहीं है।

संकीर्ण मानसिकता वालों को सोचना चाहिए कि व्यापक और सुंदर वंदेमातरम् गीत तनिक भी साम्प्रदायिक नहीं है। इस गीत में मूर्तिपूजा का कहीं कोई उल्लेख नहीं है। प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और इस्लामिक विद्वान मौलाना रजा उल करीम ने 1944 में 'बंकिम चंद्र और मुस्लिम समाज ' नामक पुस्तक बांग्ला में प्रकाशित की, जिसमें उन्होंने 'वंदेमातरम् 'के प्रति मुसलमानों के विरोध को संकीर्ण सोच बताया। मौलाना करीम ने तर्क दिया (पृष्ठ 90-102)'हमारे बीच कुछ लोग हैं, जो मूर्ति - पूजा का हौवा खड़ा करते हैं और आम मुसलमानों के सामान्य जीवन की धारा को दूषित करने की कोशिश करते हैं। संकीर्ण सोच वाला रवैया उनकी स्वतंत्र सोच के विकास को रोक रहा है।'

इस गीत में प्रकृति के प्राण - तत्व हैं। यह गीत भारतमाता को प्रकृति की सुषमा से आभूषित करता है। अतः प्रत्येक भारतवासी को 'वंदेमातरम् 'का गायन मुक्तकंठ से प्रतिदिन करना चाहिए।

निष्कर्षः

आज जब हम स्वतंत्र भारत के नागरिक हैं, "वंदे मातरम्" हमें स्मरण कराता है कि स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, अपितु कर्तव्य भी है — मातृभूमि की सेवा, संरक्षण और सम्मान का कर्तव्य।राष्ट्र के आत्मा से जन्मे शब्द कभी समाप्त नहीं होते, वे सदैव जीवित रहकर पीढ़ियों तक गूँजते रहते हैं। अब समय आ गया है कि हम अपने समृद्ध इतिहास, अपनी संस्कृति, अपनी मान्यताओं और अपनी परम्पराओं को भारतीयता की दृष्टि से देखें।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है -

"भारत का राष्ट्र गीत 'वंदेमातरम् 'का पहला शब्द ही हमारे हृदय में भावनाओं का उफान ला देता है। यह हमें माँ भारती के बच्चों के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का आभास दिलाता है। हमें वंदेमातरम् के 150 वें वर्ष के उत्सव को यादगार बनाना है।"

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा है -

"भारत का राष्ट्रीय गीत 'वंदेमातरम् 'देश के लोगों की भावनात्मक चेतना और एकता का प्रतीक है। आइए! हम सभी देशवासी यह दृढ़ संकल्प लें कि हम इस गीत की भावना के अनुरूप भारतमाता को सुजला,सुफला और सुखदा बनाए रखेंगे।"

150 वर्षों के बाद भी इस गीत की पंक्तियाँ आज भी उतनी ही जीवंत हैं, जितनी स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में थीं।यह गीत भारत के स्वतंत्रता - संगीत का अमर स्वर है।

यह गीत आज भी कहता है —

"हे भारत माता,
तुझे वंदन है,
तुझे नमन है।"

आज जब देश 'विकसित भारत 2047' के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, तब 'वंदेमातरम् 'पुकारना केवल इतिहास की स्मृति नहीं, अपितु भविष्य की प्रेरणा है। राष्ट्र के आत्मा को जाग्रत करने का कार्य 'वंदेमातरम् 'ने किया और आज भी कर रहा है। यदि हर भारतीय इस मंत्र के अर्थ और भाव को जीवन में उतार ले, तो देश न केवल आर्थिक, अपितु सांस्कृतिक और नैतिक रूप से भी विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर होगा।

भारतवंशी हुए चीते

प्रमोद भार्गव
शिवपुरी म.प्र.

17 सितम्बर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर कूनो में चीता पुनर्स्थापना परियोजना का शुभारंभ किया गया था। नामीबिया से लाए गए आठ चीतों को मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में प्रधानमंत्री ने छोड़ा था। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका से 12 चीते और लाकर छोड़े गए थे। नई धरती और जलवायु परिवर्तन के चलते इन चीतों को आरंभ में यहां के मौसम से तालमेल बिठाने में दिक्कतें आईं। नतीजतन छह वयस्क और यहीं पैदा हुए चार शावकों में से तीन की मौतें भी हुईं थीं, इस कारण परियोजना पर सवाल भी खड़े किए गए थे।

मध्यप्रदेश के श्योपुर के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में भारत की धरती पर जन्मी मुखी नाम की मादा चीता ने 5 शावकों को जन्म देकर पूर्णतः भारतवंशी चीतों का बुनियाद रख दी है। यह देश में चीता पुनर्वास परियोजना में नए अध्याय की शुरुआत है।अभी तक नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से भारत लाइ गई मादा ने ही चीता शावकों को जन्म दिया है। 32 माह की मुखी और शावक स्वस्थ हैं। इस खुशखबरी के मिलने पर केंद्रीय वन मंत्री भूपेंद्र सिंह ने कहा है कि यह सिर्फ एक जन्म नहीं,बल्कि पूरी परियोजना का आत्मविश्वास बढ़ाने वाला मोड़ है। कूनो में मादा चीता ज्वाला दो बार मां बन चुकी है, जिसने मुखी समेत अनेक शावकों को जन्म दिया है। अब मुखी के मां बनाने के बाद कूनो में एक साथ तीन पीढियां अठखेलियां करने लग गई हैं। भारत अब कुल 32 चीते है,जिनमें से 21 यहीं जन्में हैं। इनमें तीन चीते गांधीसागर अभ्यारण्य में चहलकदमी कर रहे हैं। 17 सितम्बर 2022 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर कूनो में चीता पुनर्स्थापना परियोजना का शुभारंभ किया गया था।

नामीबिया से लाए गए आठ चीतों को मध्यप्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान में प्रधानमंत्री ने छोड़ा था। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका से 12 चीते और लाकर छोड़े गए थे। नई धरती और जलवायु परिवर्तन के चलते इन चीतों को आरंभ में यहां के मौसम से तालमेल बिठाने में

दिक्कतें आईं। नतीजतन छह वयस्क और यहीं पैदा हुए चार शावकों में से तीन की मौतें भी हुईं थीं, इस कारण परियोजना पर सवाल भी खड़े किए गए थे। दक्षिण अफ्रीका से लाकर बसाए गए 12 चीतों को 18 फरवरी 2024 को दो साल पूरे हो हुए थे, इस अवधि में इन चीतों की मृत्यु दर में कमी ने परियोजना की सफलता के प्रथम लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था। इनकी जीवित रहने की दर शुरुआत में नामीबिया से लाए चीतों से बेहतर रही थी। दक्षिण अफ्रीका से आए 12 चीतों में से 33.3 प्रतिशत की मौत हुई,जबकि नामीबिया से लाए गए चीतों में से 37.5 प्रतिशत चीतों की मौत हुई। अफ्रीका से लाई गई तीन मादा चीताओं ने अब तक 12 शावकों को जन्म दिया है। ये चीते अब भारतीय परिवेश में न केवल पूरी तरह ढल गए हैं, बल्कि नए घर कूनो में आबादी बढ़ा रहे हैं। नए आवास स्थलों में 50 फीसदी चीतों की मौत को सामान्य माना जाता है।

एक समय था जब चीते की रफ्तार भारतीय वनों की शान हुआ करती थी। लेकिन 1947 के आते-आते चीतों की आबादी पूरी तरह लुप्त हो गई। 1948 में अंतिम चीता छत्तीसगढ़ के सरगुजा में देखा गया था। जिसे मार गिराया गया था। चीता तेज रफ्तार का आश्चर्यजनक चमत्कार माना जाता है। अपनी विशिष्ट एवं लोचपूर्ण देहयष्टि के लिए भी इस हिंसक वन्य जीव की अलग पहचान थी। शरीर में इसी चपलता के कारण यह जंगली प्राणियों में सबसे तेज दौड़ने वाला धावक है।

बीती सदी में चीतों की संख्या एक लाख तक थी, लेकिन अफ्रीका के खुले घास वाले जंगलों से लेकर भारत सहित लगभग सभी एशियाई देशों में पाया जाने वाला चीता अब पूरे एशियाई जंगलों में गिनती के रह गए हैं। राजा चीता (एसिनोनिक्स रेक्स) जिम्बाब्वे में मिलता है। अफ्रीका के जंगलों में भी गिने-चुने चीते रह गए हैं। तंजानिया के सेरेंगती राष्ट्रीय उद्यान और नामीबिया के जंगलों में गिने-

चुने चीते हैं। प्रजनन के तमाम आधुनिक व वैज्ञानिक उपायों के बावजूद जंगल की इस फुर्तीली नस्ल की संख्या बढ़ाई नहीं जा पा रही है। यह प्रकृति के समक्ष वैज्ञानिक दंभ की नाकामी है। जूलॉजिकल सोसायटी आफ लंदन की रिपोर्ट को मानें तो दुनिया में 91 प्रतिशत चीते 1991 में ही समाप्त हो गए थे। अब केवल 7100 चीते पूरी दुनिया में बचे हैं। एशिया के ईरान में केवल 50 चीते शेष हैं। अफ्रीकी देश केन्या के मासीमारा क्षेत्र को चीतों का गढ़ माना जाता था, लेकिन अब इनकी संख्या गिनती की रह गई है। ऐसे में भारत में चीतों की वंशवृद्धि दुनिया के लिए खुशखबरी है।

बीती सदी के पांचवें दशक तक चीते अमरीका के चिड़ियाघरों में भी थे। प्राणी विशेषज्ञों की अनेक कोशिशों के बाद इन चीतों ने 1956 में शिशुओं को जन्म भी दिया, परंतु किसी भी शिशु को बचाया नहीं जा सका। चीते द्वारा किसी चिड़ियाघर में जोड़ा बनाने की यह पहली घटना थी, जो नाकाम रही। जंगल के हिंसक जीवों का प्रजनन चिड़ियाघरों में आश्चर्यजनक ढंग से प्रभावित होता है, इसलिए शेर, बाघ, तेंदुए व चीते चिड़ियाघरों में जोड़ा बनाने की इच्छा नहीं रखते हैं। भारत में चीतों की अंतिम पीढ़ी के कुछ सदस्य बस्तर-सरगुजा के घने जंगलों में थे, जिन्हें 1947 में देखा गया था। प्रदेश अथवा भारत सरकार इनके संरक्षण के जरूरी उपाय करने हेतु हरकत में आती, इससे पहले ही चीतों के इन अंतिम वंशजों को भी शिकार के शौकीन राजा-महाराजाओं ने मार गिराया और भारतीय चीतों की नस्ल पर पूर्ण विराम लग गया था। कूनो के बाद अब मध्य प्रदेश में मंदसौर जिले के गांधीसागर अभ्यारण्य में चीतों का नया कुनबा बसा दिया है। यहां फ़िलहाल तीन चीते हैं।

हमारे देश के राजा-महाराजाओं को घोड़ों और कुत्तों की तरह चीते पालने का भी शौक था। चीता शावकों को पालकर इनसे जंगल में शिकार कराया जाता था। राजा लोग जब जंगल में आखेट के लिए जाते थे, तो प्रशिक्षित चीतों को बैलगाड़ी में बिठाकर साथ ले जाते थे। इनकी आंखों पर पट्टी बांध दी जाती थी, जिससे यह किसी मामूली वन्य जीव पर न झपटे। जब शिकार राजाओं की दृष्टि के दायरे में आ जाता था, तो चीते की आंखों की पट्टी खोलकर शिकार की दिशा में हाथ से इशारा कर दिया जाता था। पलक झपकते ही शिकार चीते के जबड़े में होता। शिकार का यह अद्भुत करिश्मा देखना भी एक आश्चर्यजनक रोमांच की बात रही होगी ?

जहां सड़क धूल बसती है: भारत अपनी हवा को साफ करने में चुनौती देता है

विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल,
शैक्षिक स्तंभकार, पंजाब

भारत में सड़क धूल को नियंत्रित करने के कई प्रयास किए जा रहे हैं, हालांकि चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। शहरों में यांत्रिक स्वीपर, ई-चालित सफाई मशीनें, स्प्रिंकलर और वाटर मिस्ट सिस्टम का उपयोग धीरे-धीरे बढ़ रहा है। मुंबई में बीएमसी ने धूल को दबाने के लिए धुंध फैलाने वाले वाहनों का उपयोग शुरू किया है। दिल्ली-एनसीआर में कच्चे कंधों को पक्का करने, सड़क डिज़ाइन सुधारने और हरियाली बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है ताकि धूल का उड़ना कम किया जा सके। सड़क किनारों पर पेड़, घास और ऊर्ध्वाधर हरित दीवारें लगाई जा रही हैं, जिन्हें धूल पकड़ने में प्रभावी माना जाता है। निर्माण स्थलों पर भी धूल दबाने वाले पदार्थों का उपयोग, पहिया धुलाई जैसे नियम और वाहनों से बाहर उड़ने वाले मलबे को कम करने जैसी नीतियाँ लागू की जा रही हैं।

भारत के कई शहरों में सड़क धूल, वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण बन चुकी है और यह केवल एक मामूली स्रोत नहीं बल्कि पीएम10 और पीएम 2.5 जैसे कण प्रदूषण का प्रमुख योगदानकर्ता मानी जाती है। दिल्ली सहित कई महानगरों में हुए अध्ययनों, जिनमें आईआईटी कानपुर का अध्ययन भी शामिल है, ने स्पष्ट रूप से बताया है कि सड़क पर जमा धूल हवा में मौजूद कणों का सबसे बड़ा हिस्सा बनाती है। यह धूल कई स्रोतों से आती है- जैसे बजरी, कंक्रीट के छोटे कण, सड़क की सतह का टूटना, टायरों का घिसना और वाहनों के गुजरने पर पहले से जमा धूल का दोबारा उड़ना। जब वाहन तेज गति से चलते हैं या सड़क का रखरखाव खराब होता है, तो जमी हुई धूल बार-बार हवा में फैलती रहती है और प्रदूषण लगातार बढ़ता जाता है।

सड़क धूल वास्तव में दो रूपों में मौजूद रहती है- एक सड़क की सतह और उसके कंधों पर जमा हुई अवस्था में और दूसरी हवा में तैरते हुए कणों के रूप में। कई शहरों में सड़कें तो पक्की होती हैं, लेकिन उनके कंधे यानी सीम कच्चे रह जाते हैं और इनमें मिट्टी तथा गाद जमा होती रहती है जो धूल को भारी मात्रा में बढ़ाती है। खराब रखरखाव वाली सड़कें, टूटे हिस्से, गड्ढे और किनारे पर जमा कीचड़ इस समस्या को और जटिल बना देते हैं। इसके अतिरिक्त, निर्माण स्थलों से उड़ने वाली मिट्टी और मलबा भी आसपास की सड़कों पर धूल की परत बिछा देता है। जब इन सड़कों पर वाहन चलते हैं तो यह जमा धूल लगातार हवा में घुलती रहती है और कई बार पीएम10 ही नहीं बल्कि पीएम2.5 तक में महत्वपूर्ण योगदान देती है। विशेषकर दिल्ली जैसे स्थानों में धूल का बड़ा हिस्सा शहर के भीतर से ही आता है, न कि दूरस्थ क्षेत्रों से।

हवा में तैरती यह धूल पास की सतहों पर जैसे पेड़-पौधों, दीवारों और फुटपाथों पर जमती तो है, लेकिन भारी यातायात के कारण लगातार पुनः उड़ जाती है और एक प्रकार का गतिशील चक्र बना रहता है जिसमें धूल बार-बार हवा में उठती रहती है। यही धूल जब हमारे शरीर में जाती है, तो स्वास्थ्य जोखिम भी बढ़ाती है। सड़क धूल से बने पीएम10 और पीएम2.5 कण हमारे फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर जाते हैं और अस्थमा, ब्रोंकाइटिस तथा अन्य श्वसन रोगों को बढ़ाने का कारण बनते हैं। इसके साथ ही यह धूल शहरों की गर्मी बढ़ाने, स्थानीय जलवायु को प्रभावित करने और दृश्यता कम करने तक में भूमिका निभाती है।

भारत में सड़क धूल को नियंत्रित करने के कई प्रयास किए जा रहे हैं, हालांकि चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। शहरों में यांत्रिक स्वीपर, ई-चालित सफाई मशीनें, स्प्रिंकलर और वाटर मिस्ट सिस्टम का उपयोग धीरे-धीरे बढ़ रहा है। मुंबई में बीएमसी ने धूल को दबाने के लिए धुंध फैलाने वाले वाहनों का उपयोग शुरू किया है। दिल्ली-एनसीआर में कच्चे कंधों को पक्का करने, सड़क डिज़ाइन सुधारने और हरियाली बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है ताकि धूल का उड़ना कम किया जा सके। सड़क किनारों पर पेड़, घास और ऊर्ध्वाधर हरित दीवारें लगाई जा रही हैं, जिन्हें धूल पकड़ने में प्रभावी माना जाता है। निर्माण स्थलों पर भी धूल दबाने वाले पदार्थों का उपयोग, पहिया धुलाई जैसे नियम और वाहनों से बाहर उड़ने वाले मलबे को कम करने जैसी नीतियाँ लागू की जा रही हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) के तहत कई शहरों को धूल नियंत्रण की विस्तृत योजनाओं पर विशेष दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

फिर भी कई समस्याएँ इन प्रयासों के रास्ते में बनी हुई हैं। धूल को बैठाने के लिए पानी का उपयोग प्रभावी तो है, लेकिन यह बड़ी मात्रा में पानी खर्च करता है, जो कई शहरों में संभव नहीं है। सड़कें पक्की होने के बाद भी नियमित रखरखाव न होने पर गड्ढे और टूट-फूट फिर से धूल बढ़ा देते हैं। कई नगर निगमों के पास पर्याप्त मशीनें, तकनीक और बजट नहीं है। कुछ सड़कें गलत डिजाइन के कारण धूल नियंत्रण के अनुकूल नहीं होतीं, जैसे संकरे कंधे या हरियाली का अभाव। सबसे बड़ी चुनौती यह है कि धूल नियंत्रण उपाय लागू हो भी जाएँ, तो उनकी लगातार निगरानी और डेटा-आधारित मूल्यांकन नहीं हो पाता, जिसके चलते प्रभाव का पता लगाना कठिन होता है। देश के विभिन्न शहरों में हुए अध्ययनों ने स्पष्ट किया है कि सड़क धूल कितना बड़ा हिस्सा प्रदूषण में जोड़ती है। मुंबई में NEERI ने पाया कि सड़क धूल पीएम उत्सर्जन का 71% हिस्सा बनाती है। कोलकाता में TERI के अध्ययन ने बताया कि सड़क धूल पीएम10 में लगभग 35% और पीएम 2.5 में लगभग 16% का योगदान देती है। पंजाब के लुधियाना और जालंधर जैसे शहरों में भी यह एक बड़ी समस्या है, जहाँ यांत्रिक झाड़ू लगाने, वैक्यूम क्लीनिंग और पैकिंग जैसी रणनीतियाँ सुझाई गई हैं।

सड़क धूल को कम करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह केवल उत्सर्जन को रोकने का मामला नहीं है, बल्कि पहले से जमा हुई धूल को बार-बार हवा में जाने से बचाना भी उतना ही जरूरी है। यदि धूल को सड़क पर जमा होने दिया जाए, तो हर गुजरने वाला वाहन एक तरह का "डस्ट मिक्सर" बन जाता है, जो हवा में कणों की नई परत फैला देता है। इसलिए बेहतर सड़क डिज़ाइन, पक्के कंधे, हरियाली और नियमित सफाई द्वारा धूल के संचय को रोकना और मौजूदा धूल का व्यवस्थित प्रबंधन करना आवश्यक है।

अंततः, सड़क धूल भारतीय शहरों में कण प्रदूषण का एक महत्वपूर्ण और कई बार अनदेखा कर दिया जाने वाला स्रोत है। यह न केवल उत्पन्न होती है, बल्कि दोबारा उड़कर बार-बार हवा को प्रदूषित करती रहती है। भारत में धूल नियंत्रण की रणनीतियों में इंजीनियरिंग सुधार, प्रकृति-आधारित समाधान और सक्रिय रखरखाव शामिल हैं, लेकिन पानी की उपलब्धता, फंडिंग और निरंतर नीति-कार्यान्वयन जैसी चुनौतियाँ अभी भी सामने हैं। यदि इन उपायों को व्यापक पैमाने पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए, तो सड़क धूल पर नियंत्रण भारत के शहरी वायु प्रदूषण की समस्या को काफी हद तक कम कर सकता है।

तिरंगे की बेटियाँ

प्रियंका सौरभ
हिसार (हरियाणा)

पूरा स्टेडियम जैसे एक साथ आसमान में उड़ गया हो। खिलाड़ी ज़मीन पर घुटनों के बल गिर गईं, आँसू बहने लगे- खुशी के आँसू, जीत के आँसू, संघर्षों के आँसू। कप्तान ने दोनों हाथ उठाए और तिरंगा हवा में लहराया। पूरा देश इस क्षण का साक्षी था। सड़कें जश्न से भर गईं, सोशल मीडिया पर तस्वीरों की बाढ़ आ गई, और भारत ने अपनी बेटियों के नाम वह सम्मान लिख दिया, जिसकी वह बरसों से हकदार थीं।

भारत की सुबह उस दिन कुछ अलग ही थी। सूरज जैसे थोड़ा गर्व लेकर उगा था, हवा में एक हल्की-सी ताजगी थी, और सड़कों पर लोगों की आवाज़ों में एक अलग ही किस्म की चहल-पहल महसूस हो रही थी। यह वही दिन था जब भारत में पहली बार महिला क्रिकेट विश्वकप की शुरुआत होनी थी। वर्षों से क्रिकेट से प्रेम करने वाला यह देश इस पल को अपने दिल में संजोकर बैठा था। हर गली, हर मोहल्ले में लोग चर्चा कर रहे थे- टीम कैसी है, किसका फॉर्म कैसा है, कौन-सी टीम सबसे बड़ी चुनौती बनेगी- सबके पास अपने-अपने तर्क थे, अपनी-अपनी उम्मीदें थीं। लेकिन एक बात पर हर कोई सहमत था- इस बार इतिहास लिखने का समय आ गया है।

भारतीय टीम होटल से निकलकर बस में बैठ रही थी, तो हर खिलाड़ी के मन में एक अजीब सा मिश्रण था- उत्साह, घबराहट, ज़िम्मेदारी, और सबसे बढ़कर पूरे देश की अपेक्षाओं को पूरा करने का जुनून। बस के शीशों के बाहर खड़े लोग झंडे लहरा रहे थे, मोबाइल उठाकर वीडियो बना रहे थे, कुछ लोग तो बस का पीछा करते हुए नारे लगा रहे थे। खिलाड़ियों की आँखों में चमक थी- वह चमक जो हर खेल से पहले होती है, लेकिन इस बार वह चमक कहीं अधिक गहरी थी, क्योंकि यह सफर सिर्फ कुछ मैचों का नहीं था, यह सफर था अपने सपनों को सच साबित करने का।

टूर्नामेंट देश के छह बड़े शहरों में आयोजित होना था- मुंबई, दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलुरु और अहमदाबाद। हर शहर को पूरी तरह विश्वकप के रंग में रंग दिया गया था। होर्डिंग्स, पोस्टर, विज्ञापन हर जगह खिलाड़ी नज़र आते थे। उन चेहरों में भारतीय कप्तान का चेहरा सबसे ज़्यादा चमक रहा था- साहसी, आत्मविश्वासी और दृढ़ निश्चयी। उनके नेतृत्व में टीम ने पिछले दो वर्षों में शानदार प्रदर्शन किया था और अब वह पूरे विश्व को दिखाने के लिए तैयार थीं कि भारतीय महिलाएँ

सिर्फ खेलती नहीं, जीतना भी जानती हैं।

टूर्नामेंट का पहला मैच मुंबई में था, और भारत का मुकाबला था इंग्लैंड से- एक मजबूत टीम, जिसके पास कई अनुभवी खिलाड़ी थीं। यह वही इंग्लैंड थी जिसने कई बार भारत को बड़े टूर्नामेंटों में चुनौती दी थी। स्टेडियम खचाखच भरा हुआ था। तिरंगे हर ओर लहरा रहे थे, ढोल की आवाज़ें गूंज रही थीं, और दर्शक हर खिलाड़ी का नाम पुकारकर उसे हौसला दे रहे थे। जैसे ही भारत की कप्तान टॉस के लिए मैदान पर उतरीं, पूरा स्टेडियम 'भारत माता की जय' के नारों से भर गया।

भारत ने बल्लेबाजी चुनी। ओपनर मैदान पर उतरीं तो हवा जैसे ठहर गई। शुरुआती ओवरों में इंग्लैंड की गेंदबाजों ने कसी हुई गेंदबाजी की, लेकिन भारतीय ओपनरों ने धैर्य से खेलते हुए धीरे-धीरे लय पकड़ी। पावरप्ले खत्म होते-होते स्कोरबोर्ड अच्छी तरह चलने लगा था। फिर जैसे ही स्पिनर आए, भारतीय बल्लेबाज़ों ने अपने हाथ खोल दिए। चौकों की बौछार, दर्शकों की गर्जना और डगआउट से बजती तालियाँ- सब मिलकर एक खूबसूरत लय पैदा कर रहे थे। भारत ने एक मजबूत स्कोर खड़ा किया।

जब इंग्लैंड बल्लेबाज़ी करने उतरी, भारतीय गेंदबाज़ों ने बेजोड़ प्रदर्शन किया। हर गेंद पर ऊर्जा थी, हर गेंद पर रणनीति थी। जब इंग्लैंड का आखिरी विकेट गिरा, पूरा स्टेडियम गूंज उठा। भारत ने टूर्नामेंट की शुरुआत शानदार जीत से की थी।

इस जीत ने भारतीय टीम का मनोबल बढ़ा दिया। अगले मैच बेंगलुरु और दिल्ली में होने थे। हर मैच में भारत का दबदबा दिखाई दिया। एक मैच में ओपनरों की बड़ी साझेदारी ने टीम को संभाला, दूसरे मैच में गेंदबाजों ने विपक्षी टीम को 150 के अंदर समेट दिया। तीसरे मैच में फील्डर्स ने दो ऐसे कैच पकड़े जिन्हें देखकर कमेंटेटर तक दंग रह गए। हर जीत के साथ भारत की उम्मीदें बढ़ रही थीं, और लोगों का विश्वास और भी मजबूत होता जा रहा था कि यह टूर्नामेंट भारत को ही जीतना है।

जैसे-जैसे लीग मैच आगे बढ़े, भारतीय टीम लगातार अंकतालिका में शीर्ष पर बनी रही। सेमीफ़ाइनल के

लिए पहले से ही भारत का स्थान लगभग तय हो चुका था। लेकिन आखिरी लीग मैच कोलकाता में खेला जाना था- और यह मैच टीम के लिए एक औपचारिकता से अधिक था। खिलाड़ी अंतिम मैच में भी वही जोश दिखाना चाहती थीं। उन्होंने वही किया। यह मैच भी भारत ने शानदार तरीके से जीतकर लीग चरण का अंत अपराजित रहते हुए किया।

अब बारी थी सेमीफ़ाइनल की- वह मैच जिसका इंतजार खिलाड़ी भी कर रही थीं और दर्शक भी। यह मैच ऑस्ट्रेलिया से था- वह टीम जिसने दुनिया पर लंबे समय तक शासन किया था। ऑस्ट्रेलिया की टीम बेहतरीन बल्लेबाजों, अनुभवी गेंदबाजों और अटूट मानसिकता के लिए जानी जाती है। उन्हें हराना किसी भी टीम के लिए आसान नहीं था, लेकिन यह भारत था- अपने घर में खेल रहा भारत- जिसके आगे दुनिया की सबसे मजबूत टीमें भी दबाव में आ जाती थीं।

सेमीफ़ाइनल मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में था। मैच से एक दिन पहले ही स्टेडियम के टिकेट बिक चुके थे। सुबह से ही सड़कों पर भीड़ लगनी शुरू हो गई थी। जैसे ही भारतीय टीम बस से उतरी, दर्शकों ने तिरंगे हवा में लहराने शुरू कर दिए। भारत की कप्तान ने जैसे ही टॉस के लिए कदम बढ़ाया, पूरा स्टेडियम 'भारत! भारत!' के नारों से गूंज उठा।

टॉस भारत ने जीता। बल्लेबाजी चुनी गई। मैदान थोड़ा धीमा था, और गेंद रुककर आ रही थी। भारतीय बल्लेबाजों ने सावधानी से शुरुआत की। ऑस्ट्रेलिया की तेज गेंदबाजों ने शुरुआती ओवरों में भारत को रोककर रखा। लेकिन जैसे-जैसे मैच आगे बढ़ा, भारत की बल्लेबाज़ों ने अपना तालमेल बिठा लिया। चौथे नंबर की बल्लेबाज ने एक शानदार अर्धशतक जमाया—जहाँ हर रन जिम्मेदारी की तरह खेला गया था। अंतिम ओवरों में कुछ ताबड़तोड़ शॉट्स के दम पर भारत सम्मानजनक स्कोर तक पहुंच गया।

अब बारी थी गेंदबाजों की। ऑस्ट्रेलिया के बल्लेबाजों को रोकना आसान नहीं था, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने योजना के साथ गेंदबाजी की। पहली ही विकेट पावरप्ले में गिर गई। स्टेडियम में तूफ़ान-सा उठ गया। लेकिन असली मोड़ तब आया जब भारत की स्पिनर ने लगातार दो गेंदों पर दो विकेट ले लिए। ऑस्ट्रेलिया दबाव में आ गई थी। अंतिम ओवरों में मैच अत्यंत रोमांचक मोड़ पर था। ऑस्ट्रेलिया को 16 गेंदों में 27 रन चाहिए थे। भारत को लगा कि मैच हाथ से निकल भी सकता है। लेकिन तभी भारतीय तेज गेंदबाज ने तीन ओवर में सिर्फ 14 रन देकर दो विकेट झटक लिए। आखिरी ओवर में ऑस्ट्रेलिया को 12 रन चाहिए थे। गेंदबाज़ तैयार खड़ी थी। पहला बॉल, डॉट। दूसरा बॉल, सिंगल। तीसरी बॉल पर विकेट। चौथे बॉल पर दो रन। पांचवें बॉल पर कैच। अब आखिरी गेंद पर 9 रन चाहिए थे, जो असंभव था। जैसे ही

गेंद विकेटकीपर के दस्तानों में समाई, भारत फाइनल में पहुंच चुका था। पूरा देश खुशी से झूम उठा। खिलाड़ी एक-दूसरे को गले लगा रही थीं, आँखों में आंसू थे- यह सिर्फ जीत नहीं, उन सालों की मेहनत का इनाम था।

अब बारी थी फाइनल की। यह मैच अहमदाबाद के विशाल नरेंद्र मोदी स्टेडियम में होना था। स्टेडियम की क्षमता इतनी थी कि वहाँ एक साथ छोटे शहर की आबादी जितनों को बैठाया जा सकता था। टिकटें जारी होते ही कुछ ही घंटों में बिक गई थीं। फाइनल का दिन पूरे देश के लिए किसी बड़े त्योहार जैसा था। टीवी चैनलों पर विशेष कार्यक्रम चल रहे थे, सोशल मीडिया पर खिलाड़ियों के लिए शुभकामनाओं की बारिश हो रही थी, और हर कोई यह सोच रहा था- क्या सचमुच आज इतिहास रच जाएगा?

फाइनल का मुकाबला दक्षिण अफ्रीका से था- एक ऐसी टीम जो टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करके फाइनल तक पहुँची थी। वह टीम साहसी, अनुशासित और विस्फोटक थी। भारत जानता था कि यह मैच आसान नहीं होगा। लेकिन यह भी सच था कि भारत अपने घर में, लाखों लोगों के सामने, हिम्मत हारने वालों में से नहीं था।

मैच शुरू हुआ। भारत ने टॉस जीता और पहले बल्लेबाजी करने का फैसला लिया। शुरुआती ओवरों में दक्षिण अफ्रीका की गेंदबाजों ने भारतीय बल्लेबाजों को रोकने की भरपूर कोशिश की। दो विकेट जल्दी गिर गए जिससे भारतीय खेमे में थोड़ी चिंता फैल गई। लेकिन फिर मध्यक्रम ने गजब की साझेदारी निभाई। 87 रनों की यह साझेदारी मैच का मोड़ साबित हुई। चौके-छक्के नहीं, बल्कि समझदारी भरी सिंगल-डबल और धैर्य से खेले गए शॉट्स ने भारत को संभाल लिया। अंतिम दस ओवरों में भारत ने तेजी पकड़ ली। छक्कों की बरसात नहीं थी, लेकिन हर ओवर में 8-10 रन आ रहे थे, जिससे स्कोर लगातार बढ़ रहा था। भारत ने एक

मजबूत और संघर्षपूर्ण स्कोर खड़ा किया।

अब बारी थी गेंदबाजों की- वह विभाग जो पूरे टूर्नामेंट में भारत की सबसे बड़ी ताकत रहा था। दक्षिण अफ्रीका की ओपनर बेहद प्रतिभाशाली थीं। उन्होंने शुरुआत में ही कुछ शानदार शॉट्स लगाए। भारत पर दबाव बढ़ने लगा। पावरप्ले खत्म होते-होते दक्षिण अफ्रीका का स्कोर 52 पर बिना विकेट था। लगा कि मैच कहीं हाथ से निकल न जाए। तभी भारत की सबसे भरोसेमंद स्पिनर को गेंद सौंपी गई। उनकी पहली ही गेंद पर विकेट गिरा। वह विकेट सिर्फ एक विकेट नहीं था, वह पूरे माहौल को बदल देने वाला क्षण था। स्टेडियम में आग-सा जोश भर गया। फिर अगले ही ओवर में दूसरा विकेट। अब दक्षिण अफ्रीका थोड़ी डगमगाई, लेकिन उनकी एक प्रमुख बल्लेबाज़ ने मोर्चा संभाल रखा था।

मध्य ओवरों में मैच बेहद तनावपूर्ण था। हर रन पर दर्शक अपनी साँसें रोके बैठे थे। भारत की गेंदबाज़ी शानदार थी, लेकिन दक्षिण अफ्रीका भी पीछे हटने वाली टीम नहीं थी। उन्हें अंतिम पाँच ओवरों में 35 रन चाहिए थे। हाथ में छह विकेट थे। मैदान में बैठे लोग चिंता में थे। टीवी पर देखने वाले लाखों दर्शक पसीना पोछ रहे थे। लेकिन मैदान पर खड़ी भारतीय गेंदबाजों की आँखों में डर नहीं, सिर्फ दृढ़ संकल्प था।

पाँचवां आखिरी ओवर भारतीय तेज गेंदबाज करने आईं। पहली गेंद– शानदार यॉर्कर, बल्लेबाज बोल्ड। दूसरी गेंद- डॉट। तीसरी गेंद – वन रन। चौथी गेंद – कैच। यह ओवर भारत की कहानी बदल चुका था। दक्षिण अफ्रीका अब संघर्ष कर रही थी।

आखिरी ओवर। दक्षिण अफ्रीका को 12 गेंदों में 18 रन चाहिए थे, और मैदान पूरी तरह भारत-भारत से गूंज रहा था। पहली गेंद- डॉट। दूसरी- दो रन। तीसरी- सिंगल। चौथी- विकेट। अब दक्षिण अफ्रीका पर दबाव चरम पर था। पाँचवी गेंद- डॉट। आखिरी गेंद पर 13 रन की जरूरत थी। गेंद फेंकी गई और बल्लेबाज ने जोर लगाया, पर गेंद सीधे हवा में उठ गई। फील्डर ने कैच पकड़ लिया।

भारत चैंपियन था। पूरा स्टेडियम जैसे एक साथ आसमान में उड़ गया हो। खिलाड़ी ज़मीन पर घुटनों के बल गिर गईं, आँसू बहने लगे- खुशी के आँसू, जीत के आँसू, संघर्षों के आँसू। कप्तान ने दोनों हाथ उठाए और तिरंगा हवा में लहराया। पूरा देश इस क्षण का साक्षी था। सड़कें जश्न से भर गईं, सोशल मीडिया पर तस्वीरों की बाढ़ आ गई, और भारत ने अपनी बेटियों के नाम वह सम्मान लिख दिया, जिसकी वह बरसों से हकदार थीं।

वह रात भारत की इतिहास में दर्ज हो गई- एक ऐसी रात जब पूरा देश एक साथ मुस्कुराया था। एक ऐसी रात जब बेटियों ने फिर साबित कर दिया था कि सपनों की उड़ान में कोई सीमा नहीं होती।

लेखक गाँव : शब्दों की साधना और सृजन का हिमालय

डॉ. सत्यवान सौरभ
भिवानी, हरियाणा

यह वही भूमि है जहाँ शब्दों की साधना और सृजन की ऊर्जा एक साथ प्रवाहित हो रही है। यहाँ स्थापित देश का पहला 'लेखक गाँव' अब केवल एक परियोजना नहीं, बल्कि एक आंदोलन बन चुका है- वह आंदोलन जो लेखकों, कवियों, विचारकों और कलाकारों को उनके सृजन के मूल स्रोत, अर्थात् प्रकृति और आत्मा से जोड़ता है।विशेष रूप से हिमालयी राज्यों की लोककथाएँ, दुर्लभ पांडुलिपियाँ, सिक्के, मूर्तियाँ और पहाड़ी चित्रकला इस पुस्तकालय की पहचान होंगी।यह पुस्तकालय पहाड़ी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है- हाँ खोली, छज्जा और तिवारी जैसी पारंपरिक संरचनाएँ स्थानीय पत्थर और लकड़ी से बनी हैं।

उत्तराखंड की वादियों में बसा थानो गाँव आज साहित्य और संस्कृति की नई पहचान बन चुका है। यह वही भूमि है जहाँ शब्दों की साधना और सृजन की ऊर्जा एक साथ प्रवाहित हो रही है। यहाँ स्थापित देश का पहला 'लेखक गाँव' अब केवल एक परियोजना नहीं, बल्कि एक आंदोलन बन चुका है- वह आंदोलन जो लेखकों, कवियों, विचारकों और कलाकारों को उनके सृजन के मूल स्रोत, अर्थात् प्रकृति और आत्मा से जोड़ता है।

शब्दों के मठ की परिकल्पना

लेखक गाँव का विचार जितना अनोखा है, उतना ही प्रेरणादायक भी। इस अवधारणा के प्रणेता हैं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, शिक्षाविद् और सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', जिन्होंने अपने जीवन में साहित्य और समाज दोनों को समान रूप से साधा है। उन्होंने यह अनुभव किया कि आज

के लेखक, कवि और विचारक भागदौड़ और शोरगुल भरी दुनिया में वह सृजनात्मक एकांत नहीं पा पाते जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है।इसी विचार से जन्म हुआ "लेखक गाँव" का- एक ऐसी जगह जहाँ शब्दों को सांस लेने की जगह मिले, विचारों को उड़ान मिले और रचनाकारों को आत्म-साक्षात्कार का अवसर।देहरादून के समीप थानो गाँव को इस अनूठे प्रकल्प के लिए चुना गया। यह स्थान हिमालय की गोद में बसा है, जहाँ हरियाली, नदी, पर्वत और शांति की छाया है। यहाँ की प्राकृतिक सौंदर्यता लेखकों के भीतर सोई संवेदनाओं को जगाने का सामर्थ्य रखती है।

एक अद्भुत आयोजन : "स्पर्श हिमालय महोत्सव-2024"

अक्टूबर 2024 में जब स्पर्श हिमालय फाउंडेशन द्वारा "स्पर्श हिमालय महोत्सव" का आयोजन हुआ, तब थानो ने भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा। यह केवल एक महोत्सव नहीं, बल्कि साहित्य, कला और संस्कृति का विराट संगम था। इस पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय आयोजन में 65 से अधिक देशों के लेखक, कवि, कलाकार और विचारक शामिल हुए। उन्होंने न केवल अपनी रचनाएँ और कलाकृतियाँ साझा कीं, बल्कि हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी भावनाएँ भी प्रकट कीं।यह आयोजन इस बात का प्रमाण था कि हिंदी और भारतीय संस्कृति आज भी वैश्विक स्तर पर आकर्षण का केंद्र हैं। इस महोत्सव ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पुनः प्रतिष्ठित किया। साथ ही, यह तय किया कि हर वर्ष इसी स्थान पर साहित्यिक मंथन और सांस्कृतिक संवाद का यह महोत्सव आयोजित किया जाएगा।

3 से 5 नवम्बर 2025 : नए अध्याय की तैयारी

अब एक बार फिर साहित्य प्रेमी और रचनाकार उत्सुक हैं, क्योंकि 3 से 5 नवम्बर 2025 को लेखक गाँव, थानो में "स्पर्श हिमालय महोत्सव-2025" आयोजित होने जा रहा है।इस बार महोत्सव का दायरा और भी व्यापक होगा– देश-विदेश से और अधिक लेखकों, कवियों, अनुवादकों, चित्रकारों, फिल्मकारों और संगीतकारों की भागीदारी होगी।थीम तय की गई है– "शब्द से विश्व तक : संस्कृति का संवाद"। यह विषय अपने आप में साहित्य की वैश्विक भूमिका को रेखांकित करता है।

इस आयोजन में हिंदी भाषा और भारतीय साहित्य के अंतरराष्ट्रीय प्रसार पर विशेष सत्र होंगे। साथ ही युवा लेखकों और डिजिटल युग की रचनात्मकता पर भी विमर्श किया जाएगा। यह आयोजन न केवल अनुभवी लेखकों को बल्कि नई पीढ़ी के रचनाकारों को भी एक साझा मंच प्रदान करेगा।

रचनाकारों के लिए स्वर्ग समान वातावरण

लेखक गाँव की संरचना पूरी तरह साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखकर की गई है। यहाँ स्थित "लेखक कुटीर" उन रचनाकारों के निवास हेतु बनाए गए हैं जो कुछ समय के लिए प्रकृति की गोद में रहकर अपने लेखन पर केंद्रित होना चाहते हैं।

हर कुटीर में आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ सादगी और पहाड़ी परंपरा की झलक मिलती है। इन कुटीरों के नाम प्रसिद्ध लेखकों और कवियों के नाम पर रखे जाने

का प्रस्ताव है- ताकि आने वाले लेखक उनसे प्रेरणा ले सकें। यहाँ निर्मित "हिमालयी पुस्तकालय" किसी मंदिर से कम नहीं। इसमें साहित्य, संस्कृति, इतिहास, भूगोल, दर्शन, राजनीति और विज्ञान से जुड़ी पुस्तकों का विशाल संग्रह है। विशेष रूप से हिमालयी राज्यों की लोककथाएँ, दुर्लभ पांडुलिपियाँ, सिक्के, मूर्तियाँ और पहाड़ी चित्रकला इस पुस्तकालय की पहचान होंगी। यह पुस्तकालय पहाड़ी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है- हाँ खोली, छज्जा और तिवारी जैसी पारंपरिक संरचनाएँ स्थानीय पत्थर और लकड़ी से बनी हैं।

स्पर्श हिमालय महोत्सव और लेखक गाँव की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि इसने हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाया है। विदेशों से आए लेखकों ने न केवल हिंदी के साहित्य को समझा बल्कि उसे अपनी भाषा में अनुवादित करने का संकल्प भी लिया। इस प्रकार, ये लेखक अपने-अपने देशों में हिंदी के ब्रांड एम्बेसडर बन रहे हैं। यह प्रयास भारत को सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

प्रकृति, संस्कृति और आत्मा का त्रिवेणी संगम

थानो का यह लेखक गाँव केवल भवनों का समूह नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक पारिस्थितिकी तंत्र है। यहाँ की संजिवनी वाटिका और नक्षत्र-नवग्रह वाटिका रचनाकारों को प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ संवाद स्थापित करने की प्रेरणा देती हैं।यह स्थान ध्यान, चिंतन और आत्मावलोकन के लिए आदर्श है। पहाड़ों की ताजी हवा, पक्षियों का मधुर कलरव और प्रकृति की नीरवता लेखक को भीतर तक झकझोर देती है, जिससे सृजन स्वतः प्रवाहित होने लगता है।जो भी व्यक्ति यहाँ कुछ दिन बिताता है, वह स्वयं में एक नई ऊर्जा और दृष्टि लेकर लौटता है। यह स्थान मनुष्य के भीतर संवेदना, करुणा और सृजनशीलता के बीज बोता है- ठीक वैसे ही जैसे प्राचीन काल में तपोवन साधना के केंद्र हुआ करते थे।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण

"लेखक गाँव" केवल आधुनिक साहित्यिक प्रयोगों का मंच नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का केंद्र भी है। यहाँ स्थित गंगा और हिमालय संग्रहालय में प्राचीन मूर्तियाँ, लोक कलाएँ, सिक्के, हस्तशिल्प, और दुर्लभ दस्तावेज़ प्रदर्शित किए जाएंगे।यह संग्रहालय युवाओं को यह समझाने का माध्यम बनेगा कि हमारी संस्कृति केवल इतिहास की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान का आधार भी है।इस स्थान का उद्देश्य है- "साहित्य के माध्यम से संस्कृति की रक्षा, और संस्कृति के माध्यम से मानवता का विकास।"

वैश्विक संदर्भ में हिंदी का विस्तार

स्पर्श हिमालय महोत्सव और लेखक गाँव की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि इसने हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर सम्मान दिलाया है। विदेशों से आए लेखकों ने न केवल हिंदी के साहित्य को समझा बल्कि उसे अपनी भाषा में अनुवादित करने का संकल्प भी लिया। इस प्रकार, ये लेखक अपने-अपने देशों में हिंदी के ब्रांड एम्बेसडर बन रहे हैं।यह प्रयास भारत को सॉफ्ट पावर के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम है।

भविष्य की राह

थानो का लेखक गाँव आज एक मॉडल बन चुका है। आने वाले समय में ऐसे और गाँव देश के अन्य हिस्सों में भी विकसित किए जा सकते हैं—जैसे लेखक धाम या कला ग्राम।ये स्थान न केवल पर्यटन को बढ़ावा देंगे, बल्कि सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को भी मजबूत करेंगे।लेखक, शोधकर्ता, विद्यार्थी और कला प्रेमी यहाँ आकर अपनी सृजनशीलता को नया आयाम दे सकेंगे।

शब्दों का हिमालय

थानो का "लेखक गाँव" वास्तव में सृजन की तपोभूमि है। यह वह स्थान है जहाँ शब्द साधना बन जाते हैं और लेखन पूजा का रूप ले लेता है।

यह गाँव हमें याद दिलाता है कि तकनीक और प्रगति के इस युग में भी साहित्य की जड़ें प्रकृति और आत्मा से जुड़ी हैं।आने वाले 3 से 5 नवम्बर 2025 को जब एक बार फिर स्पर्श हिमालय महोत्सव का नया अध्याय आरंभ होगा, तब यह केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं होगा, बल्कि भारत की साहित्यिक चेतना का उत्सव होगा- एक ऐसा उत्सव जो शब्दों को पर्वत की ऊँचाइयों तक ले जाएगा।"लेखक गाँव" इस बात का प्रमाण है कि जब साहित्य और संस्कृति एक साथ चलते हैं, तो समाज केवल प्रगतिशील नहीं होता- वह प्रेरणास्रोत बन जाता है। यह गाँव आने वाले समय में निश्चय ही भारत की सांस्कृतिक आत्मा का केंद्र बनेगा- जहाँ हर शब्द हिमालय की तरह अडिग, और हर विचार गंगा की तरह पवित्र होगा।

डायबिटीज की समस्या बिगड़ती-जीवनशैली

डॉ. बी. आर. नलवाया
मंदसौर

डायबिटीज पहले अमूमन अधेड़ उम्र के लोगों में होती थी। अब यह बच्चों : युवकों को भी शिकंजे में ले रही है। भारत में करीब 10 करोड़ लोगों को डायबिटीज है। वहीं विश्व में 44 करोड़ लोग इससे पीड़ित है। भारत में डायबिटीज की प्रचलित दर 11.5 प्रतिशत है, जबकि प्री डायबिटीज के मामलों की दर 15.3 प्रतिशत तक पहुँच गई है, यानी देश का हर 10 मे से एक व्यक्ति इस बीमारी से प्रभावित है। एक अनुमान के अनुसार 85 करोड़ लोग दुनिया भर में डायबिटीज के मरीज 2050 तक हो जाएंगे।

डायबिटीज (मधुमेह) की समस्या भारत समेत पूरे विश्व में तेजी से बढ़ रही है। इसके चलते हमें कई स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। डायबिटीज पहले अमूमन अधेड़ उम्र के लोगों में होती थी। अब यह बच्चों : युवकों को भी शिकंजे में ले रही है। भारत में करीब 10 करोड़ लोगों को डायबिटीज है। वहीं विश्व में 44 करोड़ लोग इससे पीड़ित है। भारत में डायबिटीज की प्रचलित दर 11.5 प्रतिशत है, जबकि प्री डायबिटीज के मामलों की दर 15.3 प्रतिशत तक पहुँच गई है, यानी देश का हर 10 मे से एक व्यक्ति इस बीमारी से प्रभावित है। एक अनुमान के अनुसार 85 करोड़ लोग दुनिया भर में डायबिटीज के मरीज 2050 तक हो जाएंगे।

डायबिटीज में आपका शरीर पर्याप्त या बिलकुल भी इंसुलिन का उत्पादित नहीं कर पा रहा है या फिर उत्पादित इंसुलिन की सही तरीके से शरीर में उपयोग नहीं हो पा रहा है।

डायबिटीज होने के तीन कारण- पहला अनुवांशिक, दूसरा शारीरिक मेहनत की कमी और तीसरा मोटापा। डायबिटीज के लगभग 60 प्रतिशत पीड़ित व्यक्तियों

में इसके लक्षण दिखाई ही नहीं पढ़ते है। ऐसे में इसकी पहचान दो तरह से होती है। पहला लक्षणों के आधार पर और दूसरा खून की जांच से। ब्लड टेस्ट में यदि खाली पेट शुगर 126 से अधिक और खाने के दो घण्टे के बाद 200 से अधिक है तो व्यक्ति डायबिटिक है। एचबीएवनसी 6.5 से अधिक है तो इसका अर्थ भी यह है... परीक्षण-व्यक्ति में? डायबिटीज है। डायबिटीज का शरीर प्रवेश को यूँ समझे यदि व्यक्ति के जीवन में अनियमित जीवनशैली, अस्वास्थ्यकर आहार,मोटापा और आनुवंशिक प्रकृति रही है। इसके बचाव के लिए संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, वजन पर नियंत्रण, और तनाव प्रबंधन महत्वपूर्ण है।विश्व स्तर पर बढ़ती इस गंभीर और क्रोनिक बीमारी के बारे में लोगों को जागरूक करने, इससे बचाव को लेकर लोगों को शिक्षित करने के उद्देश्य से हर वर्ष 14 नवंबर को विश्व डायबिटीज डे मनाया जाता है।

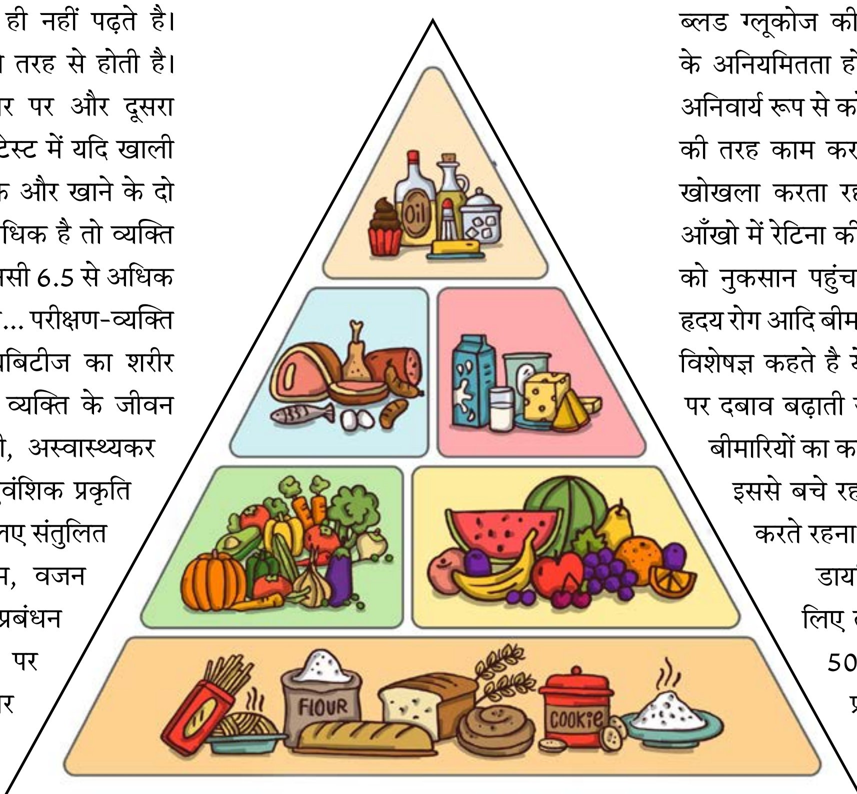

ढंड के मौसम में डायबिटीज मरीजों को अधिक सजग रहना होगा। तापमान में गिरावट के साथ प्रदूषण, अस्थमा, फेंफड़ों व एलर्जी से ग्रसित रोगियों के लिए घातक हो सकता है। इस मौसम में वातावरण में घूले सूक्ष्म कण महत्वपूर्ण अंगों में पेफ्क्रियाज, फेफड़े व आखों को नुकसान पहुंचाकर रोग की जटिलता को बढ़ा देते है। ऐसे में डायबिटीक को खासी, जुकाम, सांस फूलने जैसी समस्या का इजाफा हो जाता है।

डायबिटीज से पहले प्री-डायबिटीज स्टेज होता है। यहाँ शुगर का स्तर नियंत्रण में होती है। इस स्टेज पर अगर थोड़ी सावधानी बढ़ा दे तो इससे बचना कठिन नहीं है। इस स्तर पर भविष्य में डायबिटीज के शिकार हो सकते है। अतः इस स्तर डाक्टर से संपर्क करले तो उस स्तर पर इसे रोका जा सकता है। टाइप-2 डायबिटीज में दुनियाभर में सबसे ज्यादा मरीज होते हैं। विशेषज्ञ बताते है कि 2045 तक देश में-12.49 करोड़ लोग टाइप 2 राइप के डायबिटीक होने की संभावना है।

टाइप-2 में शरीर इंसुलिन का सही उपयोग नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में ब्लड ग्लूकोज की जाँच को नियमित कर के अनियमितता होने पर डाक्टर से सम्पर्क अनिवार्य रूप से करें। यह रोग शरीर में दीपक की तरह काम करता है और उसे अंदर से खोखला करता रहता है। इसकी वजह से आँखो में रेटिना की नाजुक रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचता है, गुर्दे की गड़बडी, ह्दय रोग आदि बीमारियाँ हो जाती है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते है ये बीमारियाँ स्वास्थ्य क्षेत्र पर दबाव बढ़ाती जा रही है साथ कई अर्थ बीमारियों का कारण भी बनती है। इसलिए इससे बचे रहने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

डायबिटीज से बचने के लिए तथा उपचार में भोजन में 50 प्रतिशत सब्जिया-25 प्रतिशत साबूत अनाज, 25 प्रतिशत प्रोटीन, भोजन के बाद 10 मिनट वॉक, सुबह उठने के बाद 30 मिनट में नाश्ता करें इससे मेटाबालिज्म सुधरेगा व ऊर्जा स्तर बढ़ेगी, थोडे-थोड़े समय पर कुछ खाते रहेनी, सप्ताह में कम रथ से कम 4 दिन 40 मिनट व्यायाम, सात से आठ घंटे नींद का नियम बने, रोज 30 ग्राम फाईबर से कोलेस्ट्राल औरवसा को शरीर से बाहर करता, आदि। डायबिटीज को यदि पहले साल से ही नियंत्रित कर लिया जाए, तो शरीर को इससे निपटने में बेहद आसानी होती हैं। अब यह है कि शुगर की जाँच, ह्दय, किडनी की नियमित जांच और योग, व्यायाम ध्यान से डायबिटीज पर नियंत्रण संभव है। विश्व मधुमेह दिवस पर केवल सामान्य जानकारी से अवगत किया गया है। विशेष रूप से डॉक्टर से संपर्क करना ही चाहिए।

अवस्थाओं का रहस्यमयी विज्ञान

हमारे जीवन में अवस्थाओं का खेल ही है जो हमारे एक एक क्षण को बनाता है। यह सब कुछ सूक्ष्म अवस्थाओं का विज्ञान ही है। जो हो रहा है उसे वैसे ही होना है। सभी कुछ वैसे ही घटित होना है। हमारी नासमझी हमे दुख में डालती है। गुरुवर चर्चाओं में यह कई बार स्पष्ट कर चुके है कि हमारा जीवन विभिन्न अवस्थाओं कि कड़ियावस्था अवश्यक होती है। जिन जिन अवस्थाओं का मिलान होना होता वह अवस्था हमारी राह में आ जाती है। हमारी वर्तमान अवस्था में अवश्यक मिलानकर के हमारी यात्रा को पूर्ण करने में सहायक होती है।

उमेश मानव

"मैं तुझमें उतना ही हूँ, जितना तू मुझमें है"

हमारे आपके जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, जितने भी उतार चढ़ाव आते है। हम सब इन आती जाती परिस्थितियो से कभी विचलित हो, कभी मग्न हो जीते चले जाते है। हर एक घटना से किसी न किसी प्रकार प्रभावित होते हुए हम बहुत बार उन्हीं घटनाओं में ठहर कर रह जाते है। वास्तव में जीवन चलने का नाम है और हम घटनाओं से आहत हो कही ठहर कर दर्द संजो लेते है। गुरुवर श्री अशोक मानवजी बताते है कि यह जो कुछ भी हमारे साथ होता रहता है। वह सभी प्राकृतिक विज्ञान के तहत होता है। हमारे जीवन में अवस्थाओं का खेल ही है जो हमारे एक एक क्षण को बनाता है। यह सब कुछ सूक्ष्म अवस्थाओं का विज्ञान ही है। जो हो रहा है उसे वैसे ही होना है। सभी कुछ वैसे ही घटित होना है। हमारी नासमझी हमे दुख में डालती है। गुरुवर चर्चाओं में यह कई बार स्पष्ट कर चुके है कि हमारा जीवन विभिन्न अवस्थाओं कि कड़ियावस्था अवश्यक होती है। जिन जिन अवस्थाओं का मिलान होना होता वह अवस्था हमारी राह में आ जाती है। हमारी वर्तमान अवस्था में अवश्यक मिलानकर के हमारी यात्रा को पूर्ण करने में सहायक होती है।

यहाँ गुरुवर द्वारा अवस्थाओं का रहस्य जो बताया गया उसके बारे में बताता हूँ। गुरुवर स्पष्ट करते है कि जितनी देर किसी अवस्था से हमारा मिलान होना होता है वह प्राकृतिक विज्ञान के तहत आश्चर्यजनक रूप से हमसे जुड़ जाती है। यह जुड़ाव जरूरी नहीं कि प्रत्यक्ष रुप से ही हो। गुरुवर कहते है कि सारी आकाशगंगाओं में वह अवस्था कही पर भी हो उसकी ऊर्जा हमारी

अवस्था से स्वयं आकर जुड़ जायेगी। हम चाहे या न चाहे यह मिलान होकर ही रहता है। इसमें यह भी ध्यान देने वाली बात है कि कई बार हमें इसका भान भी नहीं होता है। गुरुवर कहते है कि यह सभी कुछ हमारी ही पूर्व इच्छाओं का ही प्रभाव होता है। जो कुछ हमने पूर्व में रख छोड़ा है, जो इच्छा बनाई है वह सब ऊर्जा का रूप ले लेती है और हमसे समय-समय पर जुड़ती रहती है। यह एक प्रकार से हमारी ही इच्छा से जो प्रदूषण बनता है उसे खत्म करने के लिए ही है। यह अवस्थाओं का मिलान, अवस्थाओं को मिटाना है ताकि हम जीवन मे इकट्ठा की गई भावनाओं को मिटाते चले और इच्छा रहित होकर स्वतंत्र बन अपनी परम अवस्था को प्राप्त हों। हम उसे मोक्ष भी कह सकते है। बहुत बार हम लोगों को कहते सुनते है वे फलां व्यक्ति को जानते है, किसी के बारे ये जानते है वो जानते है। जबकि सत्य कुछ और ही है, गुरुवर कहते है कि कोई भी किसी अन्य व्यक्ति के बारे में नहीं जान सकता। यह जरूर है कि कोई किसी के बारे में एक दो जानकारी रखता हो परन्तु कोई किसी की वास्तविक अवस्था के बारे मे नहीं जान सकता।

हम किसी के बारे में उतना ही जान सकते है, जितना की हमारी अवस्था में मिलान की जरूरत है उससे अधिक नही जान सकते। जितना कोई किसी में है उतना ही दूसरा उसके बारे में जान सकता है। जैसे ही मिलान का काम पूरा होता है दूरी अपने आप ही बन जाती है। अब न ही उस तरफ कोई रुझान होगा न ही कोई मिलान, सब कुछ रहस्य में समा जाता है। सभी के जीवन में मित्र बनते है कुछ समय बहुत अच्छे रहने के बाद संबध टूट जाता है और मित्र एक दूसरे से दूर हो जाते है। कई बार दुबारा कभी भी साथ न आने के लिए। समाज मे लोग इसे किसी का बदल जाना या काम निकल जाना ही समझते है। जबकि रासायनिक अवस्था में मिलान पूरा हो जाने पर ऐसा होता है। ऐसी परिस्थितियों में लोग एक दूसरे पर दोषारोपण करते है। इसी प्रकार प्रेम संबंधो में भी होता है। जब दोस्ती

टूटती है, दो लोग अलग होते है तो बहुत बुरा महसूस करते है, दुखी रहते है, जीवनभर उदास रहते है। यदि उन्हें यह अवस्थाओं के मिलान का रहस्य समझ आ जायें तो अपनी खिन्नता से वे बाहर आकर संभल सकते है। लोगों को यह समझ आ जाये तो उनका जीना बहुत हद तक सरल हो सकता है। जितनी देर किसी का साथ हमारे लिए होना होता है उतनी ही देर रहता है। फिर लोग स्वेच्छा से अलग हो जाते है। कुछ समय दुखी रहे के बाद वे शांत और आनन्दित रहते है। अवस्थाएं बस उतने समय ही साथ रहती है जितने समय मिलान होना रहता है और किसी नये गुण का निर्माण होना होता है। यह किसी के साथ किसी व्यक्ति को लेकर अचानक हो सकता है या समय अंतराल में।

गुरुवर कहते है कि इसी प्रकार हम आध्यात्मिक जगत का भी उदाहरण ले सकते है। जहाँ कुछ साधक अल्प समय में ही सिद्धि प्राप्त कर लेते है या इष्ट के दर्शन पा लेते है। दूसरी तरफ ऐसे भी है जो वर्षो साधना करके भी कुछ प्राप्त नहीं कर पाते। गुरुवर कहते है कि इसमें साधक या साधना कि कमी नहीं है। यहाँ अवस्थाओं के विज्ञान का ही खेल है। साधक से वही अवस्था आ करके मिलेगी जिसकी आवश्यकता उसको होगी, या दोनों अवस्थाओं का एक दूसरे में मिलान होगा। उसी का साधक को अनुभव होगा, दर्शन होगा। इसका उदाहरण सामान्य जीवन से लिया जा सकता है कि जिनको अपने इष्ट या देवी-देवताओं के दर्शन हुए वे अपने शिष्यों को उनके दर्शन नहीं करा सके। स्पष्ट है कि हम किसी के बारे में उतना ही जान सकते है जितनी उसकी अवस्था मेरे मे होगी।

गुरुवर एक उदाहरण से समझाते है कि ये ऐसा ही है जैसे कि मेरी कोई चीज किसी दूसरे के घर पर रखी है वह मेरी चीज है और उसे इस्तेमाल करने की कला मेरे ही पास है दूसरे के पास नही है, तो दूसरा उसे इस्तेमाल नहीं कर सकता। हम, एक दूसरे से उतना ही जुड़े रहेगे जितना की उस चीज को इस्तेमाल करने के लिए चाहिए। दूसरा उसे इस्तेमाल कर नही सकता, पर क्योंकि किसी वजह से वह उसके पास है तो हमसे जुड़ाव रहेगा। और उस चीज का रासायनिक रूप से जो धीरे धीरे हम इस्तेमाल करेगे, उसी रफ्तार में वह चीज मिटती जायेगी। जैसे ही वह पूरी तरह से मिट जायेगी हम दोनों का रासायनिक मिलान पूरा हो जायेगा और हम एक दूसरे से दूर हो जायेंगे।

यदि आपका कोई अवस्था बची नही रह रही है तो आप जल्द ही मोक्ष पा लेंगे। नव वर्ष की मंगल शुभकामनाओं के साथ।

दर्द की एक रात

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

दर्द में एक शक्ति होती है जो यातना सहने का हौसला देता है। घनीभूत दर्द को केवल एक रात में कई जन्मों के जैसा महसूस कर लिया था मैंने। शायद हर जन्म का यही अंत होता रहा हैं। धन दौलत कोई कहां लेकर जाता है सब यहीं के यहीं धरा रह जाता है। सिर्फ अंत में "निधन" लिख दिया जाता है।

अचानक से लगा जीवन की यह आखिरी रात है ! मौत ने हमारे जीवन का रील बनाना शुरू कर दिया था। डरा हुआ मन आज मौत की खौफ़ से और डर गया था। हर तरफ मौत के ही खंज़रनुमा पंजे मुझे साफ दिखाई देने लगे थे। कहा जाता है डरा हुआ आदमी अपने जीवन में कई-कई बार मरता है। इससे पहले मैं मौत से कभी नहीं डरा था। हां बचपन से लेकर जवानी तक हर साल दो चार बार मौत से भिडंत हो जरूर जाती रही है। कभी रोड़ पर तो कभी जीवन की भागदौड़ पर। लेकिन कभी डरा नहीं था- "मौत तू मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है..!" कहता और आगे बढ़ जाता रहा। परन्तु उस रात मौत ने जो जाल बिछाया उससे मेरा शातिर दिमाग़ भी मात खा गया था और मैं जैसे उसके कब्जे में आ गया था..!

सालों पहले मैंने अमिताभ बच्चन की एक फिल्म देखी थी "बरसात की एक रात" आपने भी देखी होगी तो आपको याद होगा, एक रात में उनके जीवन में क्या कुछ हो जाता है। लेकिन वो उनकी रील लाईफ थी। पर यह मेरी रीयल लाईफ थी। मौत से सीधा साक्षात्कार ! उस सुबह की एक चोट ने मुझे मौत के इतने करीब लाकर खड़ा कर दिया था जहां से बहुत कम लोग ही बच निकल पाते हैं। और ऊपर से मैं ठहरा काल्पनिक दिव्य महापुरुषों का घोर विरोधी- घोर नास्तिक, ईश्वर अल्लाह के वजूदों को सीधे- सीधे नकारने वाला। और पाखंडियों का ढोल फाडने वाला, सो यमराज का तो आना ही था। आया भी परन्तु इतनी शातिर गति और दबे पाँव आयेगा यह पता नहीं था। आदमी जब मौत को साक्षात सामने पाता है तो सबसे पहले वह सोचना छोड़ देता है। उसकी बुद्धि विवेक कुंद हो जाती है। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया बल्कि मेरी सोच यहीं से शुरू हुई थी। मरने के डर से घबराया हुआ आदमी पहले अपने किये कर्मों की याद करने बैठ जाता है और रोना शुरू कर देता है जो आदमी जीवन भर गलत को गलत नहीं कह पाता और बिना रीढ़ वाला बन कर जीता है ऐसों को निबटाने में यमराज को बड़ा मजा आता होगा। उसका काम और भी आसान हो जाता होगा। और उसे जल्दी मल्दी समेट चल देता होगा। लेकिन यमराज मेरे साथ ऐसा कोई जोर जबरजस्ती कर न सका। दर्द में एक शक्ति होती है जो यातना सहने का हौसला देता है। घनीभूत दर्द को केवल एक रात में कई जन्मों के जैसा महसूस कर लिया था मैंने। शायद हर जन्म का यही अंत होता रहा हैं। धन दौलत कोई कहां लेकर जाता है सब यहीं के यहीं धरा रह जाता है। सिर्फ अंत में "निधन" लिख दिया जाता है।

हमेशा की तरह उस दिन भी मैंने सुबह की शुरुआत अच्छे काम से किया था। पहले की तरह गाय बैलों को गुहाल (मवेशी घर) से निकाल कर बाहर उनके खुंटों से बांध दिये थे। फिर पुयाल लेने अंदर चला गया। मुझे क्या पता था कि यमराज मेरे खिलाफ षड्यंत्र रच पहले से वहां बैठा हुआ है। दरवाजे के भीतर पक्के फर्स पर पानी फैला हुआ था जिसे मैं तत्काल देख न पाया। दांया पैर जैसे ही अंदर रखा हवाई चप्पल मेरा बासठ किलो का भार संभाल न सका और आगे सरक लिया। जब तक मैं संभलता किसी ने जैसे पीछे खींच लिया और मैं धडाम से पीठ के बल चौखट पर गिर पडा। घर में बाल बुतरू कोई थे नहीं। घरवाली जो थी वो बकरी बेचकर सो रही थी। इस तरह किसी ने मेरे गिरने की आवाज भी नहीं सुनी। जैसे घने जंगलों में कभी कभी विशाल पेड़ गिर जाते हैं और लोगों को खबर तक नहीं होती है।

बचपन से ही घरेलू जानवरों के प्रति मेरा बहुत लगाव रहा है। कहते है जब मेरी उम्र चार-

पांच साल की थी, बाप मुझे काडा/ भैंसिया (भैंसा/भैंसिया) के पीछे लगा देता और खुद ओझा-वैध वाला काम करता फिरता था। तब मैं पुंछ के सहारे काडे (भैंसा) की पीठ पर चढ़ जाता और घंटो उसकी पीठ पर बैठा रहता। कभी कभी तो उसकी पीठ को ही बिछावन समझ सो भी जाता। इस कारण काडे की पीठ से कितनों बार जमीन पर गिरा याद नहीं था।

मां बाप का दौर के साथ ही घर में काडा-भैंसा का दौर भी समाप्त हो गया। तब से हमने गाय बैल रख लिये थे। उन्हें ही पुयाल देने के लिए सुबह उठा था। पुयाल तो मैं दे नहीं सका। हां, पत्नी को जगा कर उसे चिंता में डाल जरूर दिया "मैं पीठ के बल दरवाजे पर गिर गया हूँ। दर्द काफी हो रहा है, जानवरों को पुयाल दे दो, फिर आकर पीठ पर यूनानी तेल मालिस कर दो, उठो-जाओ!"

" पर यह हुआ कैसे..?"

"दरवाजे के पास पानी पडा है, पैर फिसल गया..!"

सुबह का आठ बजते बजते पीठ का दर्द बासठ डिग्री पार कर गया। मैं सीधे एक झोला छाप डाक्टर के पास पहुंचा और दर्दे दिल बंया किया। वह अण्डरबियर सोये उठा। उसने पहले अपने बदन पर तौलिया लपेटा फिर मुझे एक चौकी पर लिटा दिया। फिर चूतड़ पर एक सूई लगाई और खाने को दो गोली देकर उसने कहा- "इसे खा लो, शाम तक दर्द कम हो जायेगा..।"

इसी के साथ मै आफिस चला गया था। दिन भर आफिस में काम किया। शाम को घर लौटा तो वाकई मे दर्द कम हो गया था। मैंने सोचा था कि दर्द बढेगा तो अपने कंपनी डाक्टर के पास जाऊंगा और दर्द कम रहेगा तो आफिस जाऊंगा। दर्द कम रहा। मैं आफिस चला गया। शाम तक पता नहीं चला कि दर्द बढ़ रहा है। रात का खाना खाया और सो गया। यूनानी तेल गरम कर पीठ पर मालिस कर पत्नी भी सो गयी।

यमराज को इसी घड़ी का शायद इंतज़ार था। उसने बड़ी चालाकी से रात का समय को चुना था। घर के कोने में जैसे कहीं दूबका हुआ था। जैसे जैसे रात गहराती गयी। दर्द का पारा उसी अनुपात बढ़ता गया। करवटें बदलना अब मुश्किल होने लगा था। सांसे भारी पडने लगी थी। समझ नहीं पा रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। दिन भर जो दर्द मामूली लग रहा था अब वही दिल को दबाने जैसा करने लगा था। सासें फूलने लगी थी। मेरी मति इस प्रकार हर ली गई थी कि आध किलो मीटर दूर रहने वाले उस झोला छाप डाक्टर को भी फोन करने तक की सूध न थी। जिसे बुला कर दर्द निवारक सूई ले सकूँ। हालात इतनी बिगड गयी थी कि मैं अब चलने और बोलने के भी काबिल न रह गया था। रात के बारह कबके बज चूका था। अब मेरे जीवन का बारह बजने वाला था! मैं बड़ी शिद्दत से बैंकों में पड़े उन रुपयों को याद कर रहा था जो मेरे बाद मेरे प्रिय जनों को मिलने वाला था। जिसे हमने जुआ अड्डा, वेश्याओं के कोठा और शराब की दुकानों में जाने पर बड़ी मुश्किल से रोके रखा था और पानी पी पी कर भविष्य के लिए बचा रखा था। उस भविष्य के लिए जिसका खुद का कोई भविष्य नहीं होता है। जाने उन रुपयों का अब क्या होगा, उनका मूल्य क्या रहेगा अब उन पर बेटा पुतोहू का एकाधिकार हो जायेगा! मुझे याद आ रही थी वो जमीन भी जिसे एक मगरूर और अंहकारी आदमी के कब्जे से आज़ाद कराया था। अब बेटा के काम आयेगा फिर उसके बेटे का, फिर उसके बेटे का, हमें तो दो गज ही नसीब होगी! फिर याद आई उन विचारों का, उन संस्कारों का जो हमें विरासत में मिली थी जिसे पुरखों ने हमारे बाप दादाओं को सौंपा था। किसी अमूल्य संपत्ति की तरह। जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही थीं। हमारे बाद क्या वह परम्परा कायम रह पायेगी । आज के युवा जिस तरह संस्कारों से विमुख होते जा रहे हैं। उस पर बहुत चिंतन मनन की जरूरत है। पर आज युवाओं के पास समय कहां है ऐसे कामो के लिए। दादी के मुख से बचपन में सुना था कि पूर्वज कभी मंदिरों में पूजा पाठ करने नहीं जाते थे। वो कर्मयोगी थे। कर्म की पूजा करते थे। उनका कहना था, मंदिरों में पूजा पाठ सिर्फ एक भ्रम है। पूजा करने से किसी का पेट नहीं भरता। पेट पालने के लिए करम करने पडते हैं। खेत खलिहान ही हमारे लिए मंदिर है। "वो सावन में दिन भर खेतों में काम करते और रात को खाना खाकर गहरी नींद सो जाते थे। आज की तरह वे नींद की गोली नहीं लेते थे। कोई चिंता नहीं कोई फिकर नहीं। देह में तेल मालिश कर हम भी उसी के बगल में सुकून की नींद सो जाती थीं।"

हमारे जीवन में तो बीस सालों से सुखाड़ पडा हुआ था। प्यार के एक बूंद के लिए तरसता रहा हूँ। अब मरने की बेला में कौन प्यास बुझाने आयेगा। पत्नी को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं था। वह संसारिक जीवन से विमुख होकर बकरी जीवन चुन लिया था। लेकिन मेरे संसारिक जीवन की चाहत अभी खत्म नहीं हुई थी। पर लगता है अब प्यासा ही मरना पडेगा!

उस रात की सुबह भी कहां जल्दी हुई। मुर्गे की बांग हुई तो भोर भोर की भान हुई, तभी मैं दरवाजा खोल दर्द से बिलबिलाते हुई इस कदर बाहर की ओर भागा जैसे किसी ने रात भर कैद कर रखा हो। रात भर में पहली बार फोन पर ध्यान गया, फोन दामाद को लगाया, बेटा दूर था आने में देर हो जाती और यहां प्राण हलक पर अटकी हुई थी। दामाद से कहा- "बाबू चार चक्का गाड़ी लेकर जल्दी पहुंचो, दर्द से प्राण निकला जा रहा है..!" और फोन कट हो गया था।

"आप बडे. भाग्यशाली है..!" डाक्टर साकेत ने एक्सरे देखते हुए कहा था- "जेनरली, इस तरह के एक्सीडेंट में या तो रीढ़ की हड्डी टुटती है या फिर कमर की हड्डी। आपका दोनों सही सलामत है। बस एक माह बेड रेस्ट करें। पसलीयों को जुडने में ज्यादा वक्त नहीं लगता..!"

दवा उन्हीं के मेडिकल स्टोर से मिल गई, उसे लिए और हम घर की ओर चल पड़े। सुबह हो चुकी थी और सूई पडने से दर्द का भी कम होना शुरू हो गया था। रात के यमराज का कहीं पता नहीं था।

बदलते समाज में सामाजिक परिवर्तन

सुषमा त्रिपाठी

समाज एक निरंतर परिवर्तनशील इकाई है, जो समय-समय पर अपने स्वरूप, संरचना और मूल्यों में बदलाव करता रहता है। बदलते परिवेश, तकनीकी प्रगति, आर्थिक दबाव, राजनीतिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पीढ़ियों की बदलती सोच के कारण समाज में परिवर्तन स्वाभाविक रूप से होते रहते हैं। कोई भी समाज स्थिर नहीं रहता; वह अपने अनुभवों, समस्याओं और उपलब्धियों से सीखता है और आगे की ओर बढ़ता रहता है। यही निरंतर बदलती परिस्थितियाँ सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति और जीवनशैली को निर्धारित करती हैं।

भारत जैसे विशाल और विविध देश में कई गंभीर समस्याएँ रही हैं, जिनमें जनसंख्या वृद्धि, गरीबी, बेरोज़गारी, अशिक्षा और आर्थिक पिछड़ापन प्रमुख हैं। इन समस्याओं के कारण सामाजिक असमानता, अपराधों में वृद्धि, नशीले पदार्थों का प्रसार, भ्रष्टाचार और सामाजिक तनाव जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, जो समाज के संतुलन को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं का समाधान केवल सतही सुधारों से संभव नहीं होता, बल्कि इसके लिए सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे में सुधार की आवश्यकता होती है, ताकि समाज अपनी मूलभूत कमजोरियों को पहचान कर आगे बढ़ सके।

समाज में होने वाला परिवर्तन केवल बाहरी परिस्थितियों का परिणाम नहीं, बल्कि पीढ़ियों के सोचने, समझने और जीने के तरीकों का प्रतिबिंब भी होता है। जैसे-जैसे समय बदलता है, परम्पराओं, मान्यताओं और मूल्यों में भी परिवर्तन अनिवार्य रूप से देखने को मिलता है। आधुनिक युग में तकनीक ने लोगों के जीवन को जिस तेजी से बदला है, वह सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण बन चुका है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, परिवहन साधनों और नई खोजों ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है और नए अवसरों के साथ-साथ नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

समाज में होने वाला परिवर्तन केवल बाहरी परिस्थितियों का परिणाम नहीं, बल्कि पीढ़ियों के सोचने, समझने और जीने के तरीकों का प्रतिबिंब भी होता है। जैसे-जैसे समय बदलता है, परम्पराओं, मान्यताओं और मूल्यों में भी परिवर्तन अनिवार्य रूप से देखने को मिलता है। आधुनिक युग में तकनीक ने लोगों के जीवन को जिस तेजी से बदला है, वह सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण बन चुका है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, परिवहन साधनों और नई खोजों ने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है और

नए अवसरों के साथ-साथ नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

आर्थिक बदलाव भी समाज को गहराई से प्रभावित करते हैं। अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव, नई नौकरियों का सृजन, रोजगार के साधनों की कमी या अधिकता, ग्रामीण से शहरी पलायन जैसी स्थितियाँ समाज की संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव लाती हैं। इसी प्रकार जनसंख्या वृद्धि, पलायन, जन्म-मृत्यु दर और जनसांख्यिकीय परिवर्तन समाज के स्वरूप को निरंतर प्रभावित करते रहते हैं।

विभिन्न सामाजिक आंदोलनों ने भी समाज में नए विचारों को जन्म दिया है। जैसे- स्त्री अधिकार आंदोलन, LGBT+ आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण आंदोलन आदि। इन आंदोलनों ने समाज को एक नए दृष्टिकोण से सोचने और स्वीकार करने की प्रेरणा दी है। समय के साथ परिवार की संरचना में भी बदलाव आया है- संयुक्त परिवारों की जगह छोटे परिवारों ने ले ली है, जिससे पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता बढ़ गई है।

बदलते वातावरण में नैतिक मूल्यों में भी बदलाव दिखाई देता है। आधुनिकता ने जहाँ सोच को विस्तृत किया है, वहीं कुछ स्थानों पर नैतिक मूल्यों में गिरावट की भी चर्चा होती है। व्यक्ति पहले की तुलना में अधिक स्वतंत्र हुआ है, परंतु सामाजिक जिम्मेदारियों की उपेक्षा भी कई बार दिखाई देती है। परिवर्तन का स्वरूप न तो पूरी तरह सकारात्मक होता है, न ही पूरी तरह नकारात्मक। हर परिवर्तन अपने साथ सुधार भी लाता है और चुनौतियाँ भी।

समाज में होने वाले परिवर्तनों के सकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट हैं। इससे समानता की भावना बढ़ती है, नागरिकों में जागरूकता आती है, स्वतंत्रता, शिक्षा और अधिकारों को महत्व मिलता है। नई सोच और नए विचार समाज को प्रगतिशील बनाते हैं। वहीं कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते हैं, जैसे- सामाजिक विभाजन, पारंपरिक

मूल्यों का क्षय, सांस्कृतिक पहचान का संकट और पारिवारिक संबंधों में ढीलापन।

पिछले कई दशकों में भारत ने प्रशासनिक, राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी क्षेत्रों में अनेक बदलावों का अनुभव किया है। इन परिवर्तनों ने समाज को नई दिशा दी है और लोगों में नई अपेक्षाएँ पैदा की हैं। आधुनिक संचार, शिक्षा, विज्ञान और तकनीक ने सामाजिक परिवर्तन को और अधिक तेज कर दिया है। जहां पूर्वज कर्मयोग को पूजा मानते थे और परंपरागत जीवन जीते थे, वहीं आज का समाज तकनीकी, वैज्ञानिक और आधुनिक मूल्यों पर आधारित जीवन को अपनाता जा रहा है। यह परिवर्तन अनिवार्य है, क्योंकि समय के साथ समाज के हर हिस्से में नई परिस्थितियाँ और आवश्यकताएँ जन्म लेती रहती हैं।

समकालीन समाज में परिवर्तन एक व्यापक और स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो जीवन के हर क्षेत्र- सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक और पारिवारिक- को प्रभावित करती है। नई तकनीक, आधुनिक शिक्षा, मीडिया, व्यापार, यात्रा, विचारधाराएँ और सामाजिक संपर्क के बढ़ते साधन समाज को निरंतर नया आकार देते रहते हैं। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है, जो समाज को नई दिशा, नया सोच और नई पहचान प्रदान करती है।

इन परिवर्तनों के बीच सबसे बड़ी चुनौती इस बात की है कि समाज किस प्रकार अपने मूल्यों और परंपराओं को आधुनिक प्रगतिशील सोच के साथ संतुलित रखे। परंपरा और आधुनिकता का यह संघर्ष हमेशा से रहा है, परंतु आज इसकी तीव्रता अधिक देखी जा सकती है। नई पीढ़ी स्वतंत्र सोच को महत्व देती है, जबकि पुरानी पीढ़ी अनुभव और परंपराओं को। यह अंतर कई बार टकराव का रूप ले लेता है, लेकिन संवाद, समझ और पारस्परिक सम्मान से इस अंतर को सहज रूप से पाटा जा सकता है। समाज तभी आगे बढ़ता है जब वह परिवर्तन को स्वीकार करे, लेकिन अपनी जड़ों की शक्ति को भी बनाए रखे।

अंततः सामाजिक परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसे न रोका जा सकता है और न ही इससे भागा जा सकता है। समाज तभी प्रगतिशील बनता है, जब उसमें समय के अनुसार बदलने की क्षमता हो। परिवर्तन से डरना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, परंतु इतिहास यह सिद्ध करता है कि जो समाज परिवर्तन का स्वागत करता है, वही आगे बढ़कर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करता है। सामाजिक परिवर्तन केवल बाहरी बदलावों का नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर जागरूकता, संवेदनशीलता, कर्तव्य-बोध और सकारात्मक दृष्टिकोण के विकसित होने का भी प्रतीक है। यही परिवर्तन आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर, सुरक्षित और समृद्ध समाज प्रदान करने की क्षमता रखता है।

सूर्य की पहली किरण

बढ़ रहा है सूर्य अपनी,
रथ सजा कर रश्मियों का।
छिपता तिमिर भयभीत हो,
है तेज ऐसा रश्मियों का।।

बढ़ रही आभा जगत में,
संचार होती चेतना का।
कोपलें विकसित हुई,विस्तार
करती चेतना का।।

कपोत, केकी, कीर,कोयल,,
हंस,हारिल, मुर्ग, चातक।
कर रहे कलरव से गुंजित,,
वन, वाग,उपवन,वाटिका तक।।

सर, कूप,सरिता, नद,सरोवर,,
ताल,झरने,सिंधु, बादल।
गिरती हुई हिम की फुहारें,
भींगता अवनी का आंचल।।

स्वर्ण के आभूषणों सी,
सज रही हिमगिरि की चोटी।
पड़ रही पहली किरण से,
स्वर्ण आभा है निकलती।।

उत्साह है सारी प्रकृति में,
एक हलचल सी मची है।
थम चुकी थी जो अवस्था,
हो रही चंचल सभी हैं।।

प्रभात भी होता प्रभावित,जो
प्रभाकर की प्रभा है।
ब्योम से होती बिखंडित,
चांद तारों की सभा है।।

बहती हवा सुरभीत सीतल,
लहलहाते खेत उपवन।
सूर्य की पहली किरण से,
जग उठा धरती गगन।।

– कामेश

आंसुओं को पोंछ डाला

दुख का पहाड़ डाला,
खारा समुंदर भर डाला,
उस निर्दई को पुकार डाला,
आंसुओं को पोंछ डाला!

गांव का है यही हाला,
सीता को निकाल डाला,
मीरा को दिया विष का प्याला,
आंसुओं को पोंछ डाला!

स्त्रियों के किए यह हाला,
कलयुगी मानव तो है बेहाला,
आंसुओं से सागर भर डाला,
आंसुओं को पोंछ डाला!

गर्मी में बरसात कर डाला,
दुख के सागर में डूब जाला,
निर्दयी का जपूं माला,
आंसुओं को पोंछ डाला!

भगवान के यही हाला,
भक्तों को नंगा कर डाला,
नास्तिक है सुख वाला,
आंसुओं को पोंछ डाला!!

– डॉ. सतीश "बब्बा"

कहां गए हरे भरे वन

कहां गए सब हरे भरे वन खोज रहा
कभी का बूढ़ा वन शहर बढ़ गया है
कोसों दूर
हाथ मल रहा बैठा लंगूर
देख चिंतित है उजड़ा चमन

जवान पेड़ मौन सोच रहे
कटते वनों को देख रो रहे
मनके सब अपने हुए दफन

शेर कभी राजा था वन में
गोली मार से मरे वन में
शेर का बह गया उजड़ा वन

महीना मौन सारथी के शौक पर
तोता मौन बीते दिन याद कर

कारखाना दिया उजड़ा चमन
दूषित ऑक्सीजन बिन वातावरण
धूल धुआं प्रदोषित पर्यावरण
स्नेही समय खराब है कहां सुमन

– सदाराम सिंह 'स्नेही'

यह कैसा कर्तव्य...!

भाई यह कैसी रहीं 'माता-पिता' की माया,
घर में हुए दो मुख्यमंत्री बेटा पढ़ न पाया।
क्यों? नहीं समझ पाए ये शिक्षा का महत्व,
क्या? 'क्रिकेट' में समाया था सम्पूर्ण सत्व।

इन 'पालकों' ने यह कैसा निभाया कर्तव्य,
स्वघोषित मुख्यमंत्री होना यहीं भवितव्य।
स्वयं अपने ही पास जब रखीं है लालटेन,
क्यों? ना दी पढ़ने के लिए उसे कॉपी-पेन।

पता नहीं कहां-कहां फैला था जंगल राज,
घुलना थे इनके कानों में नम्रतारूपी साज़।
तब बन पाते यहीं 'जनमानस' की आवाज,
दिलों पर करते राज मिलती सत्ता परवाज़।

– संजय एम तराणेकर

इस गोधूलि वेला में

इस गोधूलि वेला में
ठूँठ पर उगे हुए चाँद हमें बिरा रहे हैं

किसी के पास पंख के लिए पानी नहीं है

इस वक्त डूबते हुए सूरज को देखने का अर्थ है
बनारस की ओर नज़रें करना
और उन पेड़ों को लखना भी
जो परिंदों को ऊँची उड़ान भरने में सहायक रहे हैं

आश्वासन का आसमान भहरा गया है
पेड़ दब गए
परिंदें उड़ गए

हम उगते हुए सूरज को निहार रहे हैं
आँखों की अदृश्य नदी में
यह सोचते हुए
कि काश कि हम पंखहीन परिंदा नहीं होते!

– गोलेन्द्र पटेल

सफर की मधुशाला

राहों में मिले हम-तुम,
मंजिलें थीं अलग-अलग।
सफर का था रंगीन मौसम,
पर नजर थी मंजिल पर।

क्षणिक है मंजिल पाना,
पर सफर का आनंद कहां?
अगर न देखें वो घटाएँ,
न करें हृदय रसपान।

मंजिल का क्या फायदा,
जो सफर से दूर करे।
चलो सफर को बना लें,
चलती-फिरती मधुशाला।

पल तो आएगा ही,
जब मंजिलें होंगी पास।
तब तक साथ में चलें,
और सफर का लें मज़ा।

तुम अपनी राह पर चलो,
हम अपनी राह पर चलें,
मिलेंगी मंजिलें जब,
सफर की यादें संग रह जायेंगी।

– अवनीश कुमार गुप्ता

कुटकी अद्भुत जड़ी-बूटी

प्रकृति मेल डेस्क

कुटकी हिमालयी क्षेत्र की एक दुर्लभ और अत्यंत महत्वपूर्ण औषधीय जड़ी-बूटी है। यह कुटकी 3000–5000 मीटर की ऊँचाई पर पाई जाती है। आयुर्वेद में इसे लिवर टॉनिक और डिटॉक्सिफायर माना गया है। इसके कंद का स्वाद कड़वा होता है, और यही कड़वाहट इसके औषधीय गुणों का आधार है।

कुटकी में पाए जाने वाले प्रमुख गुण इसके रासायनिक घटकों से आती है। इसमें पिक्रोरिज़िन पाया जाता है यह यकृत की रक्षा करता है और हेपेटाइटिस, पीलिया जैसी बीमारियों से बचाता है। वहीं कुटकी सूजन कम करने वाला गुण है जो पेट की सूजन कम करता है और पाचन सुधारता है। अपो-कुरोइड शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाता है। इसके शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट, फ्री-रेडिकल्स से बचाव करते हैं। डिटर्पेन ग्लाइकोसाइड्स नाम का तत्व शरीर से विषैले तत्व बाहर निकालने में मददगार होता है।

कुटकी के औषधीय लाभ से लिवर स्वास्थ्य रहता है, कुटकी को प्राकृतिक हेपाटोप्रोटेक्टिव माना जाता है। यह पीलिया, हेपेटाइटिस, फैटी लिवर जैसी बीमारियों में लाभकारी है। कड़वे स्वाद के कारण यह पाचन रसों को उत्तेजित करता है। अपच, कब्ज और भूख न लगने की समस्या में उपयोगी है। कुटकी के एंटीऑक्सीडेंट तत्व शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। जिससे मौसमी संक्रमण और वायरल बीमारियों से बचाव होता है। कुटकी के यौगिक एंटी-इंफ्लेमेटरी हैं। गठिया, जोड़ों के दर्द और सूजन में लाभकारी है। कुटकी रक्त शुद्धिकरण भी करती है जिसके कारण यह त्वचा रोगों जैसे एक्ज़िमा, सोरायसिस में लाभकारी है। कुटकी श्वसन मार्ग की सूजन को कम करता है जिससे यह अस्थमा और खाँसी में राहत देता है। कुटकी का सेवन काढ़े के रूप में या चूर्ण के रूप में किया जा सकता है।

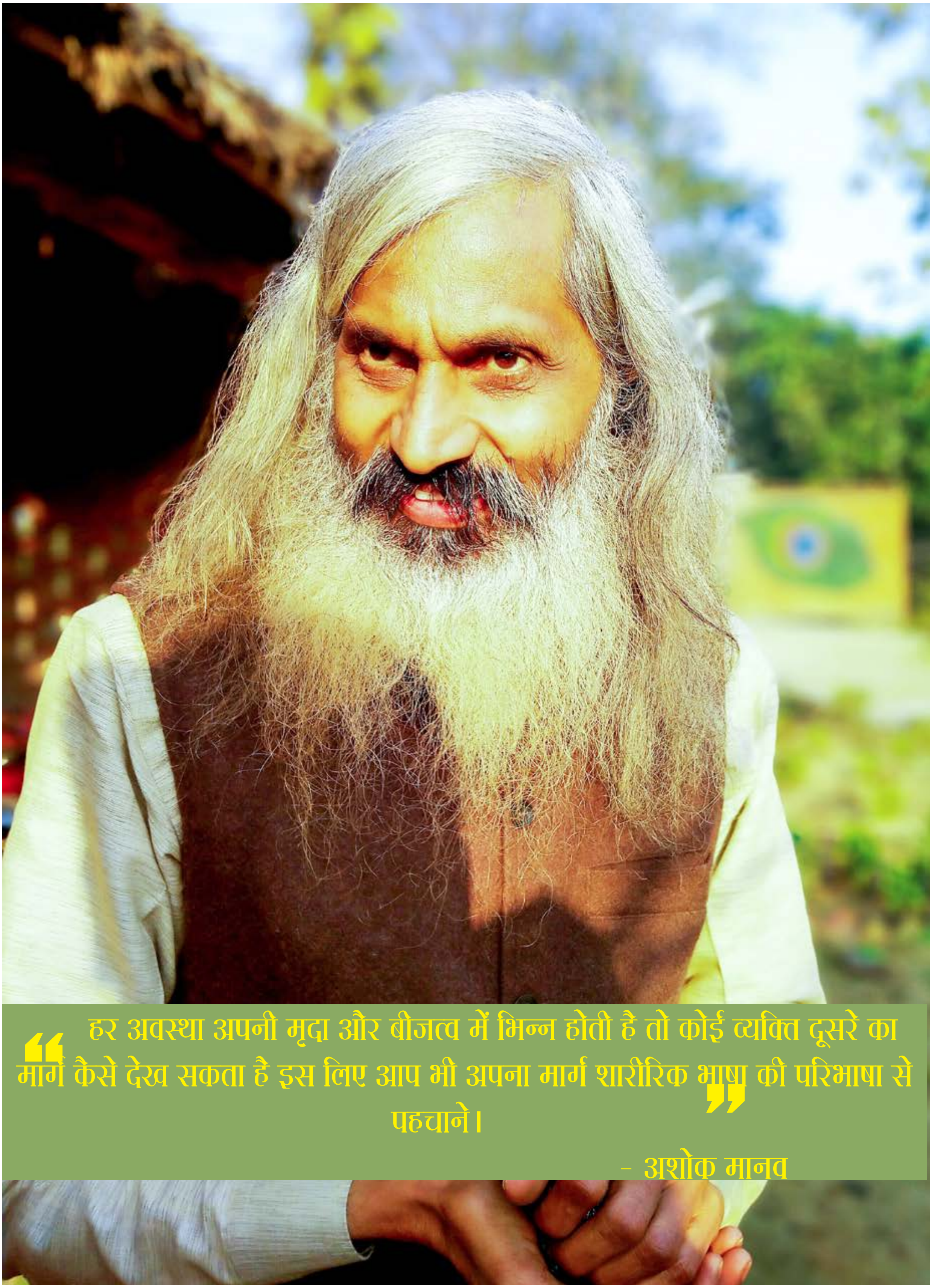

“हर अवस्था अपनी मृदा और बीजत्व में भिन्न होती है तो कोई व्यक्ति दूसरे का मार्ग कैसे देख सकता है इस लिए आप भी अपना मार्ग शारीरिक भाषा की परिभाषा से पहचाने।”

– अशोक मानव

स्थापित 1948
77 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

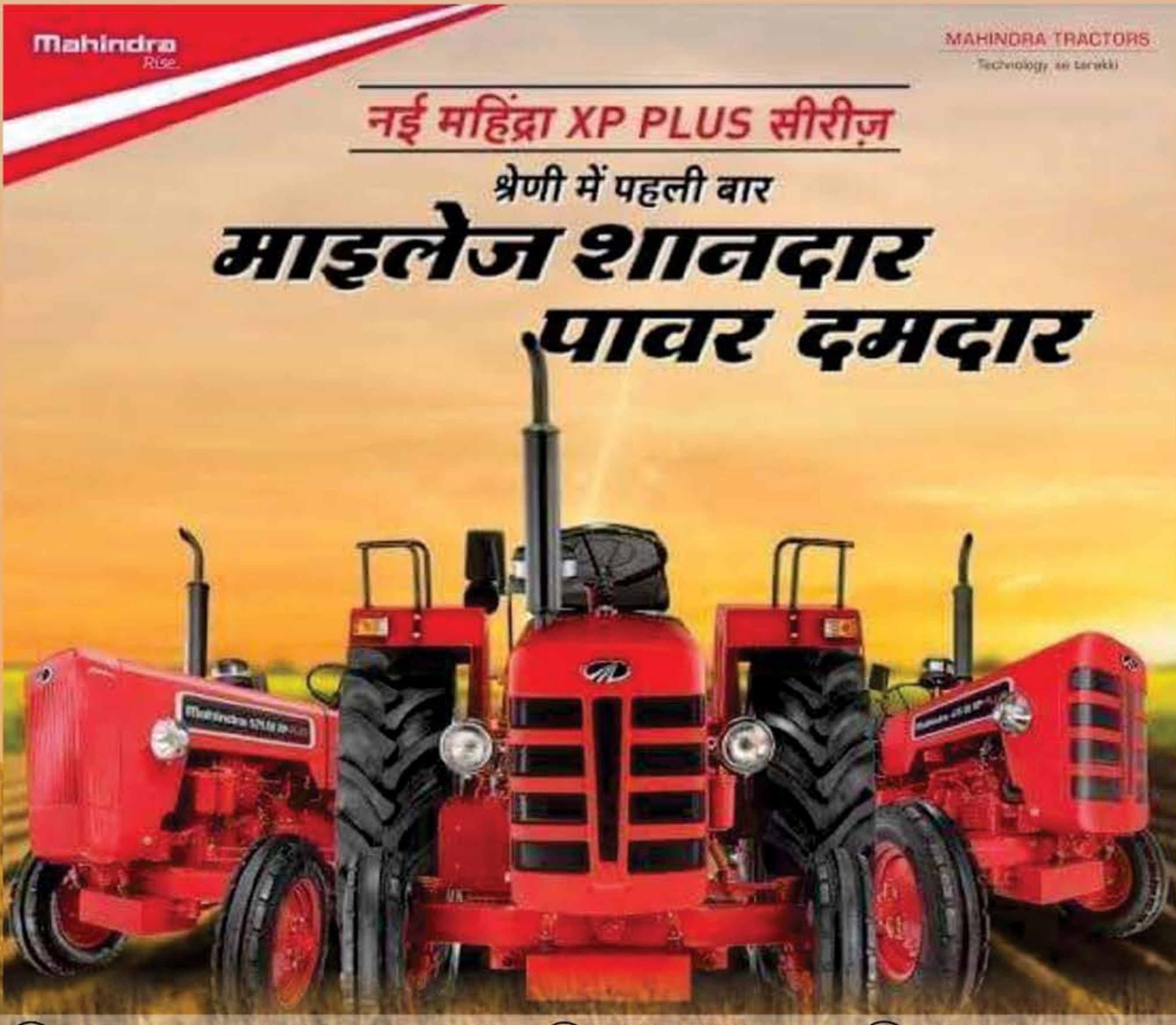

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।